SSB Samachar

52nd Anniversary Issue

Smt Archana Ramasundaram IPS, DG SSB being welcomed by Shri SS Deswal IPS, ADG SSB at Force Headquarters, New Delhi

Smt Archana Ramasundaram IPS, DG SSB inspecting Guard of Honour at Force Headquarters

SSB Samachar

52nd Anniversary Issue
Volume : 91

Chief Patron
Archana Ramasundaram, IPS
Director General, SSB

Patron
Surjeet Singh Deswal, IPS
Addl. Director General

Chief Editor
Deepak Kumar, IPS
Inspector General (Ops & Int.)

Editor
Vikas Arora, IPS
Dy. Inspector General (Ops)

Associate Editors
K.M. Cariappa
Assistatnt Director (I&D)
A.Bhattacharya, APO

Sub Editors
G.D. Saklani, APO
N.P. Tripathy, APO

Designed by
Ramesh Kunche, CT /GD

Photography
Photo Cell & Field Units

Printed by
Information and Development Wing
FHQ, SSB, New Delhi - 110 066

Contents...

- *Messages* - 2
- सम्पादकीय - 45
- श्रीमती अर्चना रामसुंदरम ने महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल का पद भार ग्रहण किया - 46
- सशस्त्र सीमा बल ने मनायी 52 वीं वर्षगॉठ, केन्द्रीय गृहमन्त्री ने ली परेड की सलामी - 47
  –नागेन्द्रपति त्रिपाठी
- *SSB Mt. Trishul-I Expedition ...* - Somit Joshi - 52
- *Vigilance Awareness Week Celebrated* - 56
- *8th All India Police Badminton Championship* - 58
- *Union Home Minister Inaugurated Border Out Posts in UP* - 61
- *SSB Refreshment and Transit Facility at Sela Pass* - 62
- *SSB's Rafting and Boating Expedition* - 63
- *SSB - Enabling the Differently Abled Persons* - 64
- *Shri Kiren Rijiju Walks the Talk at Gunji* - 66
  - Rajesh Thakur
- *SHQ Bomdila, Arunachal Pradesh starts functioning* - 69
- *SSB Assistant Commandants Passing Out Parade* - 70
- *Celebrating 50 years of Chronicling SSB Samachar* - 71
  - K.M. Cariappa
- *Operational Overview* - 75
- *Tokay Gecko' in Trouble Smuggling on the Rise ...* - 76
- उग्रवाद को विकास से पछाड़ता सशस्त्र सीमा बल - 77
  –जी.डी.सकलानी
- *SSBs stops Cannabis Cultivation in Kalaktang ...* - 81
- *Historic Background on Disputed Area Belt in Golaghat* - 82
- देश की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान कर अमर हो गये संजीत कुमार - 83
- *Homage To Shri Rajesh Shivrain...* - 84
- *IG Siliguri wins the first ever honour in an Equestrian ...* - 85
- *Nine SSB Personnel Awarded Police Medals ...* - 86
- राहत एवं बचाव अभियान – मणिकर्ण गुरूद्वारा कुल्लु में ... - 87
- *SSB personnel hone their skills at Birla Academy of Art and Culture* - 88
- संदीक्षा मेला बना विविधता मे एकता का मिलन–पर्व ... - 89
- *The Motto of SSB* - B.N. Mullik - 92
- *Padma Shree Narayan Singh Bhati Zipashni - A Profile* - 98
  - History Cell, FHQ
- *The RCC Experience at SSB Gwaldam* - A.K. Singh, IPS - 101
- *Impeccable Trust* - M L Chaudhuri - 103

♦ Views expressed in the journal are exclusively those of the Authors(s) and not the official views of the Force.

- Chief Editor

सत्यमेव जयते

Pranab Mukherjee

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

Message

I am happy to learn that the Sashastra Seema Bal (SSB) is celebrating its 52nd Anniversary Day on December 20, 2015.

Over the years, SSB has built bridges of goodwill and created a sense of nationalism and security among the border populace reassuring them of their well-being. The organization has displayed professionalism, valour, discipline and devotion to duty by working shoulder to shoulder with the border population on Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders. It is successfully performing all duties assigned to it with dedication and commitment.

On the occasion of its 52nd Raising Day, I extend my greetings and best wishes to all ranks of SSB and their families and wish them very success in future.

(Pranab Mukherjee)

M. Hamid Ansari

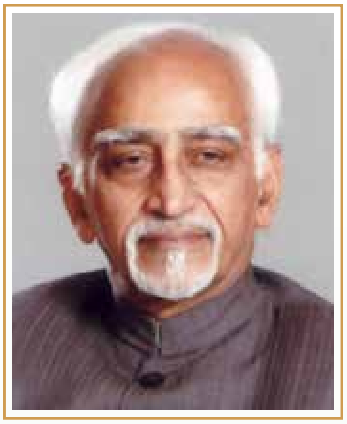

उप-राष्ट्रपति, भारत

VICE - PRESIDENT OF INDIA

Message

I am happy to learn that the Sashastra Seema Bal (SSB) is celebrating its 52nd Anniversary on December 20, 2015.

The Sashastra Seema Bal has been doing a commendable job with commitment and valor on the borders of our country. It has emerged as an important arm of our larger border guarding structure. Over the years, SSB personnel have displayed a high degree of professionalism, discipline and devotion in keeping a strict vigil along the borders of our country.

I extend my greetings and good wishes to officers and all ranks of the Sashastra Seema Bal and their families and wish the Anniversary celebrations all success.

(M. HAMID ANSARI)

सत्यमेव जयते

नरेन्द्र मोदी
Narendra Modi

प्रधान मंत्री
PRIME MINISTER OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि सशस्त्र सीमा बल 20 दिसंबर को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है।

सशस्त्र सीमा बल आधी सदी से भी अधिक समय से देश के दुर्गम और सुदूर क्षेत्रों में राष्ट्र की सीमाओं का सजग प्रहरी है। बल ने अपने सराहनीय कार्यों से त्याग, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है।

सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस के अवसर पर बल के सभी कर्मियों और उनके परिवारजनों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

राजनाथ सिंह

Rajnath Singh

गृह मंत्री,
भारत
नई दिल्ली - 110001

HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI -110001

संदेश

भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा कार्य मे लगे सशस्त्र सीमा बल के सभी कर्मियों एवं उनके परिवारजनों को मैं बल के 52वें स्थापना दिवस पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

सशस्त्र सीमा बल का राष्ट्र की सेवा में एक लंबा इतिहास है। अपनी बदली हुयी भूमिका एवं कार्यक्षेत्र में भी यह बल पूरी व्यवसायिक परिपक्वता एवं कौशल के साथ भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं का प्रबन्धन कर रहा है। इन दोनों ही मित्रवत सीमाओं के प्रबन्धन में एस. एस. बी. की पूर्व भूमिका में अर्जित दक्षता के सुखद एवं प्रभावकारी परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। राष्ट्र के एक सीमा रक्षा बल के रूप में बल की उपलब्धियां अत्यन्त गौरवशाली एवं सराहनीय है।

सीमा रक्षा के साथ–साथ सशस्त्र सीमा बल आंतरिक सुरक्षा, कानून–व्यवस्था, वामपंथी हिंसा उन्मूलन एवं उग्रवाद से निपटने के लिए प्रभावित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। यह बल वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित बिहार, झारखंड एवं छत्तीसगढ़ के साथ ही, आतंकवाद से प्रभावित जम्मू व कश्मीर सहित देश के विभिन्न राज्यों में कानून–व्यवस्था कायम करने में प्रशंसनीय भूमिका निभा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सशस्त्र सीमा बल 'सेवा, सुरक्षा एवं बंधुत्व' के उद्देश्य को अपने प्रत्येक कार्य में सम्मिलित करते हुए भविष्य में भी देश सेवा के लिए समर्पित रहेगा।

(राजनाथ सिंह)

सत्यमेव जयते

J. P. Rajkhowa

Governor
Arunachal Pradesh

MESSAGE

I am delighted to learn that Sashastra Seema Bal is celebrating the 52nd Anniversary of its Raising Day on 24th December 2015. I hope and pray that the special occasion will infuse new zeal, enthusiasm and dedication in the Force, in its service to the Nation.

Since its inception in 1963, Sashastra Seema Bal, popularly known as SSB, has been establishing strong cordial relationship with the people of the border areas and at the same time is maintaining strict vigil along the International boundary. It has successfully raised patriotic fervor amongst the people of the State. As the Border Guarding Force, SSB has reassured the denizens of Arunachal Pradesh and elsewhere in the Country, that International Borders are fully secure in their hands.

On this momentous occasion, on behalf of the people of Arunachal Pradesh and my own behalf, I convey our Best Wishes to all ranks of Sashastra Seema Bal and wish a Grand Celebration of the Anniversary.

(J. P. Rajkhowa)

Padmanabha Balakrishna Acharya **Governor of Assam**

MESSAGE

I am happy to know that Sashastra Seema Bal is celebrating its 52nd Anniversary on December 24, 2015.

Sashastra Seema Bal, in the last five decades, has played a vital role in strengthening country's security environment. While guarding international borders in the North West, North and North eastern parts of the country, it has provided protection to some very difficult and inhospitable terrains. It has helped in sensitizing the border population on national security issues and educated them against false propaganda in the Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders, it has effectively countered anti-national elements.

I am confident that the valiant men and officers of this force will keep up the good work. I wish them all success in their endeavours.

(Padmanabha Balakrishna Acharya)

सत्यमेव जयते

राम नाथ कोविन्द

राज्यपाल
बिहार

MESSAGE

यह सम्पूर्ण भारतवासियों के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं का प्रहरी सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपना '52वां स्थापना दिवस' मना रहा है। मैं इस शुभअवसर पर सभी एस. एस. बी. कर्मियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं।

एस. एस. बी. एक गौरवशाली परम्पराओं वाला बल है। राष्ट्र के समक्ष आयी अत्यंत विकट परिस्थितियों में इसकी स्थापना की गई थी। इसने थोड़े ही दिनों में अपनी स्थापना के पीछे निहित दर्शन एवं उद्देश्य को हासिल करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

अपनी वर्तमान भूमिका एवं कार्यक्षेत्र में बल बिहार राज्य के साथ लगी भारत–नेपाल सीमा पर राष्ट्र की सुरक्षा में सन्नद्ध है। बिहार राज्य के नागरिकों के पड़ोसी देश नेपाल के नागरिकों के अभिन्न रिश्ते हैं। सशस्त्र सीमा बल पूर्ण तत्परता एवं समर्पण के साथ राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ–साथ नेपाल के साथ हमारे रिश्तों की प्रगाढ़ता की भी रक्षा कर रहा है। यह एक सार्थक एवं पुनीत कार्य है। इसके लिए सशस्त्र सीमा बल बधाई का हकदार है।

मुझे यह विश्वास है कि यह बल आगे भी त्याग, समर्पण एवं निष्ठा के साथ राष्ट्र की सेवा करता रहेगा।

(राम नाथ कोविंद)

सत्यमेव जयते

बलरामजी दास टंडन

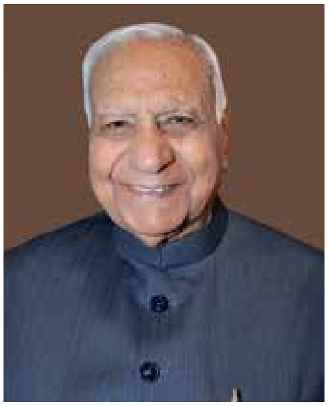

राज्यपाल
छत्तीसगढ़

संदेश

प्रसन्नता की बात है कि सशस्त्र सीमा बल, नई दिल्ली द्वारा 24 दिसम्बर को 52वां स्थापना दिवस मनाया रहा है। इस अवसर पर सभी बल कर्मियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सशस्त्र सीमा बल के कर्मी, समर्पण एवं निष्ठा के साथ राष्ट्र की सेवा करते आ रहे हैं। 'सेवा, सुरक्षा एवं बन्धुत्व' के ध्येय वाक्य के साथ कार्यरत सशस्त्र सीमा बल कर्मी शौर्य, साहस, त्याग एवं बलिदान के नए प्रतिमान रचते आ रहे हैं। भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा पर राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ–साथ बलकर्मियों ने आंतरिक सुरक्षा कार्यों, नक्सल विरोधी अभियानों एवं आपदा प्रबंधन कार्यों में भी कर्तव्यपरायणता की मिसाल कायम की हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में सशस्त्र सीमा बल कर्मी नक्सली हिंसा पर नियंत्रण करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूं।

(बलरामजी दास टंडन)

सत्यमेव जयते

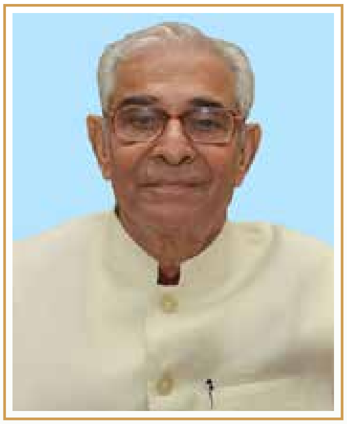

ओ. पी. कोहली

राज्यपाल
गुजरात

संदेश

24 दिसम्बर, 2015 के दिन सशस्त्र सीमा बल (एस.एस.बी.) अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस विशिष्ट अवसर पर मैं सभी बल कर्मियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं सम्प्रेषित करता हूँ।

अपनी पूर्व–भूमिका मे एस. एस. बी. ने देश के सीमान्त इलाकों के लोगों को "राष्ट्र सर्वोपरि" का अमर–सन्देश दिया। इसने सीमान्त के निवासियों को राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का जज्बा दिया और भाषा, भूगोल एवं सम्प्रदाय की खाइयों को पाटकर भारत की एकता और अखण्डता अक्षुण्ण रखने का संदेश दिया।

वर्तमान में, बल अपनी गौरवशाली परम्पराओं के साथ भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा पर राष्ट्र की सुरक्षा में संलग्न है। बल यहां पर न केवल सुरक्षा कार्यों में संलग्न है बल्कि सीमांत वासियों के जीवन में सकारात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए भी प्रयासरत है। बल के कार्यों से सीमान्त के लोगों में सुरक्षा एवं विश्वास का वातावरण कायम हुआ है।

मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस पर राष्ट्र की सेवा में बल सदैव यशस्वी रहे, ऐसी हृदयपूर्वक कामना करता हूँ।

O.P. Kohli

(ओ. पी. कोहली)

सत्यमेव जयते

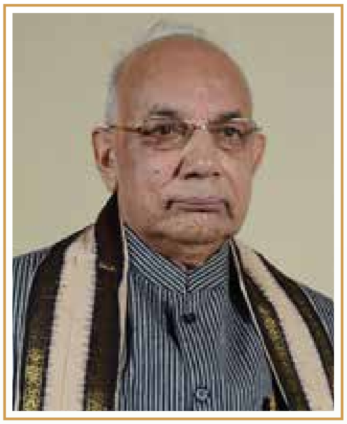

राज्यपाल हरियाणा
GOVERNOR HARYANA

प्रो० कप्तान सिंह सोलंकी

राज्यपाल, हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मनाने जा रहा है। इस अवसर को चिरस्मरणीय बनाने के लिए एस. एस. बी. समाचार के वार्षिकांक–2015 का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

सशस्त्र सीमा बल की स्थापना सन् 1963 में चीन आक्रमण के बाद सीमान्त की जनता को राष्ट्रीय प्रतिरोध की अजेय शक्ति के रूप में खड़ा करने के लिए की गई थी। बल ने इस काम को बखूबी अंजाम देते हुए राष्ट्र की सुरक्षा में जनता की संगठित शक्ति के उपयोग के प्रयोग को सिद्ध कर दिखाया है। इस प्रकार भारत–नेपाल और भारत–भूटान सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल की देश की सुरक्षा प्रणाली को मजबूत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुझे विश्वास है कि यह बल अपने कर्तव्य को इसी प्रकार निभाते हुए देश के गौरव को बढाने में योगदान करता रहेगा। मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस पर इसके सभी अधिकारियों, कर्मचारियों व उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देता हूं और 52वें स्थापना दिवस समारोह के सफल आयोजन की कामना करता हूं।

(प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी)

सत्यमेव जयते

आचार्य देवव्रत
Acharya Devvrat

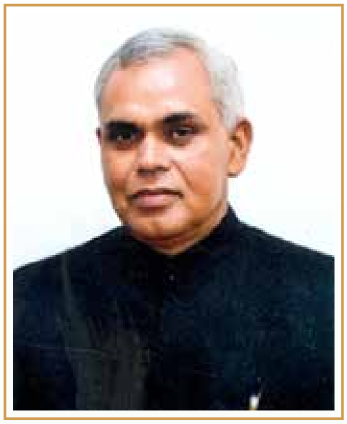

राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश
GOVERNOR
Himachal Pradesh

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर मैं पूरे सशस्त्र सीमा बल परिवार को हार्दिक मंगलकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।

हिमाचल प्रदेश की जनता के सशस्त्र सीमा बल के साथ गहरे सम्बन्ध रहे हैं। सशस्त्र सीमा बल ने राष्ट्र सेवा का एक गौरवशाली इतिहास रचा है। अपनी स्थापना के समय से ही बल, सुदूर सीमांत वासियों के लिए मानव चिकित्सा शिविर, पशु चिकित्सा शिविर, सामाजिक चेतना अभियान, महिला जागरूकता कार्यक्रम, शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम, लघु आधारभूत संरचना विकास कार्यक्रम आदि का लगातार आयोजन करता आ रहा है। आधारभूत संरचना से वंचित सुदूर सीमांत वासियों के लिए बल के ये कार्यक्रम महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं।

मैं बल को निःस्वार्थ राष्ट्र सेवा भावना एवं सामाजिक कार्यों के लिए साधुवाद देता हूँ।

स्थापना दिवस के सफल आयोजन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(देवव्रत)

सत्यमेव जयते

N.N. Vohra

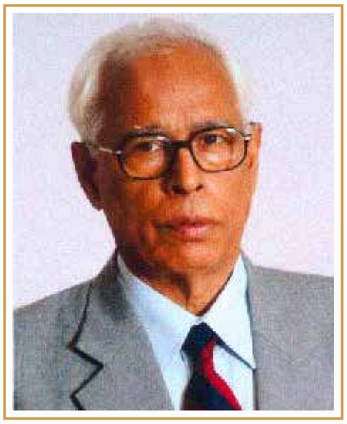

GOVERNOR
JAMMU & KASHMIR

MESSAGE

I am happy to learn that the Sashastra Seema Bal (SSB) is shortly celebrating its Raising Day.

SSB, a versatile force, has rendered valuable service to the nation in guarding the Indo-Nepal and Indo-Bhutan open borders and ensuring against infiltration, smuggling and subversive activities along and across these porous frontiers.

Celebrating its 52nd Anniversary on 24th December, the SSB has continued to carry out its responsibilities with devotion and high commitment. On the joyous occasion of its Anniversary Day celebrations I convey my greetings and best wishes to all the SSB personnel and their families.

(N. N. Vohra)

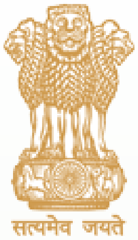

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

राज्यपाल
झारखण्ड

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल दिनांक 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वाँ स्थापना दिवस मना रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं इस बल के सभी कर्मियों एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देती हूँ।

स्थापनाकाल से ही यह बल राष्ट्र की अनन्य भाव से सेवा करता आ रहा है। इस बल के कर्मियों ने राष्ट्र के सबसे कठिन एवं दुर्गम इलाकों में मिशनरी भाव से जनता की सेवा की है। बल के अनवरत कामों से सीमा क्षेत्र के लोग न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति जागरूक बने, बल्कि उनके परम्परागत जीवन में आधुनिकीकरण का भी समावेश हुआ।

यह खुशी की बात है कि सशस्त्र सीमा बल राष्ट्र की सुरक्षा के साथ–साथ अपने कार्य क्षेत्र की जनता के लिए संचालित कई प्रकार की विकास गतिविधियों के कार्यान्वयन में सहयोग कर रहा है। झारखण्ड राज्य में भी सशस्त्र सीमा बल न केवल नक्सली हिंसा से प्रभावकारी तरीके से निबट रहा है, बल्कि आम जन के कल्याणार्थ किये जा रहे कार्यों में सहयोग प्रदान कर रहा है।

मैं सशस्त्र सीमा बल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ तथा स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(द्रौपदी मुर्मू)

राम नरेश यादव

राज्यपाल
मध्यप्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सशस्त्र सीमा बल द्वारा 24 दिसम्बर, 2015 को अपने 52 वें स्थापना दिवस के अवसर पर अपने समाचार–पत्र वार्षिकांक–2015 का प्रकाशन किया जा रहा है।

सशस्त्र सीमा बल ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी राष्ट्र सेवा के लिए सराहनीय और प्रेरणादायी योगदान किया है। देश के सीमांत इलाकों में आधारभूत संरचनाओं का विकास, गरीबों का जीवन स्तर सुधारनें, शिक्षा और अन्य सेवा उपलब्ध कराने के साथ राष्ट्रीय शक्ति की भावना जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। बल ने उन्हें जागरूक बनाकर दुश्मन ताकतों के नापाक इरादों से सावधान किया।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि एस. एस. बी. सीमा रक्षा बल के रूप में भी राष्ट्र को अपनी बहुमूल्य सेवाएं दे रहा है। सशस्त्र सीमा बल के जवान भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कर्मठता से अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

मुझे आशा है कि वार्षिकांक में राष्ट्रभक्ति और समाज सेवा पर आधारित आलेखों का प्रकाशन किया जायेगा जिससे सीमांत के युवाओं में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा मिलेगी।

शुभकामनाएं।

राम नरेश यादव

सत्यमेव जयते

चे. विद्यासागर राव

राज्यपाल
महाराष्ट्र

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं सभी बलकर्मियों एवं उनके परिवारजनों को हार्दिक बधाई देता हूं।

सशस्त्र सीमा बल का इतिहास राष्ट्र की अनन्य सेवा का इतिहास है। सशस्त्र सीमा बल ने हमें यह सिखाया कि हम किस तरह आम जनता की संगठित ताकत का इस्तेमाल राष्ट्रीय लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कर सकते हैं। देश के आम लोगों का सशक्तिकरण कर हम किस तरह राष्ट्रीय चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना कर सकते हैं। सामान्य लोगों का जुझारूपन किस तरह बड़ी–से–बड़ी ताकत के नापाक मंसूबों पर भी पानी फेर सकता है।

एस एस बी की उपलब्धियां हमारे लिए अनमोल हैं। एस एस बी के साथ राज्य व जनता का अटूट सम्बन्ध है। गत वर्ष राज्य में अपने दो वाहिनी मुख्यालयों की स्थापना करके बल ने राज्य की जनता के साथ अपने सम्बन्धों को नया आयाम दिया है।

मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस कार्यक्रमों की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

(चे. विद्यासागर राव)

P. B. ACHARYA

Governor of Nagaland
Kohima

MESSAGE

I am happy to know that Sashasra Seema Bal is celebrating its 52nd Anniversary on December 24th, 2015.

Sashastra Seema Bal, in the last five decades, has played a vital role in strengthening country's Security environment. While guarding international borders in North West, North and North Eastern parts of the Country, it has provided protection to some very difficult and inhospitable terrains. It has helped in sensitizing the border population on national security issues and educated them against false propaganda in the Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders and has effectively countered anti-national elements.

I am confident that the valiant men and officers of this force will keep up the good work. I wish them all success in their endeavours.

4/12/15

(P. B. ACHARYA)

सत्यमेव जयते

कल्याण सिंह

राज्यपाल
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर 2015 को अपना 52 वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर बलकर्मियों एवं उनके परिवारजन को शुभकामनाएं एवं बधाइयां।

इस अवसर पर प्रकाशित सशस्त्र सीमा बल समाचार के वार्षिक अंक के लिए शुभकामनाएं।

(कल्याण सिंह)

Shriniwas Patil
श्रीनिवास पाटील

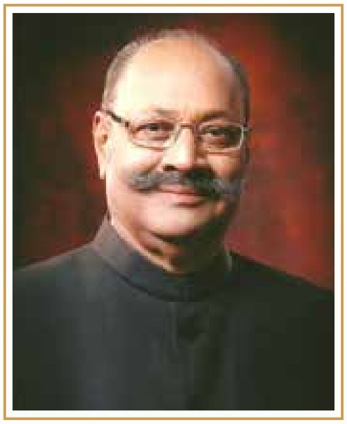

GOVERNOR
SIKKIM
राज्यपाल,
सिक्किम

MESSAGE

I am pleased to learn that **Sashastra Seema Bal** is celebrating its **52nd Anniversary Day on 24th December, 2015** and bringing out a souvenir to commemorate the occasion.

Since 1976, Sashastra Seema Bal has been associated with the people of Sikkim sharing pain and joy alike. They have been performing their duties of guarding our frontiers with Nepal and Bhutan with utmost professionalism and dedication. Over the years, they have remained in the forefront during the times of calamity and distress providing various civic services to the people of Sikkim. The comprehensive border management policy of Sashastra Seema Bal has resulted in promoting sense of peace, tranquility and harmony in the border areas.

On this special occasion of the force, I extend my warm greetings and felicitations to all ranks of the force and their families.

(Shriniwas Patil)

सत्यमेव जयते

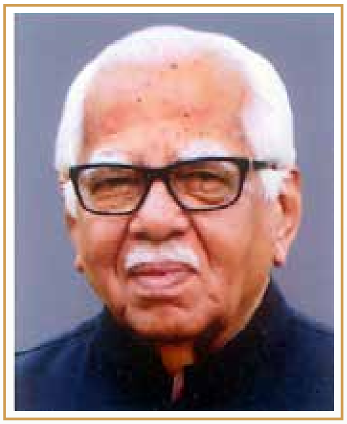

राम नाईक

राज्यपाल
उत्तर प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि सशस्त्र सीमा बल द्वारा 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है।

सशस्त्र सीमा बल के जवानों द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों एवं कठिनाईयों के बावजूद सजग होकर भारतीय सीमाओं की रक्षा की जाती है। सीमाओं की सुरक्षा के साथ भारतीय राष्ट्रीयता के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करना एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों के समग्र कल्याण हेतु अनेक प्रकार की विकासपरक एवं कल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जाना अभिनंदनीय है।

मैं, स्थापना दिवस के अवसर पर सशस्त्र सीमा बल कर्मियों एवं उनके परिवारजनों के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

(राम नाईक)

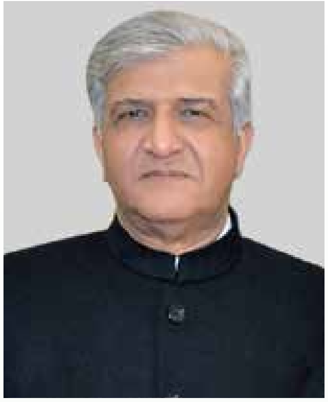

सत्यमेव जयते

डॉ. के.के. पाल

राज्यपाल
उत्तराखण्ड

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा पर देश की सुरक्षा में तैनात 'सशस्त्र सीमा बल' 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वाँ स्थापना दिवस मनाने जा रहा है।

यह गर्व का विषय है कि देश की सुरक्षा एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए समर्पित 'सशस्त्र सीमा बल' के जवान रक्षा दायित्वों के साथ–साथ देश के सुदूरवर्ती सीमान्त क्षेत्र के नागरिकों के जीवन उत्थान में सहयोगी बनकर उनमें राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भावना जागृत करने के निरन्तर सफल रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि 'बल' के स्थापना दिवस पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में 'सशस्त्र सीमा बल' की गौरवगाथा सहित अनेक ज्ञानवर्धक व प्रेरक पाठ्यसामग्री भी प्रकाशित की जायेगी।

इस गौरवशाली अवसर पर देवभूमि–वीरभूमि उत्तराखण्ड के प्रत्येक नागरिक की ओर से 'सशस्त्र सीमा बल' के सभी जवानों व उनके परिजनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. के. के. पाल)

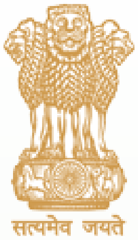

केशरी नाथ त्रिपाठी
Keshari Nath Tripathi

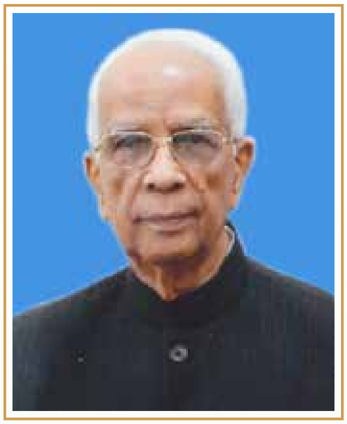

राज्यपाल
पश्चिम बंगाल

MESSAGE

I am glad to know that Sashastra Seema Bal is celebrating its 52nd Anniversary Day on 24th December, 2015.

Sashastra Seema Bal is rendering valuable services in guarding our open and porous international borders with Nepal and Bhutan. SSB has also strengthened our borders by implementing its civic action, developmental programmes and generating awareness among the people residing along our international borders.

On the occasion of Anniversary Day of the force, I extend my greetings and best wishes to all ranks of SSB and their families.

(**Keshari Nath Tripathi**)

सत्यमेव जयते

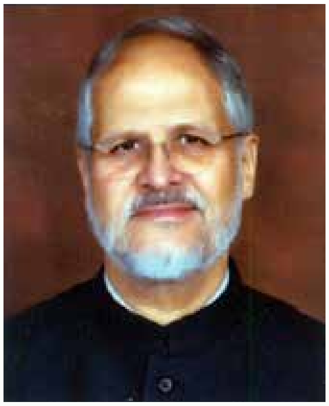

नजीब जंग

उपराज्यपाल
दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है।

अपनी स्थापना के समय से ही यह बल पूरी कर्मठता से राष्ट्र की सेवा करता आ रहा है। इस बल के कर्मियों ने देश के सबसे दुर्गम एवं कठिन सीमान्त इलाकों में जिस मिशनरी भाव से जनता के लिए काम किया है उससे न केवल वह सुरक्षित हुए हैं बल्कि उनको समाज की मुख्य धारा से जुड़ने में भी मदद मिली है।

यह बल आज भी राष्ट्र की सुरक्षा के साथ–साथ कई प्रकार की विकासात्मक एवं कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन करता रहता है। बल के इन कार्यों से सामाजिक समरसता में बढ़ोतरी हुई है।

मैं, सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस के अवसर पर सभी बल कर्मियों एवं उनके परिजनों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं।

(नजीब जंग)

सत्यमेव जयते

Nabam Tuki

Chief Minister
Arunachal Pradesh

MESSAGE

I am pleased to know that Sashastra Seema Bal is observing its 52nd Anniversary Day on 24th December, 2015.

Sashastra Seema Bal since its inception has an emotional relationship with the people of Arunachal Pradesh. Force is playing an exemplary role in guarding the Indo-Bhutan border in the state. The force has won the hearts and minds of our people with its multi-faceted civic action works for the benefit of rural population. I hope that SSB will continue its excellent traditions in future as well.

On this momentous occasion, I on behalf of people of Arunachal Pradesh, extend greetings and felicitations to all ranks and their families.

(Nabam Tuki)

सत्यमेव जयते

Tarun Gogai

Chief Minister, Assam
Guwahati

MESSAGE

I am happy to know that Sashastra Seema Bal is celebrating its 52nd Anniversary Day on December 24, 2015.

Sashastra Seema Bal since its inception has been committed to its motto of Service, Security and Brotherhood and serving the Nation with the highest degree of professional excellence, dedication and devotion. Over the years it has proved its mettle in preventing trans-border crimes and guarding and maintaining the sanctity of international border. SSB has also displayed a high degree of competence and valour in negotiating with different odds with fairness, integrity and honesty.

I hope in the coming years too, SSB will scale new heights in delivering its duties for the protection of our frontiers.

I extend my best wishes to all ranks of the Force and their family member on this occasion.

(TARUN GOGOI)

नीतीश कुमार

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
बिहार

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल दिनांक–24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर एस. एस. बी. समाचार के वार्षिकांक–2015 का प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

बिहार राज्य की उत्तरी सीमा पड़ोसी देश नेपाल के साथ लगी है। यह पूरी सीमा खुली है। नेपाल से निकलने वाले हजारों नदी–नाले बिहार के साथ लगी भारत–नेपाल सीमा को कठिन एवं दुरूह बनाते हैं। लेकिन इसके बावजूद नेपाल के आम लोगों के साथ बिहार वासियों के हजारों साल पुराने सम्बन्ध हैं। दोनों देशों के बीच की सीमा आम लोगों के पारिवारिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक रिश्तों के बीच कभी आड़े नहीं आयी है। परन्तु रिश्तों की यह प्रगाढ़ता सीमा प्रबन्धन के कार्य को कठिन एवं पेचीदा बनाती है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि प्राकृतिक, भाषाई एवं सांस्कृतिक पेचीदिगियों एवं कठिनाइयों के बावजूद सशस्त्र सीमा बल सीमान्त क्षेत्रों में सुरक्षा कार्य को पूरी मानवीय गरिमा के साथ निष्पादित कर रहा है।

इसके साथ ही बल सीमान्त क्षेत्र में कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर लोगों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाने की भी कोशिश कर रहा है। मैं सशस्त्र सीमा बल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

सशस्त्र सीमा बल के स्थापना दिवस के अवसर पर एस. एस. बी. कर्मियों एवं उनके परिजनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नीतीश कुमार)

आनंदीबेन पटेल

मुख्यमंत्री
गुजरात

संदेश

"वास्तव में अभी भी विश्व–युद्ध का खतरा बना हुआ है। हम विश्व–युद्ध के कगार पर खड़े हैं। आतंकवाद के विरूद्ध की लड़ाई विश्व–युद्ध ही है, क्योंकि वह अपना शैतानी सिर विश्व में कभी भी, कहीं भी ऊँचा कर सकता है।"

सशस्त्र सीमा बल (एस. एस. बी.) अपने वीरतापूर्ण कार्यों से देश के सुदूर इलाकों की जनता के बीच भारतीय राष्ट्रीयता एवं एकता का अभूतपूर्व प्रदर्शन कर उन्हें राष्ट्रीय प्रतिरोध की एक सबल ताकत के रूप में परिवर्तित कर दिया है। वर्तमान में एस. एस. बी. 1751 कि. मी. लंबी भारत–नेपाल तथा 669 कि.मी. लंबी भारत–भूटान सीमा पर भारत की सुरक्षा की जिम्मेवारी संभाल रहा है।

अतीव प्रसन्नता का विषय है कि सशस्त्र सीमा बल आगामी 24 दिसंबर 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मनाने जा रहा है। इसी अवसर पर एस. एस. बी. समाचार के वार्षिकांक–2015 का भी प्रकाशन होगा।

मैं, इस स्थापना दिवस तथा वार्षिकांक की भव्य सफलता के लिए शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूँ तथा सशस्त्र सीमा बल को अपने शौर्यपूर्ण कार्यों के लिए अभिनंदन देती हूँ।

(आनंदीबेन पटेल)

सत्यमेव जयते

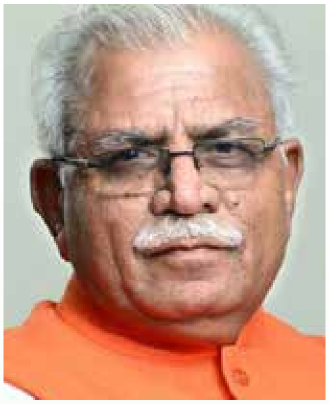

मनोहर लाल
Manohar Lal

मुख्यमंत्री
हरियाणा
CHIEF MINISTER
HARYANA, CHANDIGARH

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि सशस्त्र सीमा बल अपना 52वां स्थापना दिवस 24 दिसम्बर, 2015 को मना रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं सशस्त्र सीमा बल के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सशस्त्र सीमा बल की स्थापना सन् 1963 में राष्ट्र की सुरक्षा में जनता की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए की गई थी। बलकर्मियों ने अत्यंत विषम एवं कठिन परिस्थितियों के बीच देश के अत्यंत दुर्गम इलाकों की जनता के बीच अनवरत काम किया और अपने कार्यों को बखूबी सम्पादित कर दिखाया। आज भी बल देश की सीमाओं की रक्षा करने के साथ–साथ अन्य सुरक्षा कार्यों का निष्पादन पूरी दक्षता एवं कौशल से करता आ रहा है।

कर्तव्यपराणयता की गौरवशाली परम्पराओं पर चलते हुए सशस्त्र सीमा बल भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर भी विदेशी ताकतों के नापाक इरादों पर पानी फेरने का काम कर रहा है। इस बल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने अदम्य साहस राष्ट्रीय सुरक्षा को अभेद्य बनाया है। सशस्त्र सीमा बल कर्मियों की पैनी निगाहों से हमारी सीमाएं सदैव सुरक्षित रहेंगी ऐसा हमारा विश्वास है।

मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस कार्यक्रमों की मैं व्यापक सफलता की कामना करता हूं।

(मनोहर लाल)

सत्यमेव जयते

वीरभद्र सिंह

मुख्यमंत्री
एलर्ज़ली, हिमाचल प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मनाने जा रहा है और इस अवसर पर एस. एस. बी. समाचार के वार्षिक अंक –2015 का प्रकाशन भी किया जा रहा है। मैं इस अवसर पर सशस्त्र सीमा बल को बधाई देता हूं।

देश का सीमावर्ती राज्य होने के कारण हिमाचल प्रदेश के लोगों के साथ सशस्त्र सीमा बल का गहरा एवं भावनात्मक संबंध रहा है। प्रदेश के विकास और युवा शक्ति का मार्गदर्शन करने में भी सशस्त्र सीमा बल की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी उत्कृष्ट सीमा प्रबंधन शैली से भारत–नेपाल और भारत–भूटान की खुली सीमा पर सुरक्षा नियंत्रण में यह बल पूरे समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों की जान–माल की रक्षा में भी संगठन का सराहनीय योगदान रहता है।

स्थापना दिवस के अवसर पर समस्त बलकर्मियों और उनके परिजनों को मेरी शुभकामनाएं।

(वीरभद्र सिंह)

सत्यमेव जयते

Mufti Mohammad Sayeed

Chief Minister
JAMMU & KASHMIR

MESSAGE

I am glad to know that Sashastra Seema Bal is celebrating its 52nd Anniversary of dedicated service to the nation on December 24, 2015.

Sashastra Seema Bal is a versatile force, capable of performing in diverse terrain and climate conditions. It has played a significant role in discharging various responsibilities including relief and rescue operations during natural calamities.

Sashastra Seema Bal personnel have made supreme sacrifices while performing their duties under hostile and difficult circumstances.

I convey my best wishes to the all ranks of Sashastra Seema Bal on this occasion.

(Mufti Mohammad Sayeed)

Govt. of Jharkhand

रघुवर दास

Raghubar Das

मुख्यमंत्री

झारखण्ड

Chief Minister

Govt. of Jharkhand

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर मैं सभी जवानों एवं उनके परिजनों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सशस्त्र सीमा बल झारखण्ड राज्य में न केवल नक्सली हिंसा पर काबू पाने में अपनी प्रभावकारी भूमिका निभा रहा है अपितू राज्य के दुर्गम इलाकों में अपने कल्याणकारी एवं विकासपरक कार्यक्रमों से जनता को शिक्षित एवं विकसित बनाने का काम कर रहा है।

मैं सशस्त्र सीमा बल के 52वें स्थापना दिवस कार्यक्रमों की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

(रघुवर दास)

सत्यमेव जयते

शिवराज सिंह चौहान

मुख्य मंत्री
मध्यप्रदेश

संदेश

हर्ष का विषय है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस गौरवशाली अवसर पर सभी जवानों एवं उनके परिवारजनों को हार्दिक बधाई।

सशस्त्र सीमा बल अपने कौशल एवं साधना के साथ राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा कर रहा है। जिस सहजता एवं भव्यता के साथ सशस्त्र सीमा बल अपने कर्तव्यपथ पर शान से आगे बढ़ रहा है वह अत्यंत सराहनीय है। हमारे लिये गौरव की बात है।

बल भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर भी सराहनीय रूप से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहा है। मुझे विश्वास है कि सशस्त्र सीमा बल के विस्तार एवं आधुनिकीकरण से और अधिक प्रभावी रूप से अपने दायित्वों का निर्वहन करेगा।

शुभकामनाओं सहित।

शिवराज सिंह चौहान

सत्यमेव जयते

देवेंद्र फडणवीस

मुख्यमंत्री
महाराष्ट्र

Chief Minister
Maharashtra

संदेश

मै यह जानकर हर्ष एवं आनन्द का अनुभव कर रहा हूं कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है।

सशस्त्र सीमा बल की उपलब्धियां भारतीय इतिहास के स्वर्णिम अध्याय है। बल कर्मियों का त्याग, समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा अनुकरणीय हैं। मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि सशस्त्र सीमा बल ने छत्रपति शिवाजी महाराज की गौरवशाली परम्पराओं की युद्ध प्रणाली को आधुनिक परिवेश मे आगे बढ़ाकर राष्ट्र की सुरक्षा को सुनिश्चित किया।

अपने वर्तमान स्वरूप में भी सशस्त्र सीमा बल भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा की सुरक्षा पूरी व्यवसायिक प्रतिबद्धता के साथ कर रहा है। सीमाओं पर देश की रखवाली करने का कार्य बखूबी निभा रहा है।

मैं एक बार पुनः बलकर्मियों को हार्दिक बधाई सम्प्रेषित करता हूं, और इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले एस. एस. बी. समाचार वार्षिकांक के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

(देवेंद्र फडणवीस)

सत्यमेव जयते

Pawan Chamling
(Honoris Causa)

CHIEF MINISTER
SIKKIM

MESSAGE

It gives me great pleasure to extend my best wishes to all ranks of Sashastra Seema Bal on the occasion of its 52nd Anniversary Day on December 24, 2015.

Sikkim as a sensitive border state has a long and cherished association with SSB to shoulder the responsibility of securing Nation's sovereignty and integrity. We salute our valiant Jawans guarding our frontiers under all circumstances for their courage, patriotism to keep our borders and fellow citizens safe from all impending challenges. For more than three decades, the people of Sikkim have benefited from people oriented security and development works of SSB on all along the border of the State.

I have been witness to various activities carried out by SSB and their enthusiasm in the service of the people of border areas. I would like to convey my heartiest greetings to all SSB personnel and their families on this occasion.

(Pawan Chamling)

सत्यमेव जयते

अखिलेश यादव

मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

संदेश

हर्ष का विषय है कि सशस्त्र सीमा बल दिनांक 24 दिसम्बर, 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है।

सशस्त्र सीमा बल भारत–नेपाल सीमा पर स्थित उत्तर प्रदेश के पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर एवं महराजगंज जनपदों में कार्यरत है। अपने कार्यों से बल ने जनता के मन में सुरक्षा एवं विश्वास की भावना पैदा की है। मुझे विश्वास है कि यह बल भविष्य में भी निष्ठापूर्वक देश की सीमााओं की रक्षा हेतु इसी प्रकार तत्पर रहेगा।

स्थापना दिवस पर मेरी तथा प्रदेश की जनता की ओर से सशस्त्र सीमा बल के समस्त कर्मियों एवं उनके परिजनों को हार्दिक बधाई।

(अखिलेश यादव)

सत्यमेव जयते

हरीश रावत

मुख्यमंत्री
उत्तराखण्ड

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सशस्त्र सीमा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर मैं सभी बल कर्मियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

सशस्त्र सीमा बल लम्बे समय से पूरे राष्ट्र की अनुकरणीय सेवा करता आ रहा है। यह बल न केवल सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा कर रहा है बल्कि सीमान्त क्षेत्र की जनता की खुशहाली एवं तरक्की के लिए भी काम करता है। अपनी स्थापना के समय से ही बल उत्तराखण्ड वासियों के लिए विभिन्न प्रकार की कल्याणकारी एवं विकासपरक योजनाएं एवं कार्यक्रम संचालित करता रहा है।

अपनी बदली हुयी भूमिका में भी एस. एस. बी. उत्तराखण्ड के निवासियों की अनन्य सेवा कर रहा है। भारत–नेपाल सीमा पर अपने कार्यों मे बरते जा रहे संयम एवं धैर्य से भारत–नेपाल के पारम्परिक रिश्तों की डोर को मजबूती प्रदान करने के साथ–साथ सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र में सामाजिक सौहार्द एवं विकास का वातावरण सृजित किया है।

मैं एक बार पुनः बल को इसके 52वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

(हरीश रावत)

सत्यमेव जयते

মমতা ব্যানার্জী
ममता बैनर्जी
ممتا بنرجی
Mamata Banerjee

মুখ্যমন্ত্রী, পশ্চিমবঙ্গ
मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल
وزیر اعلیٰ مغربی بنگال
CHIEF MINISTER
WEST BENGAL

MESSAGE

I am happy to learn that Sashastra Seema Bal (SSB), will celebrate its 52nd Anniversary Day on 24.12.2015 and will bring out a souvenir to commemorate the event.

By playing a crucial role in guarding the nation's borders, SSB ensures the safety and well-being of our citizens. I appreciate such dedicated service of the SSB personnel and convey my greetings and best wishes on the occasion.

(Mamata Banerjee)

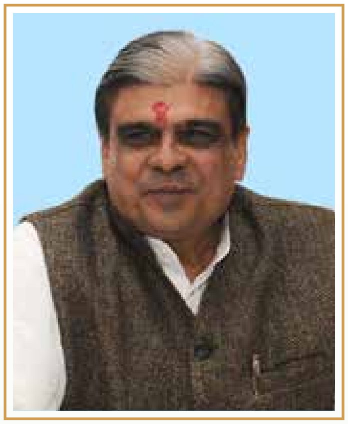

सत्यमेव जयते

हरिभाई परथीभाई चौधरी

Haribhai Parathibhai Chaudhary

गृह राज्य मंत्री,
भारत सरकार
नई दिल्ली– 110001

MoS (HOME AFFAIRS)
GOVERNMENT OF INDIA

MESSAGE

I am extremely happy to learn that Sashastra Seema Bal (SSB) is celebrating its 52nd Anniversary Day of its services to the nation on 20th December, 2015 and a befitting Parade is being organized on 24th December, 2015.

Sashastra Seema Bal is well known for its acumen for gathering intelligence and for its tradition of selfless service and sacrifice. The organization has evolved into an elite Force by widening its gamut of activities to internal security in challenging areas affected by Left Wing Extremism, J&K and BTAD areas in addition to management of open & porus borders with Nepal and Bhutan. The trust reposed by the nation in SSB is more than justified.

On this occasion, I convey my greetings and best wishes to all the Officers and Jawans of Sashastra Seema Bal as well as their family members.

Haribhai Chaudhary

(Haribhai Parathibhai Chaudhary)

किरेन रीजीजू
Kiren Rijiju

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली- 110001
MoS (HOME AFFAIRS)
GOVERNMENT OF INDIA

MESSAGE

I am happy to know that Sashastra Seema Bal (SSB) is celebrating its 52nd Anniversary Day on 20th December, 2015 and a befitting Parade is being organized on 24th December, 2015.

Sashastra Seema Bal has a challenging task of manning the porous and friendly Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders. SSB has stood out as a border guarding force due to its unique nature and its penchant of mingling professionalism with community service and participation, which is indeed laudable. With several comprehensive border management initiatives, the Force has, in a very short time, endeared itself as a people-oriented Force.

SSB has instilled a new sense of confidence in the hearts of the border population and is now recognized as a progressive and modern Border Guarding Force. In addition, the work of SSB in the LWE inflicted areas as well as J&K deserves special praise.

I convey my heartiest greetings to all the personnel of Sashastra Seema Bal on this occasion.

(Kiren Rijiju)

सत्यमेव जयते

अजीत डोभाल, कीर्ति चक्र
Ajit Doval, KC

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार
National Security Adviser

संदेश

मेरे लिए हर्ष का विषय है कि सशस्त्र सीमा बल 20 दिसम्बर 2015 को अपना 52वां स्थापना दिवस मना रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का भी विमोचन कर रहा है।

स्पेशल सर्विस ब्यूरो के रूप में बल द्वारा सीमा क्षेत्र के निवासियों को राष्ट्र की मुख्य धारा में समाहित एवं उनमें राष्ट्रीय चेतना के प्रचार–प्रसार करने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में महत्वूपर्ण योगदान, निःसंदेह बल के लिए गर्व का विषय है। 2001 में एक सशस्त्र बल के रूप में संगठन को एक नया दायित्व सौंपा गया था। यह संतोष का विषय है कि एक छोटे कार्यकाल में ही संगठन ने अच्छे नेतृत्व, अनुशासन, प्रशिक्षण और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुये अपने नये दायित्व को निभाने के लिए स्वयं को पूर्णतः सक्षम कर लिया।

मुझे प्रसन्नता है कि अपनी बदली हुई भूमिका में भी सशस्त्र सीमा बल अपनी अच्छे कार्यों की विरासत को लेकर आगे बढ़ रहा है। आज भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर पूरी व्यवसायिकता के साथ राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ–साथ अपनी कार्य–कुशलता से इन दोनों देशों के साथ हमारी परम्परागत मित्रता की भी सक्षम रूप से रक्षा कर रहा है।

मैं सशस्त्र सीमा बल को उसकी 52वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर सभी अधिकारियों, जवानों, कर्मियों एवं उनके परिवारजनों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

अजीत डोभाल
(अजीत डोभाल)

प्रदीप कुमार सिन्हा
Pradeep K. Sinha

मंत्रिमंडल सचिव
CABINET SECRETARY
NEW DELHI

MESSAGE

On the occasion of its 52nd Anniversary on December 20th, 2015, I extend my warm greetings to all Officers and personnel of Sashastra Seema Bal and to their family members.

Sashastra Seema Bal, in it's erstwhile role as Special Service Bureau under Cabinet Secretariat had a glorious record of integrating the people of the remote border areas with the rest of the country by undertaking various Perception Management Programmes.

The Force has made a perceptible dent in containing anti-national and trans-border criminal activities in it's new role as a Border Guarding Force. I have full faith in the organisation's abilities to discharge its duties with the utmost professional competence.

I wish the Force and its members all success in living up to the expectations of the Government and fulfilling the hopes and aspirations of the people.

(P. K. Sinha)

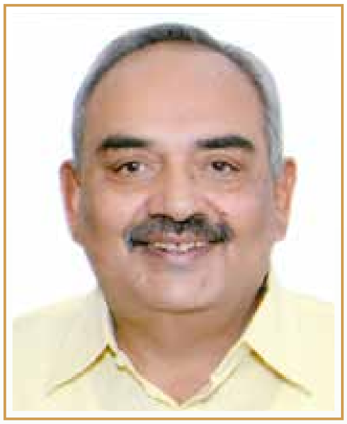

सत्यमेव जयते

Rajiv Mehrishi

गृह सचिव,
HOME SECRETARY
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

MESSAGE

I am happy to learn that Sashastra Seema Bal (SSB) is celebrating its 52nd Anniversary Day on December 20th, 2015 and a befitting Raising Day Parade is being organized on December 24th, 2015.

2. Sashastra Seema Bal has been manning the 2450 kilometer Indo-Nepal and Indo-Bhutan Border to check cross border crimes and also to sustain India's age old relations with these two friendly nations.

3. The Force has built a robust relationship with the border communities through its Perception Management, Civic Action and Border Management endeavors and built a strong network of gathering intelligence about anti national activities. Through its operational achievements it has reassured the people and brought peace and tranquility in these regions.

4. On the occasion of its 52nd Anniversary Day, I extend my greetings and felicitations to all Officers, ranks and their families. I wish SSB all success in times to come.

(Rajiv Mehrishi)

B.D. Sharma, IPS (Retd.)
बंशी धर शर्मा, भा.पु.से. (से.नि.)

Former Director General
Sashastra Seema Bal
भू.पू. महानिदेशक
सशस्त्र सीमा बल

संदेश

भारतीयता की अमर.गाथा को जन.जन का कंठहार बनाने वाले सशस्त्र सीमा बल का नेतृत्व करते हुए मुझे गौरव, दर्प और अभिमान का अनुभव रहा है। बल ने अपनी अविराम एवं अनथक राष्ट्रसेवा से भारतीय राष्ट्रीयता का एक अपूर्व अमर गान रचकर इसे कोटि–कोटि हिन्दुस्तानियों के जीवन–संगीत की भैरवी बना दिया। बल द्वारा रचा यह राष्ट्र संगीत युगों–युगों तक हमें राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए अनुप्राणित करता रहेगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे नवोदित राष्ट्र ने प्रजातांत्रिक व्यवस्था को अंगीकार किया। प्रजातंत्र में आम जनता सर्वोच्च होती है तथा शासन की सभी संस्थाओं और नीतियों का मूल ध्येय आम जनता का विकास, सशक्तिकरण एवं कल्याण होता है। हमें इस बात का फ़ख्र होना चाहिए कि सशस्त्र सीमा बल एक ऐसा संगठन है जिसकी स्थापना और सम्पूर्ण गतिविधियों का केन्द्र आम जनता रही है। हमारे बल की कोशिकाओं की रचना–प्रक्रिया में जनता की भागीदारी रही है। आम जनता हमारी प्रेरणा एवं शक्ति रही है। भारत का जन–गण सदैव हमारी अक्षय उर्जा का स्त्रोत रहा है। हमारी इस गौरवपूर्ण विरासत ने हमें 'जनता का बल' कहलाने का मान दिया। यह मान हमें विरासत में मिला सबसे कीमती तोहफा है। हमारी विरासत लोगों की सेवा करने और लोगों में बन्धुत्व की भावना भरके राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने की है। हमें अपनी आगे की यात्रा भी अपनी इस विरासत को ज़ेहन में रखते हुए जारी रखनी होगी।

इस समय सशस्त्र सीमा बल न केवल भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहा है बल्कि बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, जम्मू एवं कश्मीर तथा असम में आन्तरिक सुरक्षा के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मुझे इस बात पर गर्व है कि अपने सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र में हमारे बलकर्मी न केवल सुरक्षा कार्यों को बखूबी अंजाम दे रहे हैं बल्कि विभिन्न कल्याणकारी एवं विकासपरक गतिविधियों का लगातार संचालन कर आम जनता के जीवन में गुणात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए भी प्रयासरत हैं। आम जनता की बेहतरी के लिए हमारे विभिन्न काम हमारे कार्य.क्षेत्रों में एक ऐसे सकारात्मक माहौल का सृजन कर रहे हैं जिससे जनता सदैव हमें सहयोग एवं समर्थन देने के लिए तत्पर रहेगी। हमें अपने सुरक्षा कर्तव्यों के निर्वहन, संचालन एवं निष्पादन में मानव अधिकारों, मानवीय गरिमा एवं मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देनी होगी। मैं हमारे सभी बलकर्मियों का आहवान करता हूं कि वे आम जनता के साथ सदैव शिष्ट, सभ्य और संयत व्यवहार की आदत डालें। हम सब जनता के सेवक हैं। यह मूल मंत्र हमें हमेशा याद रखना होगा।

बल के अन्दर भी हमें अपने कार्य व्यवहार में सभ्यता, शिष्टता एवं मानवीय गरिमा को पूरी इज्ज़त देने की नीति पर चलना होगा। मुझे आप सभी से अपने सहकर्मियों एवं अधीनस्थों के साथ शिष्ट एवं संयत आचरण की अपेक्षा है।

एक सशक्त राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन के रूप में जनता से आदर पाने के लिए हमें अपनी सम्पूर्ण कार्यप्रणाली में पूरी पारदर्शिता एवं सतर्कता बरतने की जरूरत है। बल के अन्दर किसी भी स्तर पर एवं किसी भी रूप में भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बल 'ज़ीरो टॉलरेंस' की नीति अंगीकृत कर चुका है। इसके लिए बल ने हाल में ही कई नीतिगत फैसले लिए हैं। टॉल–फ्री नम्बर की स्थापना कर भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी लड़ाई में बल ने आम जनता को भी भागीदार बनाया है। मैं सभी बलकर्मियों का आहवान करता हूं कि वे अपने कर्तव्यों के निर्वहन में पूरी सतर्कता बरतें ताकि हम राष्ट्र की आकांक्षाओं पर पूरी तरह खरा उतर सकें।

बल ने पिछले एक साल में गौरवपूर्ण उपलब्धियों के कई नए धवल–शिखर छुए हैं। बल ने गत वर्ष अपनी सक्रियता से नेपाल के गढ़ीमाई मेले में सदियों से चली आ रही लाखों पशु–पक्षियों की क्रूर एवं अमानवीय बलि–प्रथा पर विराम लगवाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। बल के पर्वतारोहियों ने हिमालय पर्वत के त्रिशूल शिखर को फतह कर हमें गौरवान्वित किया है।

देश की जनता को जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, नदी संरक्षण एवं विभिन्न दूसरे सामाजिक मुद्दों पर जागृत करने के लिए हमने पांच राज्यों और सात नदियों से होकर 2273 किलोमीटर दूरी का 'रॉफ्टिंग–सह–नौकायन अभियान' सफलता पूर्वक आयोजित किया। धारचूला, उत्तराखण्ड से आरम्भ होकर यह महा–अभियान गंगासागर, पश्चिम बंगाल में सम्पन्न हुआ। मेरा यह विश्वास है कि हमारा यह भगीरथ–अभियान जनता को जागरण का नव–संदेश देने में अवश्य सफल हुआ होगा।

अभी हाल ही में बल ने 'आठवें अखिल भारतीय पुलिस बैडमिन्टन चैम्पियनशिप–2015' का सफल आयोजन कर अपनी कुशल आयोजन.क्षमता को भी सिद्ध कर दिखाया है। यह हमारे लिए अत्यंत गौरव एवं संतोष की बात है।

मैं बल के 52वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर हम सभी का गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अमर गीत 'एकला चलो रे' की पंक्तियों से प्रेरणा लेने का आहवान करता हूं। जब हमारे प्रत्येक देशवासी के अन्तर में राष्ट्र के लिए मेघ के विद्युत्कणों से अपने अस्थि.पंजर को प्रज्ज्वलित करने वाली आत्मोत्सर्ग की वेगवती भावना का प्रवाह होगा, तभी हम सब हिन्दुस्तान को दुनिया का सबसे ताकतवर और खूबसूरत देश बनाने के सपने को हकीकत में तब्दील करने में सक्षम होंगे।

अन्त में, मैं सभी बलकर्मियों एवं उनके परिवारजनों को नववर्ष–2016 के लिए हार्दिक शुभकामनाएं सम्प्रेशित करते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

(बंशी धर शर्मा)

Archana Ramasundaram, IPS
अर्चना रामासुंदरम, भा.पु.से.

DIRECTOR GENERAL
Sashastra Seema Bal
महानिदेशक
सशस्त्र सीमा बल

संदेश

"लेख लिखें अभिलेख लिखें, मिलकर हम समवेत लिखें।
नए साल के काल–भाल पर, जन–गण का जयघोष लिखें।।
आओ सुन्दर गीत रचें, एक सुर में गाएं।
भारत–भूमि के हर–घर में, अमन की ज्योति जलाएं।।"

भारतीयता की अमर–जय गाथा को जन–जन का कंठहार बनाने वाला सशस्त्र सीमा बल नव वर्ष–2016 का अभिनन्दन एवं स्वागत करता है। नूतन वर्ष के अवसर पर हम राष्ट्र–निर्माण के यज्ञ में अपने हिस्से की आहूति देने का एक बार पुनः संकल्प लें।

नव वर्ष के शुभ अवसर पर हम सब एक समवेत शपथ लें कि हम एक राष्ट्र के रूप में एक मन–प्राण से भारत की कीर्ति पताका को यशस्वी बनाने का यथेष्ट और अनवरत प्रयास करते रहेंगे। हम पूर्ण निष्ठा के साथ भारत के जन–गण के सशक्तिकरण, भारत के गौरव एवं गरिमा में अभिवृद्धि एवं भारत की सुरक्षा को सुनिश्चित करने में प्राण–पण से जुटे रहेंगे।

मैं नव–वर्ष के अवसर पर सभी बलकर्मियों का आह्वान करती हूँ कि वे बल की गौरवशाली परम्पराओं से अनुप्राणित इस नए साल में अपने शौर्य, साहस एवं ईमानदारी से राष्ट्र निर्माण के नित नए मंत्रों की सृष्टि करें। बल का हर कर्मी नए साल में अपने सद्प्रयासों से बल की धवल कीर्ति–गाथा में नित–नए स्वर्णिम पन्ने जोड़ें।

मैं सभी भारत वासियों, बलकर्मियों एवं उनके परिवारजनों को नव वर्ष की मंगल कामनाएं सम्प्रेषित करती हूँ।

अर्चना रामासुंदरम
(अर्चना रामासुंदरम)

सम्पादकीय.....

दीपक कुमार, भा.पु.से.
महानिरीक्षक (प्रचालन एवं आसूचना)

एस. एस. बी. समाचार के वार्षिकांक के साथ हम अपने सुधी पाठकों के समक्ष एक बार पुनः उपस्थित हैं। हमारा बल 24 दिसम्बर, 2015 के दिन अपनी स्थापना की 52वीं वर्षगांठ मना रहा है। हम सभी बल कर्मियों के लिए यह गौरव का क्षण है। बल के जीवन के ये 52साल राष्ट्र सेवा की गौरव–गाथा है। अब हम अपनी गौरवपूर्ण विरासत के साथ राष्ट्र–सेवा की नित नई गाथा लिखने की ओर अग्रसर हैं। इसलिए हमारी यह कोशिश है कि एस. एस. बी. समाचार बल की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं नीतियों का एक समकालीन दस्तावेज साबित हो। एस. एस. बी. समाचार के हर नए अंक में हम बल की समकालीन गतिविधियों, उपलब्धियों एवं महत्वपूर्ण घटनाओं को समाविष्ट कर रहे हैं ताकि बल की समग्र गतिविधियों से न केवल हमारे पाठक परिचित हों बल्कि भविष्य के लिए भी यह सामग्री सशस्त्र सीमा बल के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में काम आए।

एस. एस. बी. समाचार के इस वार्षिकांक को ऐतिहासिक एवं कालजयी दस्तावेज का स्वरूप देने के लिए हमने इसमें महामहिम राष्ट्रपति, भारत गणंतत्र, माननीय प्रधानमंत्री, भारत गणंतत्र, माननीय गृहमंत्री, भारत गणंतत्र आदि के साथ–साथ उन सभी राज्यों के महामहिम राज्यपालों एवं माननीय मुख्यंमत्रियों के संदेश को समाविष्ट किया है जहां पर हमारी इकाईयां कार्यरत हैं।
सशस्त्र सीमा बल की गौरव–गाथा में कई नए स्वर्णिम–अध्याय जोड़ कर व बल की उपलब्धियों को नए प्रतिमान देकर हमारे महानिदेशक महोदय जनवरी–2016 माह में शासकीय सेवा से सेवानिवृत हो रहे हैं। हम महोदय के स्वस्थ एवम दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

बल कर्मियों एवं उनके परिजनों के समग्र कल्याण के लिए सशस्त्र सीमा बल वाईव्ज वेलफेयर एसोशिएसन (संदीक्षा) प्रेरणादायी कार्य कर रही है। अभी हाल में ही संदीक्षा ने नई दिल्ली में 09 अक्तूबर,2015 से 11 अक्तूबर, 2015 तक 'संदीक्षा मेला' का आयोजन किया। इस अंक में हम संदीक्षा मेला पर भी एक फोटो फीचर प्रकाशित कर रहे हैं।

आम जनता को पर्यावरण एवं समसामयिक सामाजिक मुद्दों पर जागृत करने के लिए पिछले दिनों एस. एस. बी. रानीखेत सीमान्त के द्वारा 2273 किलोमीटर लम्बा एक रॉफ्टिंग–सह–नौकायन अभियान आयोजित किया गया। इस गौरवपूर्ण साहसिक अभियान पर भी हम एक विस्तृत रिपोर्ताज प्रकाशित कर रहे हैं। एस. एस. बी. के पर्वतारोहण दल ने अभी हाल में ही त्रिशूल पर्वत पर सफलतापूर्वक आरोहण किया। एस. एस. बी. के पर्वतारोहियों की इस शौर्यपूर्ण सफलता पर हम सबको नाज है। इस अंक में त्रिशूल पर्वत के सफल आरोहण अभियान पर भी हम एक रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं।

सशस्त्र सीमा बल ने अभी हाल मे ही नई दिल्ली में 'आठवां अखिल भारतीय पुलिस बैडमिन्टन चैम्पियनशिप–2015' का सफलतापूर्वक आयोजन किया। बल के जीवन की इस महत्वपूर्ण परिघटना पर भी हम एक रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं।

बल अपने सम्पूर्ण कार्य–क्षेत्र में अपने नागरिक कार्यान्वयन कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनता के समग्र कल्याण एवं उत्थान के लिए अनवरत कार्यरत है। हमारा यह मानना है कि नक्सल समस्या महज एक कानून एवं व्यवस्था की समस्या नहीं है। समग्र रूप से यह समस्या विकास के अभाव की समस्या है। बल नक्सल प्रभावित इलाकों में अपने गहन नागरिक कार्यान्वयन कार्यक्रमों से जनता का कल्याण सुनिश्चित कर विकास के माध्यम से नक्सली हिंसा को पछाड़ने के लिए प्रयासरत हैं। बल के इस परिवर्तनकारी एवं अभिनव प्रयोग को रेखांकित करने वाले एक आलेख को भी हमने इस अंक में समाविष्ट किया है।

महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल के निर्देशानुसार बल भ्रष्टाचार के सम्बंध में 'जीरो टालरेंस' की नीति पर चल रहा है। इस सम्बन्ध में बल के द्वारा कई महत्वपूर्ण एवं प्रगतिशील फैसले लिए गए हैं। अतएव सतर्कता जागरूकता को और भी मुखर स्वर प्रदान करने के लिए हमने इस अंक में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। बल की प्रचालनात्मक गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर भी एक रिपोर्ट हम प्रकाशित कर रहे हैं। इसके अलावा कई अन्य समसामयिक घटनाओं एवं गतिविधियों को भी इस अंक मे हमने स्थान दिया है।

संचार एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। संचार तब तक असफल है जब तक कि संचार प्रक्रिया मे शामिल दोनों पक्ष एक –दूसरे को प्रतिपुष्टि न दें। एस. एस. बी. समाचार की भी संचार प्रक्रिया तब तक अधुरी है जब तक कि हमारे सुधी पाठकों/बलकर्मियों की प्रतिपुष्टि न प्राप्त हो। प्रतिपुष्टि हमें एस. एस. बी. समाचार की पाठ्य सामग्री एवं कलेवर को पाठकों के अनुकूल एवं सारगर्भित बनाने में मदद करेगी। अब तक एस. एस. बी. समाचार की सम्प्रेक्षण प्रक्रिया में पाठको ंकी 'प्रतिपुष्टि एवं प्रतिक्रिया' का अभाव था। इस कमी को पूरा करने एवं अपने पाठकों से सतत् संवाद कायम करने के लिए हमें आपकी प्रतिपुष्टि, प्रतिक्रिया एवं विचारों की अपेक्षा रहेगी।

मेरी यह पवित्र कामना है कि 52वां स्थापना दिवस बल की गौरवपूर्ण उपलब्धियों को एक नई आशा प्रदान करेगा। इसके साथ ही एस. एस. बी. समाचार के सभी पाठकों, समस्त बलकर्मियों एवं उनके परिजनों को नव वर्ष की हमारी अशेष शुभकामनाएं।

दीपक कुमार

(दीपक कुमार)

श्रीमती अर्चना रामासुंदरम ने महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल का पद भार ग्रहण किया

श्रीमती अर्चना रामासुंदरम ने 3 फरवरी 2016 को बल मुख्यालय, नई दिल्ली में सशस्त्र सीमा बल (एस. एस. बी.) के महानिदेशक का पद–भार ग्रहण किया। श्रीमती रामासुंदरम, सन् 1980 बैच की तमिलनाडु कैडर की सम्मानित पुलिस अधिकारी हैं।

श्रीमती रामासुंदरम आज प्रातः बल मुख्यालय, सशस्त्र सीमा बल पहुंची जहां उन्हें सैन्य परम्पराओं के अनुरूप 'गार्ड ऑफ ऑनर' प्रदान किया गया। इसके बाद उन्होंने महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल का पद–भार औपचारिक रूप से ग्रहण किया। इसके पश्चात जनमाध्यम के प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए श्रीमती रामासुंदरम ने कहा कि सशस्त्र सीमा बल के महानिदेशक का पद–भार ग्रहण कर वो स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हैं। उन्होंने कहा कि आज के दिन को मैं भारत की महिलाओं को समर्पित करती हूं जब पहली बार किसी महिला ने किसी अर्द्ध सैनिक बल के महानिदेशक का पद–भार सम्भाला है। मैं सशस्त्र सीमा बल की गरिमा एवं प्रतिष्ठा में सतत् अभिवृद्धि का प्रयास करती रहूंगी।

श्रीमती रामासुंदरम का जन्म 01 अक्तूबर, 1957 के दिन दिल्ली में हुआ था। श्रीमती रामासुंदरम महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल का पद–भार ग्रहण करने के पूर्व महानिदेशक, राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो के महानिदेशक के पद पर कार्यरत थीं। श्रीमती रामासुंदरम राजस्थान विश्व विद्यालय से अर्थशास्त्र में परास्नातक हैं। इन्होंने अर्थशास्त्र परास्नातक की परीक्षा में पूरे विश्व विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था जिसके लिए इन्हें स्वर्ण–पदक प्रदान किया गया था। श्रीमती रामासुंदरम ने साउथ कैलिफोर्निया विश्व विद्यालय, लास एंजेलस से अपराध विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि भी हासिल की है। ❑

श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री, परेड का निरीक्षण करते हुये

सशस्त्र सीमा बल ने मनायी 52 वीं वर्षगॉठ, केन्द्रीय गृह मन्त्री ने ली परेड की सलामी

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 24 दिसम्बर, 2015 को सशस्त्र सीमा बल परिसर, घिटोरनी, नई दिल्ली में आयोजित सशस्त्र सीमा बल की 52वीं वर्षगांठ परेड की सलामी ली। इस अवसर पर समारोह को सम्बोधित करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि कि सशस्त्र सीमा बल अपने सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र में अपने दायित्वों का निर्वहन उच्चकोटि की कुशलता के साथ कर रहा है जिसकी सर्वत्र सराहना हो रही है। गृह मंत्री ने कहा कि आज की परेड का अवलोकन करने के बाद यह स्पष्ट है कि सशस्त्र सीमा बल का प्रशिक्षण उच्चस्तरीय है। सशस्त्र सीमा बल का सम्पूर्ण अनुशासन उच्चकोटि का एवं अत्यंत सराहनीय है। इसके लिए मैं बल के प्रशिक्षकों एवं प्रबन्धन को हार्दिक बधाई देता हूं। बल अपने सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र, चाहे वह भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा हो, चाहे वह आन्तरिक सुरक्षा के कार्य क्षेत्र हों, चाहे नक्सल विरोधी अभियान हो, हर जगह उच्चकोटि के सराहनीय कार्य कर रहा है।

भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर एस. एस. बी. के कार्यों की सराहना करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि इन दोनों ही खुली सीमाओं पर जिस कुशलता के साथ बल कार्य कर रहा है उससे न केवल हमारे राष्ट्र की समग्र सुरक्षा सुनिश्चित हुई है बल्कि इन दोनों ही मित्र राष्ट्रों के साथ हमारे सम्बन्धों को नई प्रगाढ़ता प्राप्त हुयी है। बल के प्रचालनात्मक कार्यों की सराहना करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष एस. एस. बी. ने इन दोनों ही सीमाओं पर कुल दो सौ पंद्रह करोड़ रूपए मूल्य की गैर कानूनी सामग्री जिसमें मादक पदार्थ, जाली भारतीय एवं अन्य मुद्राएं, निशिद्ध वस्तुएं, वन्य जीव उत्पाद, वन उत्पाद, अस्त्र–शस्त्र आदि की जब्ती की है एवं कुल 3523 अपराधिक तत्वों को गिरफ्तार किया है।

गृह मंत्री ने प्रधान मंत्री की महत्वाकांक्षी योजनाओं 'जन–धन योजना' एवं 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफलता दिलाने के लिए जनता को प्रेरित करने के एस. एस.बी. के कार्यों को सराहा। गृह मंत्री ने बल के द्वारा टॉल फ्री नम्बरों

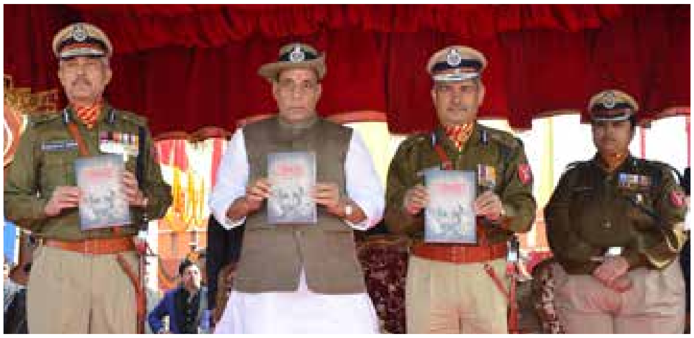

हयूमेन ट्रेफिकिंग – ए विजन डाक्यूमेण्ट' पुस्तक का विमोचन करते हुये केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह

की स्थापना की सराहना करते हुए कहा कि इससे तस्करों एवं आपराधिक तत्वों के बारे में आम जनता से सूचनाएं प्राप्त करने मे काफी सहूलियत मिलेगी। गृह मंत्री ने मानव तस्करी पर लगाम लगाने के एस. एस. बी. के कार्यों को भी सराहा। गृह मंत्री ने कहा कि नेपाल मे आए भूकम्प के बाद 87 मानव तस्करों को गिरफ्तार कर 280 पीड़ितों को मुक्त कराने का एस. एस. बी. का कार्य अत्यंत सराहनीय है। नेपाल में आए भयंकर भूकम्प के बाद एस. एस. बी. के द्वारा चलाए गए राहत अभियान की सराहना करते हुए गृहमंत्री ने कहा कि एस. एस. बी. के उच्च कोटि के इस मानवीय राहत कार्य के लिए बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने विशेष रूप से उन्हें फोन कर सराहा था।

समारोह में गृहमंत्री के प्रति स्वागत अभिभाषण करते हुए एस. एस. बी. के महानिदेशक श्री बंशी धर शर्मा ने कहा कि 52वीं वर्षगांठ परेड के अवसर पर मैं हमारे उन समस्त बलकर्मियों को श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं जिन्होंने अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके बलिदान आने वाले समय में हमारे सम्पूर्ण बल को प्रेरित करेगा। इस अवसर पर श्री शर्मा ने इस वर्ष की बल की उपलब्धियों का विवरण भी प्रस्तुत किया। महानिदेशक महोदय ने बताया कि इस वर्ष बल ने पचपन करोड़ तेरह लाख रूपए मूल्य के नशीले पदार्थ, अठ्ठारह लाख सत्ताइस हजार रूपए के जाली नोट एवं चौव्वन करोड़ छिहत्तर लाख रूपए मूल्य के निशिद्ध पदार्थ जब्त किया है। महानिदेशक सशस्त्र सीमा बल ने भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर अपराध नियंत्रण के लिए संयुक्त अभियान चलाने का भी प्रस्ताव किया।

सेनानायक एच.बी.के. सिंह के नेतृत्व में भव्य वार्षिक परेड मे भाामिल एस.एस.बी. की पाँच टुकड़ियों जिसमें एक महिला टुकड़ी तथा एक भवान दल भी सम्मिलित था ने गृहमन्त्री को सलामी दी। सैकड़ों की संख्या में उपस्थित दर्शकों ने इस आकर्षक व भव्य परेड का अवलोकन किया। परेड के अनुशासन व लयबद्धता ने दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

समारोह में श्रीमती मीनाक्षी लेखी, सांसद, रॉयल भूटान पुलिस के प्रमुख श्री किपचू नामग्याल, केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के प्रमुख, गृह मंत्रालय के उच्च अधिकारीगण, सेवारत एवं सेवानिवृत एस. एस. बी. कर्मी एवं उनके परिजन, स्कूली बच्चे एवं स्थानीय जनता उपस्थित रहे।

समारोह में सम्बोधित करते हुये श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री, भारत सरकार।

बल के जवानों का साहसिक प्रदर्शन एवं सीमान्त युवाओं से मिलन

वर्षगाँठ परेड समारोह के अवसर पर बल के जवानों ने विभिन्न प्रकार के साहसिक प्रदर्शन से अपनी निपुणता व कौशल का परिचय दिया, जिसमें महिला जवानों ने भी अपने रोमांचक करतबों से दर्शकों का रोमांचित किया। मोटर साइकिल के विभिन्न करतबों के प्रदर्शन के साथ–साथ एस.एस.बी. के श्वान दल ने भी अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये अपनी घ्राण शक्ति, आज्ञाकारिता व अनुशासन के अतिरिक्त भवान दल ने ''स्वच्छ भारत अभियान'' के उद्देश्य को भी दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत कर स्वच्छता का सन्देश दिया।

समारोह में जवानों ने सामुहिक पी.टी. का आकर्षक प्रदर्षन किया। संगीत की स्वर लहरियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए रंगीन छतरियों और गुब्बारों को हाथ में लेकर जवानों का प्रदर्शन मोहित करने वाला रहा।

मुख्य अतिथि श्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री भारत सरकार, समारोह में जमुई, बिहार व जम्मू क मीर से आये 40 ग्रामीण युवाओं से मिले और एस.एस.बी. द्वारा कराये गये निशुल्क क्लैफ्ट लिप व पैलेट आपरेशन के लाभार्थी बच्चों से भी मिले, सीमान्त क्षेत्र से आये इन बच्चों को उन्होने सराहा और फोटो खिचवाये।

लोकार्पण –

समारोह में श्री राजनाथ सिह, गृहमंत्री, भारत सरकार ने एस.एस.बी. के भाहीदों पर रचित '' ई–बुक' का लोकार्पण करते हुये हाल ही में भाहीद हुये श्री राजेश शिवरैन, द्वितीय कमान अधिकारी (विमान चालक) को याद किया।

इसके साथ ही उन्होने ''हयूमेन ट्रेफिकिंग– ए विजन डाक्यूमैण्ट'' का विमोचन किया। इस पुस्तक में बल ने सीमा

एस.एस.बी के शहीदों पर रचित 'ई–बुक' का लोकार्पण करते हुये केन्द्रीय गृहमंत्री।

क्षेत्र में व्याप्त मानव व्यापार पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

महानिदेशक परेड –

वर्षगाँठ समारोह से पूर्व 22 दिसम्बर 2014 को 'महानिदेशक परेड' का आयोजन 25 वीं वाहिनी घिटोरिनी के परेड ग्राउण्ड मे किया गया। परेड कमाण्डर सेनानायक श्री एच.बी.के. सिंह के नेतृत्व में बल की महिला टुकड़ी सहित पाँच टुकड़ियो ने महानिदेशक को सलामी दी। इस अवसर पर श्री बी.डी. शर्मा, महानिदेशक सशस्त्र सीमा बल ने बल के कार्यों की सराहना की और कहा कि सुरक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमें सत्त सजग व चौकस रहकर कार्य करना है। हमे अपने प्रशिक्षण के कार्यों में प्रगति करनी है और लगातार अपने कौशल में वृद्धि करनी है।

इस अवसर पर उन्होने 21 कर्मियों को महानिदेशक स्वर्ण पदक व 85 कर्मियों का महानिदेशक रजत पदक से सम्मानित किया।

सशस्त्र सीमा बल के पुरोधा श्री नारायण सिंह भाटी सम्मानित

सशस्त्र सीमा बल के पूर्व मण्डल संगठक श्री नारायण सिंह भाटी को वार्षिक परेड के दौरान श्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री, भारत सरकार ने ''स्क्रौल आफ आनर'' (सम्मान पट्टिका) एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।

पद्मश्री श्री भाटी ने एस.एस.बी. को सन 1966 से 1989 तक अपनी सेवायें प्रदान की। वे गुरिल्ला युद्ध प्रणाली व आतंकवाद निरोधक युद्ध प्रणाली के दक्ष माने जाते हैं। आन्ध्रप्रदेश सरकार द्वारा नक्सलियों से मुकाबला करने के लिए स्थापित किए गए विशेष बल (ग्रे हाउन्ड) की स्थापना एवं प्रशिक्षण में श्री नारायण सिंह भाटी का विशिष्ट योगदान रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा में उनके योगदान को बल ने अपनी इस 52वीं वर्षगॉठ के अवसर पर सम्मानित किया।

प्रेस कान्फ्रेन्स

आज बल मुख्यालय, सशस्त्र सीमा बल में 22 दिसम्बर, 2015 को बल की 52वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित वार्षिक प्रेस कान्फ्रेन्स में श्री बंशी धर शर्मा, महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल ने मीडिया कर्मियों के समक्ष बल के द्वारा सीमा प्रबन्धन के क्षेत्र में प्रारम्भ की गई नयी पहलों के साथ–साथ बल की प्रचलनात्मक उपलब्धियों का विस्तृत ब्यौरा दिया।

अपने संबोधन में श्री शर्मा ने बल के एक सीमा रक्षा संगठन मे रूपान्तरण का उल्लेख करते हुए कहा कि एस. एस. बी. पहले मंत्रिमंडल सचिवालय के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसे कारगिल युद्ध के बाद गृह मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण मे लाकर भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं की रक्षा का भार दिया गया। भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर बल की नियुक्ति के सम्बंध में श्री शर्मा ने बताया कि भारत–नेपाल सीमा पर बल की 471 एवं भारत–भूटान सीमा पर 153 सीमा चौकियाँ हैं। नेपाल एवं भूटान के साथ लगी सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा करने के साथ–साथ सशस्त्र सीमा बल जम्मू एवं क मीर में आन्तरिक सुरक्षा कार्य, बिहार, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ में नक्सल विरोधी अभियानों एवं असम राज्य में अशांत क्षेत्र पट्टी एव बी. टी. ए. डी. क्षेत्र के सुरक्षा कार्यों में भी संलग्न है। श्री शर्मा ने बताया कि असम का अशांत पट्टी क्षेत्र (Disturbed Area Belt) असम एवं नागालैण्ड राज्यों की सीमा पर स्थित गोलाघाट जिले में पड़ता है। 21 अगस्त, 2014 के दिन 14 निरपराध व्यक्तियों की जघन्य हत्या के बाद यह क्षेत्र समाचारों की सुर्खियों में आया था। इसके बाद 245 परिवारों को बेघर होना

श्री बी.डी. शर्मा, महानिदेशक एस.एस.बी. अन्य उच्चाधिकारियो के साथ प्रेस को सम्बोधित करते हुये।

पड़ा। इस हत्याकांण्ड के बाद एस. एस. बी. की नौ कम्पनियों की तैनाती स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए की गई थी। एस. एस. बी. ने 245 परिवारों को पुर्नवासित किया एवं अब धीरे–धीरे पूरे क्षेत्र में शान्ति बहाल हो रही है।

फिलहाल एस. एस. बी. की सात वाहिनियां बिहार, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में नक्सल विरोधी अभियानों मे लगी हैं। महानिदेशक सशस्त्र सीमा बल ने बताया कि एस. एस. बी. ने अब तक 148 नक्सलियों को हथियार एवं गोली, युद्धक परिधान, बर्तन एवं नक्सली साहित्य के साथ गिरफ्तार किया है। श्री शर्मा ने बताया कि एस. एस. बी. रावघाट रेलवे प्रोजेक्ट की भी रक्षा कर रहा है। 95 किलोमीटर लम्बी यह रेल परियोजना भिलाई इस्पात संयंत्र को छत्तीसगढ़ राज्य के माओवादी हिंसा से प्रभावित खनिज उत्पादक जिलों बालोद और कांकेर को जोड़ने के लिए लगाई जा रही है। इस रेलवे प्रोजेक्ट को सुरक्षा प्रदान करने के लिए एस. एस. बी. की दो वाहिनियां लगी हैं। अभी तक इस रेलवे प्रोजेक्ट के 17 किलोमीटर रेलवे ट्रैक को लगाने का काम बिना किसी अप्रिय घटना के पूरा किया जा चुका है एवं शेष कार्य भी तीव्र गति से प्रगति पर है।

महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल ने बताया कि एस. एस. बी. स्थानीय जनता के साथ बेहतर सम्बन्ध कायम करने के लिए विचार प्रबन्धन कार्यक्रमों का भी लगातार आयोजन करता आ रहा है। इस वर्ष एस. एस. बी. के मेडिकल विंग के द्वारा अब तक 1209 मेडिकल शिविर लगाकर 92695 रोगियों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गयीं। श्री शर्मा ने आगे बताया कि बल की पशु चिकित्सा शाखा ने अब तक कुल 2093 पशु चिकित्सा शिविर लगाकर ग्रामीण जनता के 33496 पशुओं की चिकित्सा की। विचार प्रबन्धन कार्यक्रम के तहत एस. एस. बी. युवाओं के लिए कुशलता विकास कार्यक्रमों का भी संचालन करता है। इसके साथ ही बल शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रमों, खेलकूद प्रोत्साहन एवं विभिन्न प्रकार के सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों का भी अनवरत रूप से आयोजन करता है। इस वर्ष कुल 18899 ग्रामीण इन परियोजनाओं से लाभान्वित हुए।

महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल ने बताया कि बल की पहुंच एवं कुशलता को बढ़ाने के लिए, बल ने नई पहल के तहत पूर्ण प्रशिक्षित 'बार्डर इंटरएक्शन टीमों' का गठन किया है जो सादे वेश में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के प्रवेश एवं निकास बिन्दुओ पर तैनात किए गए हैं ताकि आम जनता हमारे कार्मिकों से निर्भीक होकर मिल जुल सके। यह व्यवस्था अच्छी तरह काम कर रही है एवं इसकी सर्वत्र सराहना की जा रही है।

श्री शर्मा ने बताया कि नेपाल में आए भयंकर भूकम्प के बाद भारत–नेपाल सीमा पर मानव तस्करी की घटनाओं में काफी इजाफा आ गया था। इसको देखते हुए एस. एस. बी ने विशेष अभियान चलाकर 102 मानव तस्करों को गिरफ्तार कर 336 लोगों को मानव–तस्करी से मुक्त कराया। भारत–भूटान सीमा पर भी एस. एस. बी. ने 7 मानव तस्करों को गिरफ्तार कर 28 लोगों को मुक्त कराया।

श्री शर्मा ने वर्ष 2015 में बल द्वारा की गयी बरामदगियों का विवरण देते हुए बताया कि बल ने इस वर्ष 213.51 करोड़ की निशिद्ध वस्तुओं जिसमे पुरातात्विक महत्व की वस्तुएं, आग्नेयास्त्र, गोलियां व विस्फोटक पदार्थ शामिल है तथा 7316 तस्करों को गिरफ्तार किया है।

नेपाल में आए भूकम्प के दौरान एस. एस. बी. द्वारा किए गए राहत अभियान का जिक्र करते हुए श्री शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा सहायता बल के अनुरोध पर एस. एस. बी. ने अपने 100 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को

जम्मू कश्मीर व जमुई (बिहार) से आये हुये ग्रामीण युवाओं तथा क्लैफ्ट लिप आपरेशन सुविधा के लाभार्थियों के साथ समूह चित्र में केन्द्रीय गृहमत्री, बल के महानिदेशक व उच्चाधिकारीगण।

38 वाहनों के साथ काठमांडू, नेपाल भेजा। एस. एस. बी. ने सभी महत्वपूर्ण रास्तों पर 13 राहत–शिविरों की स्थापना कर नेपाल के भूकम्प पीड़ितों को मेडिकल, भोजन एवं निकटस्थ रेलवे स्टेशन तक परिवहन आदि की व्यवस्था की। एस. एस. बी. ने कुल 69073 भूकम्प पीड़ितों को, जिनमें 994 विदेशी भी शामिल थे। श्री शर्मा ने बताया कि नेपाल के भूकम्प पीड़ितों के लिए एस. एस. बी. के अधिकारियों एवं जवानों ने अपने प्रयासों से 83.05 लाख रूपए मूल्य की 52 ट्रक राहत सामग्री प्रदान की।

इस वर्ष बल की मुख्य उपलब्धियों के बारे में बताते हुए श्री शर्मा ने कहा कि एस. एस. बी. कर्मियों के जोरदार प्रयासों से नेपाल के बारा जिले के 250 साल पुराने गढ़ीमाई मेला में बलि के लिए ले जाए जाने वाले पशुओं की संख्या पर रोक लगाने में सफलता पायी जिसके परिणाम स्वरूप नेपाल के गढ़ीमाई मेला प्रशासन ने सदियों पुरानी इस पशु–बलि प्रथा को बन्द करने की घोशणा की।

श्री शर्मा ने बताया कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निबटने के लिए बल की सभी इकाइयों को एक अभियान 'माई कैम्पस, ग्रीन कैम्पस' के तहत वृक्षारोपण करने का निर्देश दिया गया है। इस वर्ष अब तक बल के द्वारा 24276 पौधे रोपे गए एवं यह अभियान अभी भी जारी है।

बल के साहसिकं खेल अभियानों के बारे में बताते हुए श्री शर्मा ने कहा कि इस वर्ष बल के पर्वतारोहियों ने सफलता पूर्वक माउंट त्रिशूल का भी आरोहण किया। इस वर्ष एस. एस. बी. ने एक 52 दिवसीय बन्धुत्व रैली का भी आयोजन किया जिसमें ट्रैकिंग, साईकिलिंग एवं राफ्टिंग गतिविधियां शामिल थी। प्रचलनात्मक गतिविधियों के साथ–साथ एस. एस. बी. कर्मी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं मे भी बेहतर प्रदर्शन कर रहे है। इस वर्ष एस. एस. बी. के खिलाडियों ने अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद स्पर्धाओं में तीन स्वर्ण पदक, छह रजत पदक एवं दो कांस्य पदक जीते। राष्ट्रीय खेलों एवं चैम्पियनशिपों में भी एस. एस. बी. के खिलाड़ियों ने तीन स्वर्ण पदक, दो रजत पदक एवं चार कांस्य पदक जीते।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत एस. एस. बी. ने उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं असम में 309 ग्रामीण विद्यालयों को ग्रहण किया है एवं वहां पर अब तक 90 शौचालयों का निर्माण कराया है। प्रधानमंत्री जनधन योजना के सम्बंध में श्री शर्मा ने बताया कि एस. एस. बी. ने भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर अब तक कुल 363495 बैंक खाते खुलवाए है।

श्री शर्मा ने बताया कि बल भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमाओं पर निःशुल्क मेडिकल मोबाइल एम्बुलेन्स सेवा का भी परिचालन कर रहा है। अब तक इस सुविधा से पड़ोसी देशों नेपाल एवं भूटान के नागरिकों सहित कुल 2278 लोग लाभान्वित हुए है।

श्री शर्मा ने बताया कि एस. एस. बी. भ्रष्टाचार के मुद्दे पर 'जीरो टॉलरेन्स' की नीति अपना रहा है। इसके लिए बल ने एक टॉल फ्री नम्बर 1903 स्थापित किया है जिस पर कोई भी व्यक्ति दुर्व्यहार एवं भ्रष्टाचार के सम्बंध में शिकायते दर्ज करा सकता है। इसके साथ ही लोग तस्करी पर रोकथाम लगाने के लिए भी शिकायतें दर्ज करा सकते है।

कान्फ्रेन्स के आरम्भ में श्री दीपक कुमार, महानिरीक्षक (प्रचालन एवं आसूचना) ने पत्रकारों को 'पावर पाइन्ट प्रेजेन्टेशन' के माध्यम से एस.एस.बी. की उपलब्धियों और कार्यकलापों के बारे मे विस्तृत जानकरी दी। प्रेस कान्फ्रेन्स में श्री सुरजीत सिह देशवाल, अपर महानिदेशक, एस.एस. बी, बल मुख्यालय के उच्चाधिकारी तथा सभी सीमान्तों के महानिरीक्षक व निदेशक एस.एस.बी. अकादमी भी उपस्थित थे।

एस.एस.बी. कैलेण्डर का लोकार्पण–

बल के कलेण्डर का लोकार्पण करते हुये महानिदेशक, एस.एस.बी.।

सशस्त्र सीमा बल की वार्षिक प्रेस कान्फ्रेन्स के दौरान श्री बंशी धर शर्मा, महानिदेशक एस.एस.बी. ने बल के वार्षिक कलैण्डर का लोकार्पण किया। एस.एस.बी. के इतिहास व उसके नये स्वरूप में रूपान्तरण की गाथा को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले कैलेण्डर की रचना, बल के सूचना एवं विकास शाखा ने की है। यह कैलेण्डर एस.एस. बी. की 52 वर्षों की उपलब्धियों और प्रगति का द्योतक है जो कि हर बलकर्मी के लिये प्रेरणादायी है। राष्ट्रीय राजधानी के पत्रकारों ने इस कैलेण्डर को सराहा। ❑

रिपोर्ट–नागेन्द्रपति त्रिपाठी, सहायक प्रचार अधिकारी, बल मुख्यालय

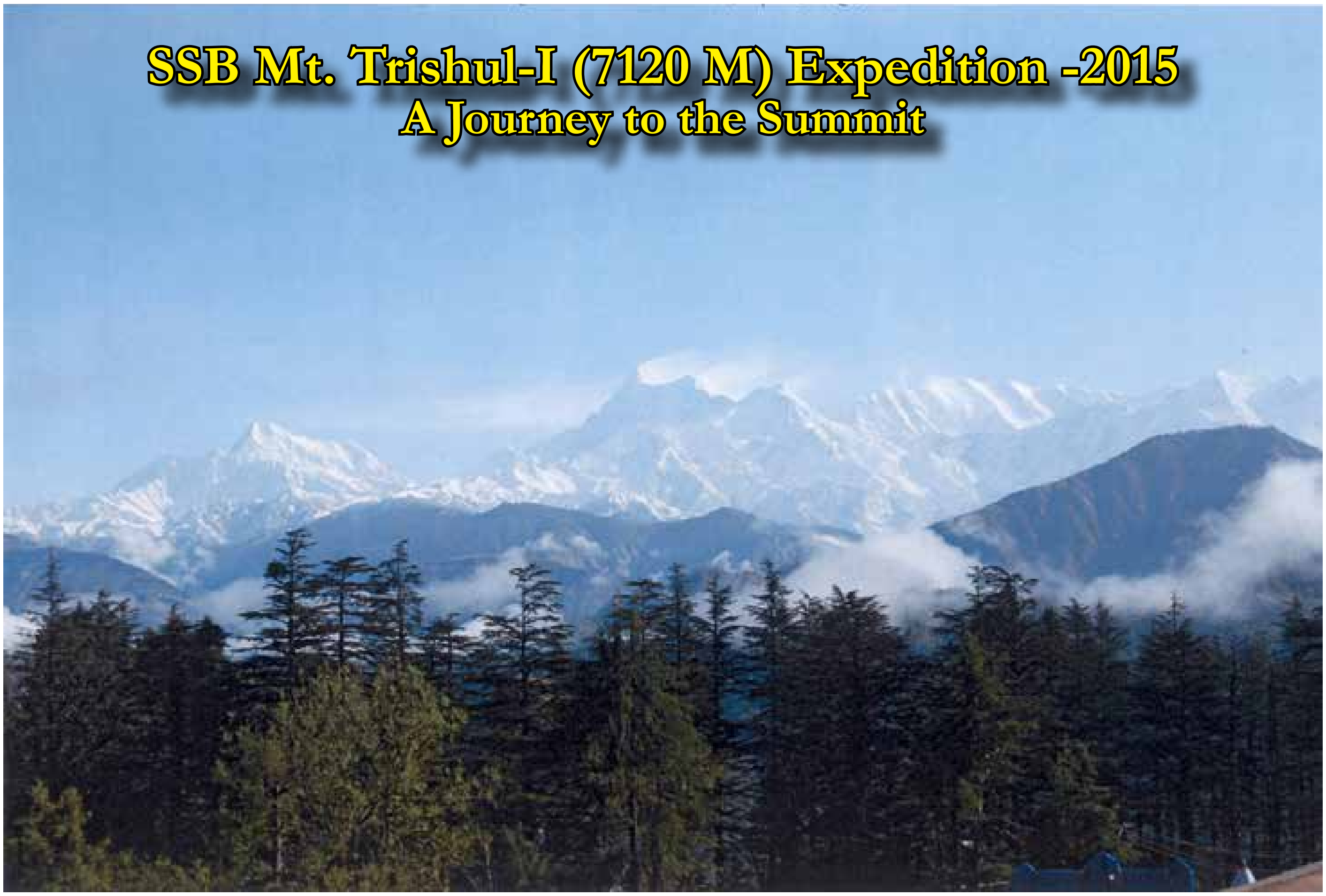

SSB Mt. Trishul-I (7120 M) Expedition -2015
A Journey to the Summit

Everester Somit Joshi takes us through the rough and tumble of mountaineering on Mt Trishul

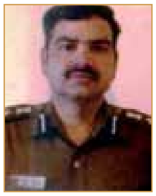

Somit Joshi
Commandant, TC Gwaldam

Every Mountaineer has his own reasons for climbing a mountain. Sir Edmond P Hillary, the first to summit Mount Everest with Sherpa Tenzing Norgay in 1953 reflected "It is not the mountain we conquer but ourselves". It is said that 'Mountains have mysterious ways of getting the best out of a man; there is no other pursuit which brings about such complete physical, mental, emotional and spiritual integration'. The Trishul Peak is best viewed from Kausani and Gwaldam. However, the majestic view of Mt. Trishul from Gwaldam entices every mountaineer towards its summit.

Trishul is a group of three peaks of Western Kumaun (spelling?) Himalayas, with the highest (Trishul-I) reaching 7120m. The three peaks resemble a trident (Trishul in Hindi/Sanskrit) the weapon of Lord Shiva. The Trishul group forms the Southeast corner of the ring of peaks enclosing the Nanda Devi Sanctuary, about 15 Kms West-South West of Nanda Devi peak. The main peak, Trishul-I, was the first peak over 7,000 M to have ever been climbed, in 1907 by T G Longstaff.

➤ Putting ourselves into Expedition Mode

As part of our annual plan this time we decided to attempt Trishul. Soon after our plan got approved at FHQ in July 2015, the team was finalized and procuring equipments/clothing/ration and arranging the porters to ferry the load from road head to the base camp and simultaneously booking the peak through IMF (Indian Mountaineering Foundation) the Nodal agency in India, obtaining the permission from Forest Department of Uttarakhand since, the peak lies in the Nanda Devi Bio Reserve Sanctuary. We also had to get the team members in to proper expedition mode. Time was short. Normally

the cutoff date for mountaineering expeditions is 15th Oct. because of the onset of winters in the high altitude region. But, we got the required support and guidance from Shri S Bandopadhyay, IG Srinagar Academy and things fell into place.

➢ Training Begins

From 1st Aug. onwards, we started training as a team and it mainly involved physical and mental conditioning. Soon our supplies started arriving and we repacked them into smaller loads of 25 kgs. each so that it could be carried safely by the porters up to the base camp. The IMF allotted the peak to us from 1st to 15th Sept. 15.

➢ Flagged Off

The team was Flagged Off by Shri Kiren Rijiju Union MoS (Home) on 2nd Sept 2015, from FHQ, New Delhi. After an impressive Flag-Off Ceremony, we came back to Gwaldam on 3rd and left for Sitel via Karanprayag, Nandprayag the next day. We commenced our trek to the Base-Camp on the 5th Sept. Enroute, we halted at Tatda (2450M), Latakhopri (3100M), Chandaniyaghat (3940M). We reached Home Kundon on 8th Sept and set our Base-Camp (BC) at 4400 M. We utilized the next day as Admn day and tried to make ourselves as comfortable as possible because it would be our home for the next 15-20 days.

Shri Kiren Rijiju, MoS(Home) handing over the flag & shovel to team leader Commandant Sumit Joshi.

➢ Ordeal of Acclimatization

One of the most important aspects of mountaineering is acclimatization - getting our body adjusted to the altitude and environment. Therefore, we reached the BC gradually gaining less than 1000 mtrs altitude a day. Similar practice was adopted from BC to the higher Camps.

Shri Kiren Rijiju, MoS(Home) flagging off the team

We commenced with an acclimatization walk to Camp I on 10th Sept. The route to Camp-I was through a treacherous scree (loose/broken rock) slope and it was quite difficult to negotiate. As we had to cross this area a number of times we decided to put up fixed rope at a couple of difficult stretches of the route to Camp-I. Finally, we reached Camp-I (5100 M) area after a five hour climb rested there for while enjoyed the breathtaking view and returned back to our BC.

All the team members including the Support team members were hale and hearty. By then everyone was well acclimatized. We spent the next few days on 'load ferry' - carrying the equipment and stores required for higher camps from the BC. We and our High Altitude Porters (HAPs) were involved in the load ferry. Even our team Medical Officer Dr. Aditya Sherawat participated in the load ferry, which was a commendable feat because this was his first experience in high altitude areas. Our load ferry was completed by 14th Sept. and so we took a day off on 15th to rest and recuperate.

➢ Treacherous Route Opening Begins

On 16th Sept. our climbing team consisting of 10 members shifted from the Base Camp and occupied Camp-I. Here, we divided the team into two - Team A led by Shri Subodh Chandola DFO (Mtg)/Dy. Leader along with two climbing members and two HAPs would open the route and fix the rope from Camp-II (5655 M) to Camp-III (6400 M) - the most difficult stretch of the expedition. Team B would perform the load ferry from Camp - I for higher camps. Team A had to toil hard to open the route and fix the rope from - II upwards. Shri Subodh Chandola DFO (Mtg) did a commendable job. He successfully opened the route along the 400 Meter

ice wall having a slope of sheer 900 - where one wrong move could result in a fatal fall thousands of feet below. While Team B completed the load ferry of stores by 18th Sept., the route opening task was completed on 19th and Team A also returned back to Camp-I. Now that the most difficult task i.e., route opening was over we now were waiting for a clear weather window so that we could undertake the summit bid.

After resting and waiting for a few days in Camp-I we got a favorable forecast and we decided to shift to Camp-II on 22nd Sept. But as luck would have it the moment we reached Camp-II the weather turned bad. It started snowing heavily. It snowed the entire evening and continued till late in the night. Most of us were up throughout the night to clear the snow that was falling on our tents to ensure that the tents don't cave in. The next morning was bright and clear but we decided to go down to Base Camp because as a rule – 'no movement up the mountains till 72 hours after fresh snow fall since movement may trigger off an avalanche'.

So from 24th to 26th Sept., we rested in the Base Camp and prayed to the weather GOD to hold up. Our prayers were answered when we received a WT message from Gwaldam in forming that the weather would remain bright and clear and the winds would also be calmer. We immediately decided to move up the next day.

We directly hit Camp-II on 27th Sept and made our selves comfortable there. We were carrying sufficient packed food so didn't feel like cooking any solid food. We however prepared lots of tea/coffee and water (my melting snow) to ensure that our body fluid level is maintained. In high altitude it is important that we take a lot of fluids to prevent dehydration.

On 28th morning we woke up to a clear and bright sky but a chilly day. We immediately packed our rucksacks and commenced the journey on the most difficult part of the expedition. It appeared an uphill task-literally and figuratively. We kept on boosting each other's morale and continued our journey. By 12 in the afternoon we had reached the 400 mtr ice wall. It appeared as a huge challenge. Every time we glanced below the view sent a chill down our spine because of the sheer fall thousands of feet below. But by GODs grace and our firm determination we reached Camp-III (6400 M). Once there it felt like we are almost there. The sky was clear we had a breathtaking view of Nandaghunti, Rongti, Choukhamba and Kamet peaks.

However the most important aspect of the expedition 'the summit' was still to be achieved. We ten climbing members forced ourselves into two tents since there was space for only 3 tents. The third tent was utilized by the HAPs. We were very tense with regard to the weather but excited also at the same time and we kept

Team at the Summit

our fingers crossed. During our evening discussions we decided to divide our team for the summit bid into two. Four climbing members - Shri Subodh Chandola DFO (Mtg)/ Dy. Leader, HC/GD Kudrat Ali, HC/GD Vinod Singh Negi and CT/GD Kushal Kumar would attempt the summit on 29th Sept., while the others i.e., HC/ GD Vikeel, CT/GD Rahul, CT/GD Tausoom CT/GD Dharmendra and myself would act as the support team to cater to any eventuality. The support team attempted the summit on 30thSept. It was also decided that the team would move very early in the morning by 0230 hrs. We tried to sleep early in the evening but due to the excitement kept tossing in our sleeping bags. We all woke up by midnight and the first task was melting the snow and preparing water and tea. At the designated time the team left Camp-III. I ensured that they carried the National and Force Flag and Cameras with spare batteries.

➢ Triumphant Enterprise

The team left Camp-III at the designated time we wished them luck and watched them till their head lamps were visible. Fortunately, the weather was calm as predicted and there was almost no wind. We thanked the Almighty and got into our tents as it was getting too chilly to stay stationary outdoors. We were now monitoring the progress of the team via the Walkie-Talkie set. The team members at Base Camp were also up by 0230 hrs and following our communication. Everything was going as per plan. At 0830 hrs the Summit Team radioed us at Camp-III that they had SUMMITED. Our joy knew no bounds. We immediately notified the Base Camp and they in turn informed IG Academy via SAT phone. I then congratulated the Dy. Leader and all the other team members at the Summit, Camp-III and BC. I asked the Dy. Leader to ensure that all the members follow the safety procedure and return back to Camp-III safely. A mountaineer has to more careful during descent because according to statistics more accidents occur during descent. The team returned safely back to Camp-III by 1130 hrs. They were on cloud nine and we were also very elated. We hugged them and offered a cup of hot tea and some biscuits to them. They rested for a while.

Team members on way to Mt. Trishul

In the mean time we got a weather update from the BC informing that the next day would be windy and attempting the summit with the high winds lashing your faces was a hard proposition. So we all got into a huddle and decided that since one Team has successfully scaled the peak and made the mission successful, for the safety of the team members we should wind-up Camp-III and descend to Camp-I. Everyone agreed albeit with a heavy heart (the Team 2 members) and proceeded to pack up Camp-III and Camp-II. We then reached Camp-I and halted for the night. On 30th Sept., we reached BC and the Team members there gave us a warm welcome. The next two days were utilized in accounting and repacking the stores and equipments for the return journey. On 3rd Oct. we left BC and directly reached Tatra. The next day we halted at Nandprayag and finally reached Gwaldam on 5th Oct., to a rousing reception.

➢ Flagged-In

A grand Flag-In Ceremony was organized at Gwaldam on 19th Oct., which was presided over by Shri Kiren Rijiju MoS (Home) along with DG SSB.

I cannot but, close with a word of gratitude to GOD Almighty for ensuring that we had a safe and successful expedition. Further, a huge 'Thank you' to DG, SSB and IG Academy for having full faith in the expedition team and for extending full support too. Finally, a thumbs up to my entire team for working as a well oiled machine and delivering the desired results. Indeed- Rightly said, 'When the going gets tough, the tough get going'. ❑

Negotiating with the mountain to reach the Summit

Vigilance Awareness Week Celebrated

DG, SSB administrating oath on Vigilance.

Vigilance Awareness Week was observed from 26th to 31st Oct 2015, in various offices and field units of SSB to encourage the employees to visualize their role in the vital task of combating corruption and sensitize the border population too.

On 26th Oct 2015, DG, SSB administered the pledge for the 'Vigilance Awareness Week', with an objective to motivate and emphasize the need to combat corruption to make the organization corruption free and then go on to make the Nation strong. DG, SSBs message was also broadcast on the opening day on AIR FM and Rajadhani Radio Channels. Banners and

DG, SSB browsing photo exhibition on vigilance at Force Hqrs

Posters were displayed at prominent places all around the FHQ and field offices. With a view to bring awareness through social media ie; WhatsApp (mobile No.9868505018), Face book (cvossb), Twitter page(@cvossb), Instagram (cvossb) and a Toll free number-1800-11-8300 were introduced, for enabling SSB employees and the public to send their complaints, grievances, views/suggestions and photographs on corruption related issues.

Smt Renuka Mishra, IPS, Chief Vigilance Officer, SSB inaugurated the week long programme of Vigilance Awareness Week attended by officers/officials from FHQ and trainees specially called from different FTRs of SSB to attend the week long training programme. She also delivered a lecture on 'Preventive Vigilance as a tool of Good Governance', which was the theme of this year's 'Vigilance Awareness Week'. CVO, SSB also emphasized that, with the effort and cooperation of every employee, zero tolerance towards corruption can be achieved in the organization.

Training programmes were also

Smt. Renuka Mishra, IG (P&T) addressing the Seminar during Vigilance Awareness Week

Shri Jagdeep Pal Singh, Commandant (JAG) speaking in the Seminar

conducted during the week for the Officers and officials of Force Hqrs and trainees called from various Frontiers. Eminent guest faculty members including, Ex. CVC Officer, as well as Officer from Customs, BSF and Legal Wing of SSB delivered lectures on topics related to vigilance as well as SSB Act and Rules. This week long training programme helped the trainees to update their basic knowledge and awareness on vigilance related issues.

Besides, Essay and quiz competition covering the topics on vigilance, RTI, Service Rules etc were also organized and large number of officers, officials of FHQ and trainees from field units actively participated in the competition.

During the week, Assistant Director (VIG) along with vigilance team of FHQ has visited the Sarvodaya Kanya Vidyalaya, which is an SSB adopted school at Ghitorni, Delhi and distributed buddy badges and name slips for books with slogans/quotes on anti corruption and vigilance to the children. AD (VIG) interacted with these School children, motivated them to fight against corruption and inculcated a sense of awareness among themselves.

Shri Vandan Saxena, AD (Pers) in the Seminar

DG, SSB formally closed the week long 'Vigilance Awareness Week-2015' programme by distributing cash awards and certificates to the winners and then emphasized the need for involvement of each and every employee to combat this menace, which is a bane. As Border Guarding Force, every employee needs to motivate and encourage the border population too to report/send the complaints related to corruption without fear. It is the responsibility of every employee to make his/her best efforts in the interest of the organization to make it corruption free.

All the SSB field units also organized the 'Vigilance Awareness Week'. Various events like essay, debate competitions, rallies, etc., were conducted to sensitize the SSB personnel and the border population too. ❑

SSB Organised
8th All India Police Badminton Championship

Shri Sarbanand Sonowal, Minister of State for Youth Affairs & Sports, Legendry Badminton Champion Shri Prakash Padukone releasing souvenir during opening function

Siri Fort Stadium in New Delhi was aesthetically decked and came alive to the mesmerizing tune of Bihu dance on 3rd Nov 15. The occasion was, the 8th All India Police Badminton Championship and the host was Sashastra Seema Bal. The Chief Guest, Shri Sarbananda Sonowal, Minister of State for Youth Affairs and Sports was received by DG SSB and senior Officers. He declared 8th All India Police Badminton Championship open in a colourful ceremony attended by the legendary Badminton Champion Shri Prakash Padukone, Home Ministry officials, Officers of CPMF, 33 teams from different CAPF, Central and State Police organizations present. The four days mega sports event was organized from 3rd to 6th November 2015.

While addressing the gathering, Shri Sonowal said, 'Where we have sports the inevitable happens discipline, sportsman spirit, hard work, commitment, determination, sincerity and conviction, finds its place amongst the citizens'. With the Prime Minister unflinching support the Minister expressed hoped to make India 'the fittest nation in the world' and also 'govern the sporting world by our performance in International events'. He appreciated the initiative taken by SSB in organizing the competition and said that the initiative will steer enthusiasm amongst the youth of the nation.

The Guest of Honor, Padmashree Shri Prakash Padukone congratulated SSB for conducting the event and said, 'Sports in the forces provides an opportunity for individuals to grow physically and mentally strong to deal with the pressures and stress in the profession'. He said that in the earlier days, Maharaja's would support sportsman and artists. Present day governments are also doing well but, he wished they did more for the sporting community.

Padamshree Shri Prakash Padukone, the Guest of Honor escorted by Secretary 8th AIPBC Smt. Renuka Mishra, IPS arriving at venue

Smt. Renuka Mishra, IPS, Secretary 8th AIPBC addressing during the inaugural function

Miss Akanksha Bisht performing Bharatnatayam during opening function

Padam Shree Shri Prakash Padukone addressing on the occasion

Earlier on, Shri B D Sharma, DG, SSB formally welcomed Shri Sarbananda Sonowal, Minister of Youth Affairs and Sports and Shri Prakash Padukone, the legend of Indian Badminton and said that their presence was a great source of inspiration to all of us including the players. He said hosting events of this scale is indeed a prestigious and challenging task. He said that the games will foster friendship, camaraderie and encourage use of best practices amongst the forces. He said a record number of 33 teams of CAPF's and State Police are participating in the Championship. He declared that in all, 191 players will compete in the 12 events.

The Minister and the legend i.e., initiated the championship with a friendly pass. Shri R. K. Bhumla, DIG Spl. Ops, J&K adminstered the oath for the teams. The Chief Guest Shri Sarbananda Sonowal released a Souvenir, on this occasion.

Organizing Secretary of 8th All India Police Badminton Championship, Smt. Renuka Mishra, IPS, Inspector General (P&T) delivered the vote of thanks and thanked Shri Dineshwar Sharma, Director IB who is also the Chairman of the All India Police Sports Control Board, distinguished guests, players and participants. She also thanked the media and acknowledged Shri Durga Prasad, Former Spl. DG, CRPF for his invaluable insight and guidance.

Soon after, the Championship began in all six courts. On 3rd and 4th November, league matches were played and on 5th November 2015 some semifinals and finals were played. The final match of the Men's Singles Championship was played on 6th November 2015 in the presence of the Union Home Minister, Shri Rajnath Singh and Badminton Ace Padma Bhusan Pullela Gopichand during the concluding function. The final match of Men's Singles was played between Dr Benjamin Lal and Virendra Vikram, both from CRPF. Dr Benjamin Lal clinched the closely fought match by 25-23 and 23-21. So far matches were played between Officers only.

Shri Rajnath Singh, Union Home Minister Government of India declared the 8th All India Police

Matches in progress

DG SSB presenting a Memento to Shri Sonowal

DG SSB presenting memento of the Championship to Union Home Minister

Badminton Chamipionship-2015 closed and while addressing the gathering, he said, “We in politics do not get the opportunity to see a match of this kind. The match was engrossing and generated enough curiosity amongst the spectators. Our sportspersons need to get a better deal for the pride and laurels they bring for the nation”. He agreed to ruminate on a proposal of SSB to give promotions to excellent sportspersons in the forces. He said, “the supreme traits of a progressive nation is to have ‘sportsman spirit’ and a sense of ‘healthy competition’ and this too is needed for a good force as our policemen lead very stressful lives and so need to rejuvenate their health. Competitions like these will go a long way to benefit policemen”.

While welcoming the Chief Guest Shri Rajnath Singh, Union Home Minister and Guest of Honour Padma Bhushan Pullela Gopichand, DG, SSB, Shri B D Sharma elaborated that the basic purposes of the show match of Constables was to introduce the participation of other ranks in the future Championship.

The Guest of Honor, Padma Bhushan Pullela Gopichand appreciated the standard of organization of the 8th All India Police Badminton Championship by SSB. Without elaborating he said there were several things that could be considered for inclusion in the professional Championship. He particularly appreciated the ease, swiftness, discipline and synchrony with which the jawans cleared the courts, to start the matches. He went on to project the issues of sportsmen for the benefit of the Home Minister. He moaned that sports is being looked at in isolation and emphasized on the need for the nation to look at the benefits of sports and stop counting the medals, we won. In sagely manner he said, “We either build stadiums or build more Hospitals. If we play sports it will bring the communities together and bring in peace and harmony. It inevitably will make the society healthy. We need to take note of the benefits accrued to the HRD Ministry, Health Ministry, Sports Ministry and Home Ministry. Hence, the Central and the State governments must ensure sports culture matures to make the nation strong”.

Smt. Renuka Mishra, Inspector General, SSB and Organizing Secretary of the event delivered the vote of thanks on behalf the Organizing Committee. All the Guests were given a traditional welcome by the Bihu dance Troupe from Guwahati escorting him from the gate to the dias. Several enthralling performances like, Bharatnatyam by Ms. Akanksha Bisht, Bhangra Dance by the BSF group, Bihar Dance group of SSB, etc., were the highlights apart from the engrossing matches and fighting spirit of players in the six courts.

Shri Rajnath Singh, Union Home Minister addressing during closing function

Union Home Minister Inaugurated Border Out Posts in UP

Shri Rajnath Singh, Union Home Minister has inaugurated the newly-built Border Out Posts of SSB at Pakrihawa under 2nd Bn Siddharthnagar on 12.02.2016. The Home Minister has appreciated SSB for performing its border duty effectively and sincerely. He stated that the basic infrastructure is necessary for a paramilitary organization to strengthen its operational efficiency. The Home Minister asserted that border security is our top priority and the security of national boundaries would ensure national development.

A Traditional welcome to Union Home Minister at Pakrihawa BOP

The Home Minister further said that the government is standing with the force personnel and therefore we are committed to remove all obstacles facing by jawans. He said the border security system will be made high-tech and asked the force personnel to associate themselves with the common folk to win their hearts and minds. SSB is doing commendable job on Indo-Nepal border, the SSB personnel would be able to control infiltration and smuggling in a better way when they will have good rapport with the border populace, he added.

Smt. Archana Ramasundaram during inauguration ceremony said that SSB is not just a security force but it is also functioning as an integrated border management system. The DG told that our 63 Bns have been established and five new Bns to be raised this year. To generate awareness among border people, SSB has been organizing Samajik Chetna Abhiyans every year for decades. To help the poor and needy, free medical and

Shri Rajnath Singh, Union Home Minister inaugurating BOPs with DG SSB and Dignitaries

veterinary camps are being conducted regularly. This apart, some 40 children and adults have undergone cleft lip surgeries in coordination with NGO Smile Train. The recruitment of woman corps in SSB had started in 2008, Mahila jawans are presently deployed on Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders and performing their duties effectively.

The new BOPs built on Indo-Nepal border of U.P are Thutibari (1st Bn Maharajganj), Bhagwanpur (1st Bn Maharajganj), Jhingti (1st Bn Maharajganj), Sundighat (1st Bn Maharajganj) and Pakrihawa. The BOP Pakrihawa is 32 Km away from Siddharthnagar Battalion Hqrs. The Member of Parliament Shri Yogi Aditya Nath, Shri Jagdambika Pal, Shri Pankaj Chaudhary, The Director General, SSB Smt. Archana Ramasundaram, IPS, Shri V.H.Deshmukh, IPS, IG Lucknow Frontier, Shri Bhanu Upadhyay, IG (Admn),

Union Home Minister browsing photo exhibition

Shri Prafulla Kr. Roushan, IPS, DIG Gorakhpur Sector and Commandant 2nd Bn Shri Anil Tigga were also present during the inauguration function.

Shri Rajnath Singh, Union Home Minister and DG SSB at Blood Donation Camp

Shri Rajnath Singh Union Home Minister also visited Blood Donation Camp at Devi Patan Mandir Hospital conducted by SSB in association with Bahraich District Hospital and Nepalganj Medical College (Nepal). The MPs, Shri Yogi Aditya Nath, Shri Jagdambika Pal, Shri Pankaj Chaudhary and DG SSB Srimati Archana Ramasundaram, IPS, Shri V.H.Deshmukh, IPS, IG, Shri Bhanu Upadhyay, IG (Admn), Shri U.P.Balodi, DIG Lakhimpur Sector were also present on the occasion. All the blood donors were SSB personnel. The Home Minister interacted with blood donors. In all 145 units of blood collected, out of which 102 units supplied to District Hospital Bahraich and 43 units to Nepalganj Medical College (Nepal). A medical team under the supervision of Dr. R.Kidwai of Nepalganj Medical college and Dr. M.K.Srivastava, Dr. A.P.Mishra and Dr. Hira Lal (Pathologist) from District Hospital Bahraich have participated in the blood donation camp. The SSB doctors, Dr. H.Sen, Comdt (Med.) Ftr Hqrs Lucknow, Dr. O.B.Singh, Comdt(Med.) 9th Bn Balrampur and Dr. I.H.Kazmi, 59th Bn have also assisted in this Camp.

Home Minister alogwith DG SSB and dignitaries also inspected photo exhibition organized by SSB at Devi Patan Mandir complex at Tulsipur and inaugurated a newly-built Pateshwari Public School in Tulsipur of District Balrampur U.P. ❑

DG SSB Inaugurates SSB Refreshment and Transit Facility at Sela Pass

DG SSB with IG Guwahati Frontier and others at SSB Transit Facility Centre, Sela Pass

Director General of SSB, Shri B D Sharma, IPS inaugurated the first of its kind SSB Refreshment and Transit facility at Sela Pass, located in Tawang District of Arunachal Pradesh, at an elevation of 13,700 ft on 20 November 2015. The SSB facility is the first of its kind created by any Force at such altitude which will cater as cafeteria for travelers in transit, as well. Sela Pass is located in inhospitable remote area where harsh climate conditions prevail and no individual ventures to establish a eatery as it remains snow bound for a major part of the year. But, the need exists. That void has been filled now. It is the second highest Pass in the country after Khardungla Pass in Ladakh.

This Cafeteria will go a long way, to sooth the travails of hard journey to distant Tawang, which is 318 kms from Tezpur, in Assam. It will also facilitate the acclimatization of troops to be deployed at higher altitudes. Inspector General of SSB of Guwahati and Tezpur Frontier, Shri Anil Negi was also present during the inauguration ceremony along with Shri Dilip Kumar Chutia, ADC Jang and Shri R Bhardwaj 2nd in Command and Officiating Commandant of 38th Bn, SSB, Tawang. ❑

SSB's Rafting and Boating Expedition

SSB Rafters negotiating with the waves of River

Sashastra Seema Bal adopted Prime Minister of India's far reaching initiative 'Swachh Bharat Abhiyan' and very diligently began cleaning the Office premises, Campuses and stepped out of our campuses to clean up the neighborhood to inculcate the sense of dignity of labour and habit of cleanliness in and around our neighborhood.

In order to add impetus to Swachh Bharat Abhiyan, a Rafting and Boating Expedition was conducted by SSB Ranikhet Frontier under the name of 'Swachh and Sudridh Bharat'. Under this campaign a team of 71 Officers and officials of SSB sailed 2273 kms on rivers from Dharchula in Uttarakhand to Ganga Sagar in West Bengal to spread the message of 'Clean India, Clean Rivers'.

On 2nd October, 2015 Shri H C Kharkwal, former Inspector General, SSB and Shri Shyam Singh, Inspector General, Ranikhet Frontier flagged off SSB's Rafting and Boating Expedition in a grand function. On this occasion Chief Guest Shri H C Kharakwal said that for decades every year SSB conducted 'Adventurous Sports Activities'. He appreciated the diligence with which the personnel in the Frontier effectively executing their role towards the nation and its citizen. Besides, guarding the porous Indo-Nepal border, the personnel of this Frontier are also educating the border population through its various Civic Action Programmes'.

The expedition covered 2273 kms long river journey on 6 rafts and 8 boats. In the month long expedition SSB passed through five states i.e., Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and West Bengal and nine rivers Mahakali, Sharda, Ghagra, Saryu, Gandak, Ganga, Kosi, Sone and Hugli. All through the journey the team launched'Cleanliness Drive' of river banks and to instill a sense of belongingness with the rivers by involving people residing on the river banks.

The Flag was handed over by the Chief Guest to the team leader Shri Gian Chand amidst cheers and applauses. A Grand Cultural Function was also organized in the flag off function. Soon after the Flag off, the team moved on rafts through Mahakali River.

During the one month long journey, the team members received warm welcome at various points and people came forward to clean the river banks. Local leader's intellectuals and people from all walks came forward to show their solidarity with the aim of expedition. Team members also faced technical and sailing hazards but their moral was always high throughout the journey as people and sister agencies like CRPF, BSF, CISF, State Police, District Administration and social workers came forward to help in their motto.

The month long Rafting and Boating expedition ended successfully on 25th October 2015 at Ganga Sagar with the accomplishment of aims and objectives envisaged in the expedition. Further, the expedition also helped in establishing a close rapport with the masses residing on the river banks with the message of 'Clean India, Clean Rivers'. ❑

While Expedition SSB team clearing banks of Ganga on way

SSB - Enabling the Differently Abled Persons

Keeping in sync with the Government of India's policy of 'equal opportunity for all', DG, SSB desired that we also do some work in this direction in our AOR. Dr S Priyadarshi Comdt (Medical) was nominated the Nodal Officer for Siliguri Frontier. Under the supervision and guidance of Shri Kuldiep Singh IG, Siliguri Frontier carried out extensive survey was carried out by SSB personnel by February 2015. From amongst the population residing in the villages of the Indo-Nepal and Indo-Bhutan borders 538 persons were identified who were differently abled and were genuinely in need of assistive aids under the scheme for their rehabilitation.

DG SSB handing over walking stick to a handicapped person

For identification, proper examination, assessment of the appliances best suited to their size and requirements and supply of the assistive aids and appliances the Regional Office of Artificial Limb Manufacturing Company (ALIMCO) a GoI enterprise at Kolkata was approached. The necessary documentation work like Income Certificate, Disability Certificate and Domicile Certificate to make them eligible for free disbursement under the scheme was carried out by SSB personnel.

The ALIMCO in the first phase provided Aids and Appliances for 325 differently abled children of Jalpaiguri Sector which were distributed during Civic Action-cum-Samajik Chetna Abhiyans at Looksan, Jhalong, Jaigaon and Jayanti villages where 325 persons were provided with Aids and Appliances under the schemes which included 87 Tricycles, 64 Wheelchairs,

Differently Abled too are valuable HR assets of the Nation

The Constitution of India ensures equality, freedom, justice and dignity of all individuals and implicitly mandates an inclusive society for all including the persons with disabilities. As per the provisions of the persons with disabilities Act, 1995, seven categories of disabilities have been identified viz., blindness, low vision, leprosy cured, hearing impairment, loco motor disability, mental retardation and mental illness. Persons falling under these categories with a minimum of 40% disability are eligible for entitlement of all benefits provided by the government.

This substantial portion of our population needs equal opportunities for their development, which is also an essential attribute to the inclusive growth. Hence, while recognizing the differently-abled people as valuable human resource of our country, the government has been taking various initiatives to bring them at par with the mainstream.

The main objective of the Scheme is to assist the needy disabled persons in procuring durable, sophisticated and scientifically manufactured, modern, standard aids and appliances that can promote their physical, social and psychological rehabilitation, by reducing the effects of disabilities and enhance their economic potential.

Providing hearing aid to a child

IG, SSB, Siliguri giving hearing aid

Shri Kuldiep Singh, IG, SSB Siliguri Frontier giving tricycle to the needy

196 Digital Hearing Aid with 1344 Zinc Air batteries for hearing aids.

The first Assistive Aids and Appliances Distribution Programme was organized by 10th Battalion at Malbazar on 7th November 2015. Shri B D Sharma, Director General, SSB distributed 15 Tricycles, 7 Wheel Chairs, 8 Auxiliary Crutches, 7 Walking Sticks and 2 Hearing Aids to the beneficiaries under the programme. During the programme, 39 differently abled persons recieved aids and appliances in the presence of District Administration of Jalpaiguri, Local administration, NGO's, Social activists and youth clubs, State Health Department and officials of Siliguri Frontier, SSB.

While addressing the gathering Shri Sharma said that these differently abled persons are an integral part of our society and that they have given commendable performance in recent Paralympics abroad by securing many Gold and Silver medals, in sports events. He also explained the new initiatives and schemes being carried out by SSB for the welfare of border people under its Civic Action Programme. He applauded the commendable work being done by the Frontier and Sector Jalpaiguri for the medical care, social economic and vocational rehabilitation of the differently abled persons. He also appreciated the role of ALIMCO in making this programme successful by providing all support in the identification process and for providing the aids and appliances free of cost. The programme was highly appreciated by the District Administration, NGO's and local leaders. It was an unforgettable sight to see the gratitude expressed by the beneficiary and the family. ❑

DG SSB and officers with the beneficiaries

MoS(Home) Shri Kiren Rijiju Walks the Talk at Gunji

Jon Krakner said, "When I went to Everest, I underestimated things. I just didn't know what altitude could do. Or the cold. I especially didn't appreciate the cold. It can be just debilitating and things can happen so quickly."

This is a reality even at high altitude posts of 11th Bn Didihat of SSB on the Indo-Nepal border. With heights upward of 10000 feet, only a few gutsy can think of going to these extremely remote and deceptively beautiful locations like Gunji, Kalapani and Chia-lekh. They look so beautiful in pictures. But, the reality here is the oxygen rarity, cold and the altitude rips you inside out. In just a few minutes things can become fatal. There is no light, no mobile, no road and even the oxygen in the air is very little. Yet, our men have braved the odds 24x7 for 12 months of the year.

Sand modal briefing by 2IC at Gunji

With limited resources possible at this remote location, preparations were made on war footing for MoH(s) visit. Four rooms with Bukhari were readied by 11th Bn Didihat. The Battalioin Officers and personnel stationed themselves at Gunji, along with the State Administration.

On 18th October, 2015 Shri Kiren Rijiju, Shri B D Sharma IPS, DG, SSB and Shri Shyam Singh, IG SSB Ranikhet when they arrived in the VIP chopper at Dharchula. The DM, SP of Pithoragarh and Officers of 11th Bn received them at the helipad and drew down to Gunji where the Media and other Officers had reached directly. Here again the locals gave a rousing welcome to the honoured guest.

The Home Minister was accompanied by Shri B D Sharma, IPS, Director General SSB and other senior officers of MHA and SSB with media personnel. Two Gypsies and two medium vehicles were stationed at the

helipad to ferry the VIP team to Company Headquarter location of SSB at Gunji. As the carcade entered the post Shri Kiren Rijiju was pleasantly surprised to see smart SSB Jawans doing obstacle course in the high altitude AIRT Ground of 11th Bn Didihat. He said, "Well done."

At the post, after freshening up and tea break, the Commandant Rajesh Thakur briefed the MoS(Home) on the sand model. The minister was briefed about the history of 11 Bn and the general area and the major problems being faced by SSB personnel in high altitude posts. A booklet giving information about the area was also handed over to the visiting dignitaries.

SSB personnel interacting with Shri Rijiju Minister of State for Home at Gunji

After the break, the visitors proceeded to Kalapani (14000 ft). On the way, Shri Rijiju gave his astute observations about the topography, vegetation and how these would affect the working of Jawans. The group reached Kalapani around 1230 hrs. After a sumptuous lunch with the Jawans, Shri K Rijiju complimented the constables for the quality of food.

A group photo with MoS(Home) while climbing to another BOP

After crossing Bhankha Nala 01 Km upstream of Kalapani Post was the last vehicle point. The MoS and all began the arduous climb on foot to Navi Dhang in spite of a motorcycle and a horse being kept on standby. Shri Kiren Rijiju kept on leading the foot soldiers. Midway, at a place called Mala Kalapani they stopped for a cup of tea and snacks. There, the 2nd In Command of 8th Assam Regiment and his troops interacted with the MoS(Home). Shri Rijiju enquired about the problems being faced by the army men and their deployment.

The visitors had reached an altitude of approximately 15000 feet and the affects of low oxygen, high altitude and fatigue became evident on most of the visitors. It indeed was invigorating for the personnel to see how the MoS(Home), DG, SSB and IG Ranikhet were fairing without acclimatization. Silently, they appreciated the trouble taken to visit them in these frozen hills. However, with a beaming face and twinkle in his eyes Shri Kiren led on. Around 1500 hrs Shri Rijiju reached Nabhi Dhang. The BOP Commander of ITBP post gave a report

Shri Rijiju with ITBP personnel

Shri Kiren Rijiju speaking with media after interacting with Jawans

Shri Rijiju and DG SSB trekking in difficult area to meet the personnel at BOP

of his post to the MoS(Home). The grandiose view of the pious Om Parwat welcomed the Minister.

At Om view point, Shri Kiren Rijiju, MoS(Home) gave a media briefing. He explained about dire consequences in which the SSB Jawans were working and how he indented to go about in future to ease the problems of SSB & ITBP men.

The entourage then moved to the campus of ITBP/ KMVN/ Army at Nabhi Dhang. The Commandant of ITBP welcomed Shri Rijiju and all other members. Later, the MoS(Home) interacted with the Jawans in a Sainik Sammelan, the Jawans apprised the minister their ordeal and requested for good infrastructure, concrete roads for transportation and air ambulance, so that soldiers in need can be air lifted to hospitals. Shri Rijiju assured better services to Jawans at crucial Out Posts. While addressing them he said, "Indian citizens feel safe at home because you brave soldiers are protecting the crucial borders all the time," He further said that there are some issues or hurdles which persist in your way, I would like to assure you that the government is committed to improve the condition of border areas by providing world class infrastructure and telecommunication. Among others, he assured them that he will talk to officials concerned to find solutions, as soon as possible. The Minister said "I would convene a meeting of Road transport and others to work in this regard where all your grievances would be addressed".

The Jawans said they had never imagined that a Union Minister will come to meet them, as not a single minister had done so in the last 68 years after independence.

The team then began their return journey. By the time the group reached the vehicle point, it was pitch dark. Shri Rijiju visited the temple of River Kali. The minister was back to listen to the problems of the Jawans of ITBP at this location and then reached Gunji SSB Company Hqr, at around 8 PM. Outside a big bonfire was lit with chairs all around. Simple food cooked by Jawans was served which included the local delicacies.

Early next morning the MosH, DG SSB and Secretary (Media) left for area visit along the Nabhi River. The breathtaking scenery enchanted the Minister. However, the slow progress of road construction by BRO disappointed him. After the area round, Shri Rijiju came back to Company HQ Gunji and had a lengthy interaction with Jawans. He was so pleased with the working of SSB personnel that he gave a cash reward of Rs. 20,000/- to all the men present there. ❑

-Report by : Shri Rajesh Thakur, Commandant 11th Bn Didihat

Shri Shyam Singh IG, Ranikhet Frontier presenting a memento of Om Parvat to Shri Rijiju

Sector Headquarters Bomdila, Arunachal Pradesh starts functioning

Shri Kiren Rijiju and DG SSB inaugurating SSB Sector Headquarters at Bomdila, Arunachal Pradesh

Union Minister of State for Home Affairs Shri Kiren Rijiju and Smt Archana Ramasundaram IPS, Director General Sashastra Seema Bal inaugurated Sector Headquarters at Padung, Bomdila,Arunachal Pradesh on February 19,2016 in a function organized at Bomdila. During the inaugural function Officers and other rank and file of SSB, Army, ITBP, CRPF and the district administration were present. Shri Rijiju expressed his hope that with this, it would strengthen the functioning of the force in the region. He credited the SSB for playing a vital role in creating the sense of patriotism in the hearts and minds of the people of the state in the distant past and as a compliment, he assured to facilitate early funding for other works.

Director General SSB in her address said that SSB is well known force in the State and people of Arunachal supported SSB in its earstwhile role and now they are extending their support and love to SSB in its new avatar. She said this Sector Hqrs will help us in operational functioning in the area.

Shri A K Negi, Inspector General SSB Guwahati Frontier conveyed thanks and gratitude to the dignitaries and guests present on the occasion. ❑

Smt Archana Ramasundaram DG SSB being given Traditional welcome by locals at Bomdila

Trying Hands on Bow & Arrow with locals Smt Archana Ramasundaram DG SSB and Minister of State for Home at Bomdila

MoS(Home) Shri Kiren Rijiju takes salute at SSB Assistant Commandants Passing Out Parade

Shri Kiren Rijiju, MoS(H) and DG SSB inspecting parade

On March19, 2016,Union Minister of State for Home Affairs Shri Kiren Rijiju accompanied by the Director General, SSB, Smt. Archana Ramasundaram took salute of newly graduated Assistant Commandants of SSB in a glittering passing out parade at SSB Academy Srinagar, Uttarakhand. On the occasion he said that guarding the country's open and porous borders is the most challenging assignment. Addressing the 19th Assistant Commandants Passing Out Parade, he further said the SSB personnel are ably handling this difficult task on the borders with Nepal and Bhutan by being vigilant and at the same time conducting themselves with peace and affection.

On the occasion Shri Rijiju also released a souvenir 'Alaknanda' and presented trophies and the sword of honour to the graduating cadets. He also inspected the Parade and took the salute of the marching contingent. Eighteen cadets were inducted into the force as Officers. Shri Ajeet Singh, Assistant Commandant (DE) received 'Sword of Honour' beside Best in Outdoor and Best Firer Trophies, Shri Aman Kumar Singh, Assistant Commandant (DE) got Best in Indoor subjects Trophy and Shri Suman Saurabh Assistant Commandant (LDCE) received Trophy of Overall best trainee among AC (LDCE).

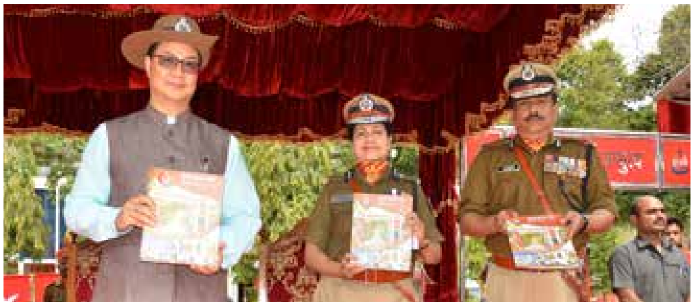

Minister of State for Home, DG SSB and Director SSB Academy releasing Souvenior "Alaknanda"

In this Passing out function parents of trainee officers, local prominent people, Officers and Staff of SSB and their family members were present. ❑

Shri Kiren Rijiju MoS(H) presenting Sword of Honour to Shri Ajeet Singh

Peeping Ceremony of Newly inducted officers

Group photoof Newly inducted officers with MoS(H), DG SSB and Officers of SSB Academy

Celebrating 50 years of Chronicling SSB Samachar

By virtue of being the longest serving Editor of the SSB News and SSB Samachar, K M Cariappa AD(I&D) has tried to trace the origin and journey of the magazine and the trying times through which SSB evolved and how the magazine contributed in achieving the objectives of the 'Scheme'.

K.M. Cariappa
Assistant Director (I&D)

Fifty years is a long time in the history of an organization. 'SSB News' which later on became 'SSB Samachar' has the rare distinction of chronicling the history of the organization for fifty long years relentlessly which indeed a significant accomplishment.

The SSB News was first published from behind the 'Iron Curtains' on 15th June 1966. The story of SSB News is as enigmatic as the organizations old role. SSB News first three consecutive volumes carried lead articles about Smt Indira Gandhi PM's visits to Frontier Administrative Officers Training College at Mahabaleshwar in Maharastra in May 1966, to Uttarakhand on 19th June 1966 and to Pithoragarh in Uttar Pradesh on 20th June 1966. Smt Indira Gandhi's visit along with Smt Sucheta Kripalini, Chief Minister of UP to a Refresher Training Course in a remote border village. The Prime Minister mile stoned SSBs pioneering effort to women empowerment and emancipation as early as 1966 by inaugurating the first ever Women Advance Training School at Pauri in Uttar Pradesh. The dignitaries also witnessed intriguing demos in tactics by hardcore (SSB personnel) and SSB volunteers including, evacuation of injured from precarious hill tops, marksmanship, first aid demos and the formidable prowess of the trained volunteers crossing the Alaknanda River with improvised boats and executing a cliffhanger raid.

Deputy Prime Minister, Shri Morarji Desai also visited SSB establishments in those days. The Defence, External Affairs and Home Ministers, Governors and CM's witnessed the indoctrination and national integration programmes in different frontier areas. These high level visits to our Village Level Training programmes [renamed as National Integration Programme (NIP)] are indicative of the high priority for nation building and for preparing the border population for exigencies.

SSB News - A Beacon for the 'Lone Ranger'

Before we begin digging and revisiting the SSB News the ground realities then needs to be understood. We cannot but, begin with a grand salute to the first generation of Officer's who treaded on unchartered paths and did ground breaking works in the treacherous icy mountain tops. The 'force' as such was new and was made of loosely knit Officers who not only came from different cadres, departments and professions. They also came from different states and their motivation and zeal was at different levels. The Orissa and Bihar Cadre Police, Uttar Pradesh Police, the Himachal Pradesh Police and Punjab Police, West Bengal Police, worked for a while and were looking homewards as they skeptical about the prospects of the scheme. They had all come from various central and state government organizations. They were direct entrants. Practically, unaware where and how to go about and start this humongous work of amalgamating the people on the border, sensitizing them about national security and also preparing them to counter enemy maneuvers. Stimulating patriotic fervor in the frontiersman and engaging them in nation building works with almost no sops. This indeed was an incredible task. Except, Shri B N Mullik and few others, most of the Officers who came from different organizations added to the confusion. The indomitable, Shri Mullik tirelessly travelled to remote border areas and ensured the scheme galvanized. As history has it SSB did not just make the grade but, also made historic impact

on national security and on the zest of the big neighbor.

After being indoctrinated, our Officers and personnel lived like recluses and most cases like forsaken sons (in the physical sense) of the nation. Many lived in isolation within the remote villages. They had to fend for themselves, innovate, and break new ground, all the time. They had to remain topical and relevant. They had to read a lot and the want of information was felt acutely. There were no newspapers reaching these people. There were no books to read (even borrow) and upgrade one's knowledge. Yet, they could not afford to be wrong. They could not also be working oblivious of the facts on security goals or perspective of the organization. In the nascent years, it was impossible for our personnel working and living in isolation to keep abreast with happenings, nationally and internationally. There were no magazine or newspaper stands there. They were working without the support of their seniors, counsel or guidance it was difficult to know even if they were right in whatever they were propagating or doing. There was no way to figure out if they were on course too. It would take weeks to write and receive letters. They did not have the luxury of devices to communicate or listen to news. In fact, they all lived beyond each other's reach and could not receive news from field units without tremendous efforts. All instructions were promptly burnt due to the unassailable orders to do so after reading it for their own and the organizations safety too. All had to be kept in the crevasses of one's brain. News came only by word of mouth at rendezvous point or on pieces of paper in the dead letter boxes. All that made only a trickle on parching earth.

The growing dearth of new ideas and continuity had to be infused, to ensure the domino effect in nation building continued, unhindered. Interestingly, in the old times, when the senior Officers travelled to the frontiers on inspection, old newspapers and books were carried for the personnel, which were delightfully accepted, as the finest gift. This was the only way they could connect to rest of the country. Think about it, we say we are away from our family. This generation of Officers were not only from their families but, were 'away from civilization' too without telephones, lifestyle, malls and even places to go to. They had to remain in the bandwagon without knowing their own bearing (geographically) for sure. Their esoteric skills to adapt kept them going. For them, the SSB News was like a beacon to a lone ranger. Unsure, yet, resolute about their goals they had to think on their feet.

The SSB News is also a preserve of the ground breaking sequences of decisions of that time. The unprecedented importance given to the field officers is unfathomable in present times. The then Director General (Security)'s 'Guidelines for Field Officers' distinctly spells out the phenomenal expectations and powers given to the Field Officers. It states 'You are bound by no rules, no conventions, you should not allow impediments to stand in your way or departmental activities', 'You are pioneers for a new movement and should not expect that everything will be laid on for you'. Further, he says, 'At the State Government level, you have to keep up your pleadings with Chief Minister, Chief Secretary, Secretaries of various departments … and get things done'. 'If you cannot do a particular thing it will be taken up at the Centre at the Secretary Level', '… if the State cannot help you with funds, we will provide it to you to do so.' 'You Are Special'. Finally, in a sagely manner he says 'Learn to be self effacing and be content to give without expecting anything in return, if you are to be effective'. Rightly, indeed even the Annual Divisional Organizers Conference was held in Vigyan Bhavan and the Prime Minister's graced the occasion and addressed the Officers. In 1964, there were mentions of active consideration of drafting members of even the members of the National Integration Council to address the people in the frontier areas during our village level programmes. But, somehow it did not happen.

The first mention of the 'Publicity Officer' is in the first SSB Commandants Conference in which Publicity Officers (deputationists from I&B Ministry) briefed the Commandants and Area Organizers about how to conduct political education and Special Publicity Campaigns, in 1966. Later, in the 1984, the concept of Major and Minor Publicity Campaigns were approved and guidelines were issued. The same is now called 'Samajik Chetana Abhiyan'. However, the eye opener for Publicity Officer appears in the SSB News Volume XIX in which the Cabinet Secretariats order dated 15th May 1976 depicts not just the revised pay scale of SSB Officers but, also positioned the Publicity Officer above the Area Organizer and Senior Instructor then.

The contents of the magazine were austerely selected from the overt role. The covert role was dealt in an implied manner and not spelt out in the columns.

Each of these issues had a lead article/ report on PM's, Governor's, CM's, Union and State Ministers visits, success stories of our crusade in bringing the frontiersman into the mainstream, training them, ground breaking works, the groundswell response to the nations call and other achievements, articles on happenings inside China, Tibet and in relation to China and Indian neighborhood, land and people in the frontier areas, etc.

Though the SSB News was started by the Publicity Officers, their names are not known as they too appear to have toed the line in SSB and respected Shri B N Mullik's words, who always said, 'Your work is your reward. Do not look for more'. They did a marvelous job through the nascent years of the magazine, around and during the 1971 War some even reported as if they were in one of the theatres of War. APOs, PO's and field Officers who had a sense of the pulse of the people regularly contributed to enrich the magazine. The issues are sprinkled with excellent insight articles which are pertinent even to this day.

In fact, the tenth anniversary issue released in 1973 is indeed a collector's copy and the finest issue in 50 years, as it is replete with the finest collection of articles mostly written by the first Director/ DG (S), Directors of SSB, the cream of Divisional Organizers and several other Officers depicting their decade long experience in SSB work. Specific details of the tremendous work done during the 'Great Bengal floods' in 1968, in which six of our personnel got the Jeevan Raksha Padaks, six Volunteers received Prime Ministers Life Saving Awards and 310 personnel got cash rewards and the Governor of West Bengal, profusely appreciated the grandiose work. That decade was the most eventful and delineates the incredible work done during the 1965 War and 1971 War. The issue encompasses all the stupendous achievements of the Force and of its full blown proof of its justification. By 1966 (in 3 yrs), one million Volunteers were trained, by 1975, 25 lakhs and by 1993, SSB trained a whopping 48 lakh Volunteers to defend the borders.

In fact, the magazine also traces the origin of all our path breaking works like Village Level Training, National Integration Programme, Study Tours, Medical Civic Action, Civic Action, and so on.

The magazine is also a treasure house of facts about Red China's belligerently unrefined conduct in the international forums and inside Tibet. Their blatant attempts to subvert our Army personnel stationed in Sikkim in 1967 to rebel against the Government of India through their radio programmes is also dealt with intrigue. SSB News dissected the rapid war like preparation going on inside the Tibetan frontier areas, the ruthlessness with which China dealt their civil population, the cascading prospects of the crouching Generals grabbing each other's throats in China as a consequence of the arrest of Mao's emissary, etc. The fortnightly also compared and drew similar consequences to the developments in China in Wuhan, 30 years ago (then) in Sian, China, where Chiang-kai-shek was arrested by one of his regional Generals and their ultimatum to India during the 1965 War with Pakistan.

When on a visit to a SSB Volunteer Training Camp, how a concerned Prime Minister, Shri Lal Bahadur Shastri alerted us about the confrontational approach taken by Pakistan and his advice to SSB to be prepared for a long struggle and be ready to take on additional responsibilities. Soon after, SSBs activities were extended to Manipur Valley and Tripura. Similarly, developments in Meghalaya compelled us to move to that state. In a way the SSB News is good reference book which has analyzed most of the major happenings within the country, in the South Asian region and in the international scenario concerning China and India. The subtle and the rapid changes happening on the international scene too were under its lens.

As SSB was preparing for a long haul, the magazine is virtually a goldmine with amazingly interesting articles that incisively scrutinized Guerilla Warfare in India and the world over. The scores of success stories of how the Vietcong guerillas literally turned all the forces of nature from the jungles like, bamboo-traps, its inhabitants, the elephants, buffaloes, snakes, hornets and red ants- against the enemy. How Maquis and the personnel of the Special Operations Executive of Britain kept the German occupation army in an atmosphere of tension, reducing its efficiency and wasting its manpower resources in the French Resistance Movement. And how the spread of resistance activity can cave the confidence of large armies and strengthen the people's determination to throw back the invaders.

These inputs helped our Officers to whip up patriotic fervor and also feel reassured that the grand scheme of Special Service Bureau was on the roll, in a roar. This explains how the indoctrination work continued at a feverish pitch in the Divisions. In fact they outsmarted each other in reaching higher and higher tallies in training the frontiersman. The initial fears about the viability of the scheme were soon replaced by gusto. In quick time, millions of frontiersmen were force multiplied to contribute to national security. Even the Toto community (going extinct) men and women who were shy and avoided contact with outside world too had come forward for training. In fact, in Jalpaiguri, a 125 year old man played a sterling role in enrolling village youngsters in advance for the VL training.

Change appeared to be the pass word for the organization. Just as the Organizations Ministry changed from the Ministry of Home Affairs to Ministry of External Affairs, Cabinet Secretariat and now back to Home Ministry, the motto 'Service, Security and Brotherhood' got distorted to 'Service, Sacrifice and Brotherhood'. So also the name of the House Magazine changed from SSB News to SSB Samachar, in early 1990's.

Even Smt Indira Gandhi, Prime Minister of India made use of the columns of SSB News to greet SSB personnel when the nation completed twenty years on 15th August 1967. She reached out to the readers and said 'Our (nations) thoughts are naturally more on the challenges which remain to be overcome than on the achievements of the last twenty years. This is a true sign that we are not complacent. She conveyed her "special good wishes to the personnel of Special Service Bureau who are propagating the message of self reliance in sensitive areas."

As seen through the columns several initiatives were taken by the deputationist Publicity Officers who were instrumental in bringing the talks from the Talks Division of AIR and rewrote them to suit SSBs requirement of talking points. They facilitated the Directorate of Audio Visual Publicity to display exhibition kits, the Song and Drama Division to depute cultural teams during our programmes. The S&DD initially began its innings with SSB by deputing a puppet party in our AOR in HP Division in 1966, to perform a play 'Nefa Ki Ek Sham' that highlighted the main aspects of guerilla warfare and also emphasized the need for the nation to unite and organize themselves for mass-resistance movement against the Chinese. About sixty shows were performed by this party, which resulted in a large number of people demanding weapon training for taking on their role. Even Officers in the Sutlej-Beas Authority came forward for rifle training too.

Apart from the umpteen rescue relief works conducted by SSB the SSB News also speaks about how the staff of Area Organizer, Tehri Garhwal contributed Rs. 93/- first and then contributed Rs. 57/- for the fund, regularly to the Prime Minister's Famine Relief Fund in the late 1960's. The Haflong Training Centre which seemed to have the first ever Family Welfare Centre in its nascent stages regularly contributed and encouraged the ITVs too to contribute to the PM Famine Relief Fund.

The space crunch here, restrains me from venturing into studying more than a decade of SSB. However, through this year, we intend to revisit the remaining decades, in the ensuing issues of the SSB Samachar. With the blessings of DG, SSB the Union Home Minister released the first e-book of SSB, 'Martyrs of SSB'. We propose to punctuate the occasion through the year and trigger off a revitalization of our ethos and roots by bringing out a series of e books, volumes of the 'Best articles of SSB News and Samachar' and more, for the reading pleasure and benefit of this generation of Officers and personnel. ❑

OPERATIONAL OVERVIEW

On the operational front, the overall achievement of SSB from 1st January 2015 to 30th November 2015 is praiseworthy. During the period, SSB seized Narcotics worth Rs. 49.78 crores, Fake Indian Currency of face value of Rs. 17.89 lakhs, Indian currency of Rs. 12.77 crores, contraband items worth Rs. 52.95 crores, Forest products worth Rs. 48.46 crores, Wildlife products seized amounting to Rs. 8.79 crores, cattles seized amounting to Rs. 9.70 crores.

Seizure/Arrests for the year 2015 (upto November 2015)

Sl. No.	Items	No. of cases	Qty. in Kgs.	Qty. in Nos.	Value (in lakh)	No. of Arrests
1.	Narcotics	154	3840.265	31200	4978.96	155
2.	FICN	14	0	0	17.89	19
3.	Indian Currency	26	0	0	127.79	19
4.	Other Currencies	23	0	0	107.32	20
5.	Prohibited Item/ Contraband	2802	0	0	5295.02	2220
6.	Forest Products	584	0	0	4846.34	408
7.	Wildlife products	53	0	0	879.80	40
8.	Cattles	888	0	8320	970.47	398
9.	Gold	6	1.284	0	32.35	6
10.	Silver	20	95.758	0	29.01	18
11.	Antiques Idols	5	87.809	0	3390.00	9
	Total	4575	4025.116	39520	20674.95	3312
1.	Factory Made Arms	22	0	42	0	40
2.	Country made Arms	70	0	120	0	117
	Total	92	0	162	0	157
1.	Ammunition Cartridge	2	0	2848	0	2
2.	Explosive	19	1029.470	194	0	13
1.	Maoists/Maoists Linkmen Arrests					117
2.	Militants/Terrorist					0
3.	NDFB Cadres/ Linkmen					41
4.	Illegal Infiltration (Foreigners)					13
5.	Other Criminals/ Anti-Social Elements					3401
	Total					3572

Antique Idols worth Rs. 33.90 crores, Gold worth Rs.32.35 lakhs, Silver worth Rs. 29.01 lakhs, Arms– Cartridges – 2848 and explosives 1029.470 Kgs. Besides this 3572 arrests were made including 117 Maoists, 41 Cadres/ suspected linkmen of NDFB (s) and 3401 other criminals/Anti Social Elements. ❑

Tokay Gecko' in Trouble
Smuggling on the Rise- Matter of Concern

Can you imagine a lizard that lives in the wilderness and weighs between a mere 150 to 400 gms is fetching a sum of Rs 15.00 to Rs 30.00 lakhs? In the changing patterns of crime in the frontier areas, this illegal trade is on the rise.

The Tokay Gecko (Gekko gecko) is a nocturnal Asian lizard and is easily identified by its orange-spotted, blue-grey skin and unmistakable calling sounds. The Tokay Gecko (gecko gecko) is one of the largest in the country and the World. The female lizard attains lengths of about 7-19 inches and the male grows up to 11-20 inches. They weigh 150-400 grams. They have been christened by the sounds they make 'to-kay' and can be heard from far. In West Bengal, the local name of the lizard is keko xaap. They are found in North East India, Nepal and Bangladesh. Other countries familiar with this reptile are, Southeast Asia, Philippines, Indonesia and Western New Guinea.

They are basically, tree dwellers living in the rainforests and are now adapting well to human habitations. They normally live up to 7-10 years under natural conditions. But, in captivity, the Tokays live for as long as 18 years. Increasing urbanization and increase in its trade in recent times is threatening the survival of the 'tokay gecko' seriously. Unfounded claims of it being a cure for AIDS is the cause. In India, depending up on its size and weight, it fetches a few lakhs. Poachers are raiding the forests as it is a lucrative trade. No census of the species has been carried out, says an expert. But, in the past six months, over 70 Tokay Geckos have been rescued by Police, Forest officials, Activists of the People For Animal (PFA) from various parts of West Bengal.

The lizards are being traded legally and illegally, for use in traditional Chinese medicine since they are believed to cure various maladies like diabetes, asthma, skin ailments and cancer. The Tokay Gecko is an ingredient in Traditional Chinese medicine known as Ge Jie and is high in demand. It is believed to invigorate kidney (yang energy) functioning, nourish the lungs, relieve cough and dyspnea. These beliefs are said to be substantiated by medical science. However, wildlife experts and environmentalists say there is no scientific proof to substantiate the purported medicinal properties of this reptile species. Nevertheless, the Tokay Gecko has become hot property and is in great demand in China, Hong Kong, Taiwan, Vietnam, Malaysia, Singapore and other parts of Asia with Chinese communities to such an extent that unscrupulous merchants have modified the monitor lizards with prosthetics to pass them off as colossal Tokay Gecko specimens. Forest dwellers and others have realized that selling a bunch of these can make one a millionaire overnight and are cashing in on the demand.

The International Union for Conservation of Nature (IUCN) has also not assessed the conservation status of the gecko, which is found in Bangladesh, India and Nepal. In the face of the increasing poaching, smuggling and illegal rearing of Tokay Geckos, the Wildlife Crime Control Bureau has urged the Union Ministry of Forest and Environment (MoEF) to include the reptile species in the endangered scheduled animals' list under the Protection of Wildlife Act, 1972. Incidentally, the Golden Gekco, which is reportedly found in some parts of south India, has been incorporated in Schedule I, a list of endangered wildlife animals of the Wildlife Act. ❑

Tokay's worth Rs 8.06 crores seized in two years by SSB

Sashastra Seema Bal has been making people conscious of this forest wealth along with the forest officials particularly, in the AOR of 10th Bn Malbazar, 17th Bn Falakata, 53rd Bn Simlabari, and 34th Bn Alipurduar. Commandant Behra says 17th Bn Falakata alone has seized 20 nos Tokay Gecko during the year 2014 & 2015 and handed over to the Wild Life Department to save them from the poachers. Most of these were poached from Jaldapara Forest Range and Moraghat Forest. The locals have taken to this trade to earn money through illegal trading of Tokay Geckos. The poachers sell these Tokay Geckos in Bhutan and Nepal, through local agents.

Since deployment of SSB along Indo-Bhutan border under Jalpaiguri Sector Headquarters four Battalions and one Area Office at Falakata have apprehended 23 persons trading or poaching. The total value of the 67 Tokay's seized was valued at Rs.8.06 crores till date. As a result Tokay smuggling has been restrained to an extent. But, it remains to be a matter of concern.

उग्रवाद को विकास से पछाड़ता सशस्त्र सीमा बल

सशस्त्र सीमा बल अपने ध्येय वाक्य सेवा, सुरक्षा और बन्धुत्व की अभिनव कार्यशैली से भारत–नेपाल व भारत–भूटान की सीमा पर सीमा प्रबन्धन के कार्य को नये आयाम देते हुये कुशलता से कर रहा है। बल जहाँ एक ओर देश की खुली व निर्वाध अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा में सीमावासियों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुये कार्य कर रहा है वहीं दूसरी ओर आन्तरिक सुरक्षा के क्षेत्र मे बल की तैनाती छत्तीसगढ़, झारखण्ड व बिहार के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की नई गाथा को जन्म दे रही है।

उग्रवाद को शस्त्र कौशल से रोकने के साथ–साथ एस. एस. बी. जनता के मध्य विकास का मन्त्र फूँक कर वामपंथी उग्रवाद को उसके मूल से ही पछाड़ने की कोशिश में लगातार प्रयासरत है। सन् 2014–15 में गृह मंन्त्रालय, भारत सरकार ने एस. एस. बी. को नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में "सिविक एक्शन प्रोग्राम" हेतु रू 24.00 लाख आवंटित किये, जिसको बल ने 44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर, 6वी वाहिनी जमुई, बिहार तथा 45वीं वाहिनी दुमका व 49वीं वाहिनी रांची, झारखण्ड को रू 6.00 लाख प्रत्येक वाहिनी को आवंटित किया। प्राप्त धन का उपयोग इन वाहिनियों ने इस नक्सल प्रभावित क्षेत्र मे विभिन्न विकास परक कार्यों पर करके क्षेत्र में विकास को उग्रवाद की विचारधारा के प्रत्युन्तर बना दिया। सशस्त्र सीमा बल ने निम्नलिखित विभिन्न कार्यों का निष्पादन कर क्षेत्र में नव–जागृति की लहर पैदा कर दी है।

1. नक्सल प्रभावित गाँवों के युवाओ का शैक्षणिक भ्रमण

44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर, बिहार ने नक्सल प्रभावित गाँवों सीतामढ़ी, जहानाबाद, गया, औरंगाबाद, श्योहर और मुजफ्फरपुर के 13–18 वर्ष के 18 युवाओं के एक दल को

सेनानायक 27 वीं वाहिनी शैक्षणिक सामग्री वितरण करते हुय

अहमदाबाद, वाराणसी, जयपुर तथा नई दिल्ली के 11 दिनों के शैक्षणिक भ्रमण पर 20 मार्च 2015 को रवाना किया। इस भ्रमण का उद्देश्य था कि युवाओं को देश की समग्रता और विकास से परिचय कराया जाये। इस प्रयास में बल सफल भी हुआ। इन युवाओं ने देश के विकास को नजदीक से समझा और उनके द्वारा क्षेत्र के युवाओं को सन्देश गया कि यदि सार्थक कार्यों की ओर अग्रसर होंगे तो उनके गाँव भी विकास की राह पर चलकर उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।

2. जमुई और मुंगेर, बिहार तथा दुमका, झारखण्ड के गाँवो में निशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन।

27 वीं वाहिनी के पशु चिकित्साधिकारी बिहार के नक्सल प्रभावित गॉव मे पशुओं की चिकित्सा करते हुये।

6वीं वाहिनी जमुई, बिहार ने चरपाथल कटूरिया, तराईया, खरगापुर, भेला तथा मुंगेर के बरखा और सारन गाँवों में निशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर ग्रामीणों के द्वार तक चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराई।

इसी प्रकार 45वीं वाहिनी दुमका, झारखण्ड ने चालीधार, दालाही, मोहनपुर, नारगंज, धरमपुर, अमराधोबा, सुलंगा गाँवों मे चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया। इन शिविरों में लगभग 995 मरीजों को चिकित्सा प्रदान की गयी तथा लगभग रू 2.00 लाख की दवायें वितरित की गयी।

3. 385 रेडियो और ट्राजिस्टरों को वितरण

सूचना क इस आधुनिक दौर में झारखण्ड के नक्सल प्रभावित गाँवों में जन–जन को जागरूक करने के उद्देश्य से 45वीं वाहिनी दुमका तथा 49वीं वाहिनी रांची ने तमारा, राहे, सटाकी, डोन्गली, जोहना गाँवो तथा गोड्डा जिले के बूकाराबाद, सन्देरी, डन्गापारा तथा पहाड़पुर गाँवों के 63ः आदिवासियों तथा 37ः अन्य को एक समारोह मे 385 रेडियो

राहे गाँव, रांची के ग्रामीणो को ट्रांजिस्टर बॉटते हुये 49 वीं वाहिनी के अधिकारी व जवान

49 वीं वाहिनी द्वारा रांची व दुमका के नक्सल प्रभावित गॉवों मे मच्छरदानियो का वितरण

(ट्राजिस्टरों) का वितरण किया ताकि उन्हे सरकार द्वारा प्रतिपादित व संचालित योजनाओं की जानकारी समय पर मिलती रहे साथ ही उनके ज्ञान व मनोरंजन में अभिवृद्धि हो।

इस वितरण समारोह में श्रीमती ललिता देवी, मुखिया और श्रीमती मंगल देवी मुखिया जो कि स्थानीय विद्यालयों की प्रधानाचार्या है ने गाँव वासियों के साथ भाग लिया।

4. गोड्डा, झारखण्ड व मुंगेर, बिहार में 739 कम्बलों का वितरण

ताइमुरा गॉव, रांची (झारखण्ड) के नक्सल प्रभावित गॉव में ग्रामीणों को कम्बल वितरण

जनता के दिल और दिमाग को जीतने की पहल करते हुये गरीबों में बल ने कम्बल वितरण कर जन–जन तक पहुँचने का कार्य किया है। क्षेत्र के 68: अति गरीब आदिवासियों तथा 32: अन्य को कम्बल वितरित कर उनकी अति आवश्यक जरूरत को पूरा करने की ओर प्रयास किया है। बल के इस प्रयास से जनता के मध्य सरकार की उनके प्रति संवेदनशीलता का संदेश प्रसारित होने में सहायता मिली है। 45वीं वाहिनी दुमका, 49वीं वाहिनी रांची, झारखण्ड तथा 6वीं वाहिनी जमुई ने 739 कम्बलों का वितरण अपने कार्यक्षेत्र के विभिन्न नक्सल प्रभावित गाँवों में कर बल की गरीबों के प्रति संवेदनशीलता का सन्देश दिया है।

5. रांची व दुमका के नक्सल प्रभावित गांवों में 450 मच्छरदानियों का वितरण

सशस्त्र सीमा बल की 49वीं वाहिनी रांची तथा 45वीं वाहिनी दुमका ने अपने तैनाती क्षेत्र के अति पिछड़े नक्सल प्रभावित गाँवों की पहचान कर ग्रामीणों को रू 1.45 लाख की 450 मच्छरदानियों का वितरण चालीधार, दालाही, मोहनपुर, नारगंज, धरमपुर, अमरांधोबा, सुलंगा, बीरिराजपुर, बूकराबाद, सन्देरी, डन्नापारा, व पहाड़पुर गाँवों के जरूरतमंदो को किया। इन मच्छर प्रभावित गाँवों मे मलेरिया के इतर मच्छरो से अन्य बीमारियो के संक्रमण से बचाव में भी सहायता मिली है।

6. विद्यालयों को 59 सेट फर्नीचर वितरित किये गये

6वीं वाहिनी जमुई, बिहार तथा 44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर ने अपने क्षेत्र के नक्सल प्रभावित गाँवों मे पाया कि वहां के कुछ विद्यालयों में नक्सलियों और पुलिस के

श्री विनोद नायक, उपमहानिरीक्षक भिलाई, नक्सल प्रभावित क्षेत्र के विद्यालय में फर्नीचर प्रदान करते हुये

आवागमन, मुठभेड़ इत्यादि अन्यान्य कारणों से विद्यालयों के फर्नीचर टूट–फूट गये है और बच्चों को जमीन पर बैठना पड़ता है।

इस कमी को दूर करने के लिये 6वीं वाहिनी ने 31 सेट डेस्क, बैन्च व कुर्सिया मिडिल स्कूल भेला, खरिया,

चरकापाथल और कन्या माध्य विद्यालय खैरा को प्रदान किये तथा 44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर ने उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय बलुआ और नव–सृजित प्राथमिक विद्यालय मुकन्दपुर, महुआ को 28 सेट फर्नीचर प्रदान कर बालकों के मध्य खुशी का संचार किया।

7. दुमका और रांची जिले के गाँवों मे 498 सोलर लालटेन का वितरण

21वीं वाहिनी द्वारा ग्रामीणों को सोलर लालटेन का वितरण

दुमका और रांची जिले के नक्सल प्रभावित गाँवों मे बिजली का प्रकाश गरीबों और आदिवासियों के लिये विलासिता की वस्तु के साथ ही दुर्लभ भी है। उनकी इस आवश्यकता को पहचान कर 45वीं वाहिनी दुमका तथा 49वीं वाहिनी रांची ने रू 2.90 लाख की 498 सोलर लालटेन का वितरण मेकक्लूस्कीगंज, डीन्वाटान्ड, मुण्डाथोली, माहवटान्ड, जोबिया, बचमारी, मनेरूतारी, मालाकटोली, तोनचनार, कनवारपतरा, लपरा, कोन्का, दुल्ली, चिन्तार, मायापुर ठतयादि रांची जिले के गाँव तथा चालीधार, दालाही, मोहनपुर, नारगंज, धरमपुर, अमराधोबा, सुलुन्गा इत्यादि दुमका जिले के गाँवो के निवासियों को किया गया।

जीवन मे प्रकाश की महत्ता का सन्देश इन सोलर लालटेन से इन गाँवो मे घर–घर तक पहुँच कर उनके जीवन को प्रकाशमान कर रहा है।

8. ग्रामीणो को वस्त्रों का वितरण

सशस्त्र सीमा बल की 45वीं वाहिनी ने झारखण्ड में दुमका व पाकूर जिले के तलझारी, सिगदेहरी, कन्डूकाता, बारगो, चन्दपारा, दारीकुरिया और साथिया गाँवों के गरीब ग्रामीणों को नित्य पहनने के रू 40,000/– के वस्त्र वितरित किये। नक्सल प्रभावित इन गाँवों में अनेकों ग्रामीण अति गरीबी में अपना जीवन यापन कर रहे है। एस. एस. बी. ने

49 वीं वाहिनी द्वारा डूंगरडीह, रांची (झारखण्ड) में बच्चों को स्कूल बैग और खेल सामग्री का वितरण

उनके जीवन को जीवनोपयोगी विभिन्न सामग्री प्रदान कर राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने को प्रयासरत है।

9. 205 गरीब छात्रों को पठन व खेल सामग्री का वितरण

गरीबी एक पीड़ादायक बीमारी है जो जीवन को दुरूह व कष्टदायक बना देती है। छात्र जो पठन समाग्री नहीं खरीद सकते उनका विद्यालय जाना भी निरर्थक हो जाता है और सर्वशिक्षा का उद्देश्य भी पूर्ण नहीं हो पाता। इस तथ्य को संज्ञान मे लेते हुये 49वीं वाहिनी रांची ने रू 1.00 लाख मूल्य की सामग्री का वितरण राजकीय मध्य विद्यालय, डोन्गीडीह, राजकीय प्राथमिक विद्यालय चिपीबन्धडीह और लुन्गुथू हाई स्कूल के 205 गरीब छात्रो के मध्य किया। एस. एस. बी. के इस प्रयास से बल की छवि का विस्तार तथा बल का जनता से संवाद सुदृढ हुआ है।

10. खेल सामग्री का वितरण

नक्सल प्रभावित गाँवो के युवाओं को सार्थक दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से 6वीं वाहिनी जमुई तथा 44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर बिहार ने इन जिलों के बेहद पिछड़े विद्यालयों मे खेल सामग्री का वितरण किया। जिससे युवाओं मे खेलों के प्रति आकर्षण हो और वे गलत दिशा मे न भटकें। मिडिल स्कूल, भेला, खरिया और चरकापाथल मुजफ्फरपुर जिले में व उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, बलुआ और नवसृजित प्राथमिक विद्यालय मुकुन्दपुर महुआ, जमुई जिले के विद्यालय के छात्र इस खेल सामग्री से लाभान्वित हुये।

इसके इतर बल ने अपनी एस. आर. ई. योजना के तहत सन् 2014–15 में "सिविक एक्शन कार्यक्रम" हेतु रू 24.00 लाख विभिन्न वाहिनियों की आबंटित किये, ये कार्यक्रम भी नक्सल प्रभावित क्षेत्रो में किये गये, जिसमें

18 वीं वाहिनी बीरपुर (बिहार) द्वारा नक्सल प्रभावित गॉव में दिव्यांगों को साइकिल भेंट

21 वीं वाहिनी द्वारा सिलाई मशीन का वितरण

प्रत्येक वाहिनी को रू 3.00 लाख प्रदान किये गये, एस. एस. बी. की बिहार व झारखण्ड स्थित 13वीं वाहिनी पीपराकोटी, 20वीं वाहिनी सीतामढ़ी–I, 21वीं वाहिनी बाघा, 27वीं वाहिनी नरकटियागंज, 44वीं वाहिनी मुजफ्फरपुर, 51वीं वाहिनी सीतामढ़ी–II 45वीं वाहिनी दुमका, और 49वीं वाहिनी रांची ने विभिन्न आधारभूत संरचनाओ के निर्माण तथा पिछड़े ग्रामीणो के जीवन को खुशहाल बनाने मे सहयोग दिया है जिनमे कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं–

1. पश्चिमी चम्पारण के छह गाँवों में रू 1.50 लाख मूल्य से सौर ऊर्जा चालित प्रकाश व्यवस्था करना।

2. रू 1.80 लाख मूल्य की लागत से पश्चिमी चम्पारण तथा सीतामढ़ी के सूदूर गाँवों मे नौ हेण्डपम्पों की स्थापना।

3. वेस्ट चम्पारण, सीतामढ़ी व रांची के सूदूर नक्सल प्रभावित गाँवों के ग्रामीणों के मध्य 196 सौर ऊर्जा चालित लालटेन का वितरण।

वेस्ट चम्पारण के भैरिहवा गॉव में 27 वीं वाहिनी द्वारा सोलर लाइट की स्थापना

4. वेस्ट चम्पारण की ग्रामीण महिलाओं को 12 सिलाई मशीन वितरित कर उन्हे आर्थिक सबलता की ओर अग्रसर करना।

5. रांची जिले के नक्सल प्रभावित गाँवों के ग्रामीणों के मध्य 129 रेडियों वितरित कर उन्हे सूचना के माध्यम से मुख्यधारा की ओर प्रेरित करना।

6. सीतामढ़ी और रांची जिले के गाँवो मे अपंगो को 15 व्हील चेयर का वितरण कर सहारा प्रदान करना।

7. सीतामढ़ी और रांची के पिछड़े व नक्सल प्रभावित गाँवों मे 380 मच्छरदानियों का वितरण।

8. सीतामढ़ी और पश्चिमी चम्पारण के ग्रामीण विद्यालयों में खेल सामग्री का वितरण।

9. पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण के नक्सल प्रभावित गाँवों मे निशुल्क मानव व पशु चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर ग्रामीणो और उनके पशुओं को चिकित्सा सेवायें प्रदान करना।

सीमा की सुरक्षा के साथ–साथ नक्सल प्रतिरोधी कार्यों में तैनात बल की वाहिनियाँ वामपन्थी उग्रवाद से शस्त्र कौशल के साथ–साथ जनता को जागरूक कर विकास की ओर अग्रसर कर रही है। सशस्त्र सीमा बल के जवान क्षेत्र के पिछड़े और नक्सल प्रभावित ग्रामीण जनों के साथ संवाद को सुदृढ कर उग्रवाद व असन्तोष की विचारधारा को नष्ट करने के सफल प्रयास में संलग्न है। इस अनोखे अभियान से एस. एस. बी. उग्रवाद को पछाड़ने में सफल होता दिख रहा है। एस. एस. बी. की इस लड़ाई में स्थानीय जनता का व्यापक समर्थन भविष्य में नई आशा का संचार कर रहा है। ❑

रिपोर्ट–जी.डी.सकलानी, सहायक प्रचार अधिकारी, बल मुख्यालय

SSBs stops Cannabis Cultivation in Kalaktang Sub Division

An Effective Civic Action and Perception Management Programme

Shri Sudhanshuu Nautiyal Staff Officer, Guwahati Frontier reports an interesting success story of how his Battalion conducted Civic Action Programmes and Perception Management programmes to discourage people in their AOR to shun the consumption and growing Cannabis in their neighbourhood.

Kalaktang Sub Division of West Kameng District in Arunachal Pradesh adjoins Udalguri District in Assam. This made West Kameng vulnerable as the NDFB(S) menacing posturing in Udalguri was obviously impacting peace and harmony in that district. In May 2012, 30th Bn Dirang set out on LRP for 22 days. Conspicuous throughout the area, cannabis were growing in the wilderness by design. It was grown within maize fields. The locals of border villages of Kalaktang are known to have traditional relations with Bodos of adjoining Assam. We surmised that NDFB(S), NDFB(R) and NDFB (P) cadres were possibly, exploiting the cannabis for generating income for sustaining their activities. However, these villagers were unaware or innocent about the resultant impact on the youth and their society. Invariably, this would boomerang on their society by jeopardizing the future generations of youth in the region. We further corroborated this with 61st Bn of SSB in Bhairabkunda, Udalguri District in Assam. They indeed had made several seizures of cannabis in adjacent Balemu area. Obviously, a clear pattern was evolving. Seizures in the region too had shown steady increase, under Kalaktang Sub-division too.

The villages like R/Pam, Dengzi, Liphakphu, Brokpalinchin and Warrampam were mapped/ identified as vulnerable population, on the basis of the Cannabis grown there. A report with the gravity was communicated to the Headquarters and was discussed with DIG, SHQ Tezpur and IG at Guwahati FTR HQRs. To counter the imminent danger a proposals were mooted by 30th Bn Dirang, SSB to conduct Perception Management and Civic Action Programmes, on priority in Kalaktang Sub Division.

Accordingly, sustained Civic Action programmes (CAP) and Perception Management (PM) Programmes were conducted throughout 2013 and 2014. Along with awareness programmes spelling out the ill effects of narcotic drugs, quality seeds of cash crop like, tomato were distributed. Together, in an orchestrated manner, Commandant 30th Bn Dirang and Area Organiser, Bomdila conducted campaigns to get the villagers to willingly destroy the cannabis cultivated in and around the villages. The local administration, political leaders, Gaon Burhas and villagers help was enlisted in the campaign. Senior Officers like, ADC Kalaktang and NCB Officers, who addressed the gatherings, were taken by the Commandant, 30th Bn to remotely located mapped areas. After that they also made efforts to draw sanity into the minds of villagers in general and youths in particular, against the ill effects and were able to create a psychological stimulus. During the month of Sep 2014, Commandant, 30th Bn Dirang planned and led the Joint Cannabis Destruction Operation and destroyed wild growth of cannabis across, 37 acres. The same was widely appreciated in the media by the district authorities, general public and the media too.

In March 2015, during a Samajik Chetna Abhiyan conducted in Kalaktang, the Hon'ble Deputy Speaker of Arunachal Pradesh Assembly and the local MLA, Shri T Norbu and other dignitaries appreciated SSB's efforts and emphasised that drugs are dangerous and they not only destroy intelligent individuals and families, but, destroy societies too. Hon'ble Deputy Speaker also assured the villagers that he would take up the issue for further formulating schemes for alternative commercial cash crops at the right forum. In order to thank the people for the cooperation and to create a the sobering effect, the Guwahati Frontier JAZ band performed at the end of the programme.

In August 2015, it was heartening to see tomato cultivation in neatly made beds growing all along the road where there used to grow wild cannabis for last few years. ❑

Historic Background on Disputed Area Belt in Golaghat

A brief history of the DAB between the States of Nagaland and Assam is brought forward for better understanding of the gamut of issues that fraught this area for the last five decades.

For the administrative reasons, the British combined some parts of Naga Hills and a District of Assam and demarcated the border of Nagaland, in 1925. After the formation of Nagaland, the Central Government declared the 1925 border, as final. But, the Nagaland State Government did not agree to the pre-independence border. However, after the Indian Independence in 1947, the area presently constituting, the State of Nagaland was a part of the Province of Assam. The secessionist activities started raising their heads amongst a section of the Nagas. In 1957, an agreement was reached between the Naga leaders and the Indian Government which resulted in creating a single separate region of the Naga Hills.

After elections in January 1964, the first democratically elected Nagaland Legislative Assembly was constituted on 11th February, 1964. The rebel activities continued in the form of banditry and attacks. These were motivated more by tribal rivalry and personal vendetta than by political aspiration. Cease-fire was announced and negotiations continued, but, this did little to stop the violence. The area lining the border has been a conflict zone between two States.

Government of Assam claims a constitutional jurisdiction over the area while Government of Nagaland claims a historical stake over the area where the Naga population is higher in density. Age old ethnic rivalry in this North-Eastern part of the country has been a cause for human bloodshed and arson, from time to time.

The Assamese and Naga people are living in the Disputed Area Belt since, 1970s. Yet, the Naga people initially cleared the forest for some rudimentary cultivation. On arrival of Adivasis, the Nagas started giving this land to Adivasis on crop sharing basis. The dispute between Naga and Adivasis is rooted in the proportion of share between the two communities. Obstructive participation of Naga militants may not be ruled out. The border dispute over the disputed Assam-Nagaland border belt is called the Disputed Area Belt (DAB) between the two States is awaiting a solution from the Supreme Court after Assam filed a petition in 1988, seeking a settlement. The Assam Government wants no change in the current border demarcation But,

SSB cuts ice in Disputed Area Belt in Golaghat

After the violence in Sector B of Disputed Area Belt in August, 2014 in which 14 people were killed and about 250 houses were burnt, nine Coys of SSB were inducted in the trouble-torn Sector-B of DAB, replacing CRPF which was deployed in accordance with the order of MHA. Accordingly, six SSB Coys were deployed from 21st August 2014. Three more SSB Coys were deployed from 22nd August 2014. These nine Coys of SSB continue to be deployed in the DAB Golaghat.

As the tension started mounting once again in December, 2014 Shri B D Sharma, IPS, Director General, SSB visited the DAB on 12th Jan 2015 and held a meeting with the Chief Secretary and the Director General of the Police, Nagaland on the operational and administrative issues pertaining to the Disputed Area Belt where SSB is deployed since August, 2014. A second meeting was also held at Guwahati on 13th January 2015 which was attended by Director General, SSB along with the Chief Secretary, Senior Police and State Administration Officers of the Government of Assam.

As a Neutral Force, SSB Coys in the DAB of Golaghat have accomplished the assigned task of rehabilitation and resettlement of all the displaced families and inmates through vigorous enforcement of decision taken in consultation with State Government of Assam and Nagaland.

After the violence, in the DAB Golaghat, a total of 245 families (1102 persons) were displaced and were living in Relief Camps. All these families have now been resettled in the DAB and elsewhere.

The presence of SSB in Disputed Area Belt has surely curbed activities, which were detrimental and threatened the overall security, peace and tranquility in the area.

Nagaland refuses to accept the same and instead wants to follow the historical boundary which was demarcated during the colonial rule.

The disputed areas between Assam and Nagaland have four divisions. Sector A, B, C and D, respectively.

➢ **Sector A:**

It is 131.12 square miles in area and spreads from Tiyok River at Arunachal-Nagaland border to Taokak River to Jazi River and the Southern part of Laahdoigarh.

➢ **Sector B:**

This is 586 square miles from Jazi River to Ghaboru Hills and from Ghaboru Hills to Dichoy River and Nagabaar or Nogabandha. Again from Dichoy River via Kakdong, Mukund and Ghiladari upto the conjuction of Doyong and Dhansiri River in the West.

➢ **Sector C:**

The total area is about 2825.76 square miles. This starts from the junction of Doyong and Dhansiri River to Thuramukh Block near Dhansiri. The East block of Kachar Hills, and the neighboring area of Lumding are also in this Sector. The entire Naambor Reserve Forest, Eastern part of Karbianglong and Dhansari Subdivision are also part of this Sector.

➢ **Sector D:**

Spreads over 285.76 square miles. The whole of North Kachar Hill district comes under this Sector.

Since 1979, the disputed Assam-Nagaland border belt has been under the Union Home Ministry. To maintain the status quo, Central Armed Forces patrol the area. Till the recent spurt of violence on 12th August 2014, the area was guarded by CRPF. ❑

देश की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान कर अमर हो गये संजीत कुमार

सशस्त्र सीमा बल की 18वीं वाहिनी में कार्यरत आरक्षी श्री संजीव कुमार, वामपंथी उग्रवादियों से झारखण्ड के सुन्दर पहाड़ी क्षेत्र में लोहा लेते हुऐ अपने प्राणो का उत्सर्ग कर अमर हो गये। 27 वर्ष के युवा संजीव कुमार सन् 2011 में सशस्त्र सीमा बल में नियुक्त हुये। प्रशिक्षण केन्द्र गोरखपुर से सन् 2012 में उन्होने अपना प्रशिक्षण पूर्ण किया इसके बाद वे 18वीं एस. एस. बी. वाहिनी मे पदस्थापित हुये।

अगस्त, 2015 में उनकी वाहिनी को नक्सल प्रभावित क्षेत्र दुमका, झारखण्ड में एन्टी–नक्सल आपरेशन में तैनात किया गया। आरक्षी संजीव कुमार ने विभिन्न आपरेशन, पेट्रोलिंग तथा इलाका प्रभुत्व कार्यवाही में सफलता पूर्वक भाग लिया। वे पूर्ण प्रशिक्षित व कुशल सैनिक थे, जिन्होंने हमेशा अपने कर्तव्य को अपने प्राणो से ज्यादा महत्व दिया।

10 अक्तूबर, 2015 की सुबह 5.15 बजे 18वीं वाहिनी की 'ए' कम्पनी डामरू के 40 सदस्य निरीक्षक श्यामलाल के नेतृत्व में झारखण्ड पुलिस के सात सदस्यों के साथ पकडीकुड़डा, डांगपारा और काथलाडीह क्षेत्र मे पैदल पैट्रोलिंग पर अपने हथियारों से लैस हो कर निकले। चूँकि यह क्षेत्र नक्सल प्रभावित है इसलिए जवानों का दस्ता पूरी चौकसी के साथ जैसे ही काथलाडीह गाँव के पास पहुँचा, कुछ संदिग्ध गतिविधियां महसूस होते ही उन्होंने पोजिशन ले ली और धीर–धीरे गाँव की ओर बढने लगे, 12–13 घरों के गाँव की ओर जैसे ही एस. एस. बी. का दस्ता बढ रहा था कि तभी दूसरी तरफ से गोलियों की बौछार शुरू हो गयी। तुरन्त ही त्वरित कार्यवाही करते हुये एस. एस. बी. जवानों ने भी उनका जवाब देना शुरू कर दिया। लगभग पौने दो घण्टे की लगातार फायरिग में नक्सलियों की एक गोली आरक्षी संजीत कुमार के सीने में बाँई ओर उनकी बुलेट प्रूफ जैकेट के ठीक ऊपर गोली लगी। और वे इस तरह उग्रवादियों से लडते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

आरक्षी संजीत कुमार अपने पीछे माता–पिता, बहन भाई तथा अपनी नवविवाहिता पत्नी छोड़ गये। इसी वर्ष फरवरी में उनका विवाह हुआ था। वे जम्मू–कश्मीर राज्य के कठुवा गाँव के रहने वाले थे। जब उनका पार्थिव शरीर उनके गॉव पहुँचा पूरा गाँव शोक संतप्त था। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

सशस्त्र सीमा बल को अपने जांबाज सैनिक संजीत पर गर्व है। उनकी वीरता की गाथा बल के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होगी। सम्पूर्ण बल के सदस्य अपने इस वीर सेनानी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ❑

Homage To Shri Rajesh Shivrain…

Sashastra Seema Bal lost its brilliant, bright and brave officer Shri Rajesh Shivrain, 2nd –In-Command on December 22, 2015 in an air crash. A Delhi –Ranchi bound flight of BSF in which he was Co-Pilot met an air accident near IGI Airport , New Delhi immediate after take-off and crashed. He alongwith Pilot, Crew members and nine personnel who were flying to Ranchi on official duty lost their life.

Shri Rajesh Shivrain Joined SSB as direct entry Assistant Commandant in 21st Battalion on 26.12.2002. He pursued his education and done MBA. He was trained Pilot. Resident of village Barwas, Tehsil Loharu , District Bhiwani, Haryana, he was born on 17th October 1977 in the family of Shri Duli Chand Shivrain and mother Smt. Sukhma Devi.

He was trained Pilot of SSB and working in BSF Air Wing on attachment since 23rd January, 2009. He has left behind his wife, a five year old daughter and ten years old Son.

The mortal remains of the Sashastra Seema Bal (SSB) Pilot Rajesh Shivrain was brought to the SSB Force Headquarter on 23 December 2015 in the morning at 1130 hrs. from AIIMS. The wreath laying Ceremony was held by lowering the Gun and maintaining silence. Shri B.D. Sharma, Director General SSB, Shri Surjeet Singh Deswal, Additional Director General, Senior Officers and personnel laid the wreath and paid floral tribute to Shri Rajesh Shivrain.

Sashastra Seema Bal deeply mourns the sudden demise of Shri Rajesh Shivrain in the air crash. ❑

IG Siliguri wins the first ever honour in an Equestrian Event for SSB

Shri Kuldiep Singh, IPS, IG, Siliguri Frontier won the first ever prize in the Equestrian Event for SSB in the Open Hacks Event. He won the Gold in the 34th All India Police Equestrian Championship and Mounted Police Duty Meet held from 15th to 25th Nov 2015, at the Border Security Force Academy, Tekanpur.

Shri Kuldiep Singh, IG SSB with his wining Horse

SSB Samachar examined the regulations to understand the importance of this victory. As it turned out, the Open Hacks is a complex event by itself as the marks are awarded for the manner, performance and confirmation of the horse combined with turnout and performance of the rider. At this juncture, it would be appropriate to state that Shri Kuldiep Singh was competing with a borrowed horse (for the Championship), which added up to the complexity. Nevertheless, he pulled together the cooperation of the horse. With conditions like, only double bit bridle or Pelham with double reins being allowed, saddle cloth, martingales and bandages not being permitted, the event becomes nail biting. The movements of the horse are to be obtained with imperceptible aids and without apparent effort of the rider. The 120 marks contest include, the Dress of the rider, Tack/ Conformity and general appearance of the horse, Walk, Trot, Extended Trot, Canter, Change of leg, Halt, Rein Back, General marks for the seat/aids of the rider and General Impression

Shri Kuldiep Singh IG SSB on victory stand

All through this complex drill the rider should remain well-balanced, elastic, sitting deep in the centre of the saddle, smoothly absorbing the movement of the horse. The heels need to be pointed down and the upper part of the body should be tall and supple. The hands should be carried steadily close together, with the thumb as the highest point and a straight line from the supple elbow through the hand to the horse's mouth. The elbows should be close to the body. A look at the rules of the movements of the horse will show how tremendous the expectations on the horse are. Through very subtle movements, the rider gets the horse to precisely fulfill the required movements of the tests. All through the rider must give an impression of a harmonious co-operation between horse and rider. Even the use of the voice or clicking the tongue repeatedly is a serious fault. Hence, this indeed is a significant achievement for SSB. ❑

Shri Kuldiep Singh, IG presenting winner Trophy to DG, SSB

Nine SSB Personnel Awarded Police Medals on the eve of 69th Independence Day

On the eve of 69th Independence Day His Excellency President of India Sh. Pranab Mukherjee has conferred President Police Medal for distinguished service to Sh. Aditya Misra, Inspector General, Sashastra Seema Bal, Force Hqrs New Delhi His Excellency the President of India has also conferred Police Medal for Meritorious Service to Sh. S.S. Thakur, DIG, SSB, Purnea Sector, Sh. Bhupal Singh Rawat, Area Organiser, CTC, Salonibari, Sh. Attar Singh Panwar, Area Organiser, SSB, Pithoragarh, Sh. Pitambar Singh Dangwal, Executive Engineer, SSB Ranikhet frontier, Sh. Binoy Krishna Sarkar, Asstt. Comdt. (GD), SSB Ranidanga, Smt. Usha Sajwan, Sub Area Organiser, SSB Force Hqrs., Sh. Harish Chandra Singh Brijwal, Field Officer (Telecom), SSB Ranikhet frontier, Smt. Kalyani Brahma, Deputy Field Officer, SSB, Sector Hqr Kokrajhar. ❑

Shri Aditya Misra
Inspector General

Shri S.S.Thakur
Dy. Inspector General

Shri Bhupal Singh Rawat
Area Organiser

Shri Atar Singh Panwar
Area Organiser

Shri Pitambar Singh Dangwal
Area Organiser

Shri Binay Krishna Sarkar
Assistant Commandant

Smt. Usha Sajwan
Sub Area Organiser

Shri HC Singh Brijwal
Field Officer(Telecom)

Smt. Kalyani Brahma
Deputy Field Officer

राहत एवं बचाव अभियान - मणिकर्ण गुरूद्वारा कुल्लु में एस.एस.बी. जवानों ने संभाला राहत कार्य

मंगलवार 18 अगस्त 2015 दोपहर लगभग 1400 बजे प्रसिद्ध धार्मिक स्थल मणिकर्ण गुरूद्वारा परिसर की सराय में जोरदार धमाके के साथ ही अफरा तफरी का माहौल पैदा हो गया, इससे पहले कि लोग कुछ समझ पाते गुरूद्वारा की सराय के 11 कमरे ध्वस्त हो चुके थे। पता चला कि भूस्खलन के कारण पहाड़ी से एक चट्टान, सराय पर आ गिरी थी कई लोग नीचे दब चुके थे। उपायुक्त जिला कुल्लु (हि.प्र.) ने 1415 बजे टेलीफोन द्वारा इस दुर्घटना की जानकारी प्रशिक्षण केन्द्र 67 वी. वाहिनी शमशी को दी। घटना स्थल से 40 कि.मी. दूर स्थित एस.एस.बी. प्रशिक्षण केन्द्र शमशी के अधिकारी व 100 जवान, सेनानायक संजीव यादव के नेतृत्व में बचाव कार्य से सम्बन्धित उपकरण जैसे रेपलिंग रोप, लाइफ जैकेट, कैराबाइनर, बाइनोक्यूलर, प्रोडर, नाइट विजन डिवाइस, ड्रेगन लाईट, ट्यूब, गैंती, हैमर, फावड़ा, बेलचा तथा एम्बूलेन्स के साथ 1430 बजे घटना स्थल की ओर रवाना हुये, करीब 1515 बजे दुर्घटना स्थल पर पहुॅंचते ही यह दल बचाव कार्य में जुट पड़ा। पहाड़ी से भूस्खलन का खतरा लगातार बना हुआ था और जो चट्टान पहाड़ी से सराय पर गिरी थी वो भी पार्वती नदी में जा गिरी थी, ऐसे में आशंका जताई जा रही थी कि कुछ लोग चट्टान के साथ उफनती पार्वती नदी में बह गये हों। वहीं पहाड़ी से चट्टान गिरने की आशंका बनी हुयी थी। इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बल के जवान राहत व बचाव कार्य में जुटे रहे।

मलबा हटाते हुए बल कर्मी

घटनास्थल पर सर्वप्रथम पहुँचकर दल ने 8 मृत पाये गये श्रद्धालुओ के शव तथा 11 घायलों को क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लु भेजा। स्थानीय प्रशासन व पुलिस बल भी मौके पर पहुचकर सहायता कार्य में जुट गया।

सशस्त्र सीमा बल के जवान देर तक राहत व बचाव कार्यो में जुटे रहे तथा श्रद्धालुओं को प्रशासन की सहायता से सुरक्षित स्थान पर भेजते रहे।

बल द्वारा किये गये त्वरित राहत व बचाव कार्य राज्य प्रशासन तथा आम जनता ने सराहा। ❑

राहत कार्य प्रगति पर

राहत व बचाव कार्य नेतृत्व करते उच्च अधिकारी

SSB personnel hone their skills at Birla Academy of Art and Culture

Sh. Kuldip Singh, IPS, IG Frontier Siliguri inspecting the paintings of SSB/BSF participants at Birla Academy of Art and Culture, Kolkata

Shri B D Sharma IPS DG, SSB noticed that there were quite a few talented youngsters in the Force with inherent talent for painting. Some had difficulty in getting the form right, some had difficulty with size, shape and form. Nevertheless, they were patronized and their works were displayed in the Office chambers, Officer Mess, corridors, etc.

Shri B D Sharma DG, SSB decided to sharpen the skills of these aspiring painters in SSB from various frontiers and sent them for a specialized training. DG assigned the task again to Shri Kuldiep Singh, IG Siliguri Frontier.

No less than the premier Birla Academy of Art and Culture in Kolkata was approached and ten SSB personnel, who were neophyte were selected and put to training for a week long intensive Workshop from 16-21 June 2015. They learnt the high end uses of tools, understood the finer aspects of colours, learnt how to breathe life into the brush strokes, mix colours, create effects, shades, shine, dimensions, abstract work, etc.

Along with the SSB personnel ten more BSF personnel were also involved in the course to bring in wider exposure to our participants. Under the supervision and guidance of very senior artists of Birla Academy the budding artists found their flaws, fine tuned them,

enriched their methodology and gleefully painted some excellent work to acknowledge the excellent opportunity given to them.

Shri Kuldiep Singh IG, Siliguri Frontier was pleasantly surprised to see the finesse in their painting when he attended the Valedictory Function as Chief Guest. While addressing the participants he said, 'Research has proved that hobbies have a calming effect on the brain and so relieve stress from the system.' He insisted that each one of them must go back and teach at least three of their colleagues both in BSF and SSB. The teaching staffs too were all praises for the SSB personnel who put up their best by conspicuously refining their skill. Seeing, Indeed! is believing. ❑

A team of SSB personnel participated in the workshop by Birla Academy of Art and Culture, Kolkata

संदीक्षा मेला बना विविधता मे एकता का मिलन-पर्व

सशस्त्र सीमा बल वाईव्ज वेलफेयर एसोशिएसन (संदीक्षा) द्वारा 09 अक्तूबर, 2015 से 11 अक्तूबर, 2015 तक सेन्ट्रल पार्क, सेक्टर–12, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली में आयोजित तीन दिवसीय 'संदीक्षा मेला' देश भर मे बिखरे एस. एस. बी. कर्मियों एवं उनके परिवारजनों का मिलन–पर्व बन गया। इस तीन दिवसीय मेले में देश के विभिन्न हिस्सों में स्थित इकाइयों से आए कर्मियों ने स्थानीय उत्पादों, स्थानीय खानपान एवं स्थानीय संस्कृति का दिग्दर्शन आम जनता को करा कर भारत की विराट विविधता में अर्न्तनिहित एकता को प्रदर्शित कर दिखाया।

श्रीमति अनिता गोयल दीप प्रज्जवलित कर संदीक्षा मेले का शुभारम्भ करते हुये।

09 अक्तूबर, 2015 के दिन आयोजित एक भव्य एवं रंगारंग समारोह में संदीक्षा मेले का उद्घाटन श्रीमती अनिता गोयल ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्रीमती गोयल ने कहा कि सशस्त्र सीमा बल वाईव्ज वेलफेयर एसोशिसन (संदीक्षा) बल कर्मियों एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों एवं हस्तशिल्पियों के कल्याण एवं उत्थान के लिए बेहतरीन तरीके से कार्य कर रही है। संदीक्षा की समस्त गतिविधियां अत्यंत सराहनीय हैं। संदीक्षा अपने कार्यों से सीमा क्षेत्र के हस्तशिल्पियों के कार्य को गरिमा एवं मान प्रदान करने का कार्य कर रही है जो हमारे पारम्परिक कला–रूपों के विकास में सहायक होगा। विलुप्ति के कगार पर खड़े पारम्परिक हस्तशिल्प एवं लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के क्षेत्र में संदीक्षा के कार्य मील के पत्थर साबित होगें।

मेले में मुख्य अतिथि के प्रति स्वागत भाषण करते हुए श्रीमती किरण शर्मा, अध्यक्षा, संदीक्षा ने कहा कि संदीक्षा बल के पूरे कार्यक्षेत्र में बलकर्मियों एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों के लिए विभिन्न प्रकार की विकास परक एवं कल्याण गतिविधियों का आयोजन करने के साथ–साथ भारत सरकार की विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाओं को पूर्ण सफलता दिलाने के लिए भी प्रयास कर रही है। संदीक्षा ने भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा क्षेत्र के 'क्लेफ्ट लिप' एवं 'क्लेफ्ट पैलेट' की शारीरिक विकृति से पीड़ित बच्चों के निःशुल्क ऑपरेशन की व्यवस्था करायी है। इसके साथ ही संदीक्षा सीमा क्षेत्र में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जोरदार अभियान चला रही है। संदीक्षा सीमा क्षेत्र के विद्यालयों को गोद लेकर वहां बालिकाओं के लिए शौचालय का भी निर्माण संदीक्षा करा रही है।

एस. एस. बी. वाईव्ज वेलफेयर एसोशिसन (संदीक्षा) के कल्याण मेले के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि, समस्त आगत अतिथियों एवं मीडिया प्रतिनिधियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संदीक्षा केन्द्रीय समिति की सचिव श्रीमती प्रणीता झा ने कहा कि आप सबने संदीक्षा मेले के उद्घाटन समारोह में पधारकर हमारा हौसला बढ़ाया है। हम आप सबके प्रति हृदय से आभार प्रकट करते हैं। साथ ही हमारा यह ध्येय है कि हम बलकर्मियों एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों के कल्याण एवं विकास के लिए अनवरत कार्य करते रहें।

तीन दिवसीय 'संदीक्षा मेला' में आम जनता का प्रवेश निःशुल्क था। मेला तीनों दिन प्रातः 1000 बजे से रात्रि 0800 बजे तक आम जनता के लिए खुला रहा। मेले में बल के सीमान्त मुख्यालयों एवं क्षेत्रक मुख्यालयों की ओर से स्टॉल लगाकर विभिन्न प्रकार की कलात्मक, हस्तशिल्प, खाद्य

श्रीमति किरन शर्मा, अध्यक्षा संदीक्षा, कार्यक्रम मे सम्बोधित करती हुयी।

संदीक्षा स्मारिका का लोकार्पण करती हुयी श्रीमती अनिता गोयल व संदीक्षा समिति की सदस्यायें।

पदार्थों, स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों का प्रदर्शन एवं बिक्री की गयी। मेले में बल के कार्यक्षेत्र भारत–नेपाल एवं भारत–भूटान सीमा पर स्थित इकाइयों द्वारा वहां के पारम्परिक एवं स्थानीय खाद्य पदार्थों एवं लोक व्यंजनों के भी स्टॉल लगाए गए थे। इस तीन दिवसीय मेले में कुल 42 बिक्री स्टॉल एवं 09 फूड स्टॉल लगाए गए थे। मेले से अर्जित लाभ का उपयोग बल कर्मियों एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों के समग्र कल्याण पर खर्च किया जाएगा।

इस तीन दिवसीय मेले के दौरान बल के कार्यक्षेत्र उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम एवं अरूणाचल प्रदेश के पारम्परिक लोक संगीत एवं नृत्य की भापप्रवण प्रस्तुतियों ने आम जनता का भाव–विभोर कर दिया। इन प्रस्तुतियों से सीमा क्षेत्र के इन राज्यों के लोक संगीत एवं नृत्य से वहां की लोक कला रूपों को एक विस्तृत पहचान मिली।

तीन दिवसीय संदीक्षा मेले का समापन समारोह 11 अक्तूबर, 2015 के दिन आयोजित किया गया। समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप मे सम्बोधित करते हुए श्रीमती आरूणि डोवाल ने कहा कि सशस्त्र सीमा बल लेडीज वाईव्ज वेलफेयर एसोशिसन (संदीक्षा) बल कर्मियों, उनके परिवारजनों एवं सीमा क्षेत्र के निवासियों, हस्तशिल्पियों एवं कलाकारों के उत्थान एवं कल्याण के लिए बेहतरीन कार्य कर रही है। संदीक्षा द्वारा बलकर्मियों एवं अपने कार्यक्षेत्र की जनता के लिए किए जा रहे कार्य उत्कृष्ट कोटि के हैं। संदीक्षा द्वारा पर्यावरण के सम्बन्ध में चेतना फैलाने, सीमा क्षेत्र के 'क्लेफ्ट लिप' एवं 'क्लेफ्ट पैलेट' के आपरेशन की निःशुल्क व्यवस्था कराने, सीमा क्षेत्र के हस्तशिल्पियों के उत्पादों को पहचान दिलाने का कार्य काफी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय हैं।

मेले के समापन समारोह को सम्मानित अतिथि के रूप में सम्बोधित करती हुयीं श्रीमती मंजू शर्मा ने कहा कि संदीक्षा अपने कार्यों से महिला सशक्तिकरण की दिशा में उच्चकोटि के कार्य कर रही है। संदीक्षा द्वारा बलकर्मियों की महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए जो कार्य किए जा रहे हैं उससे ने केवल

श्रीमति आरूणि डोभाल, मुख्य अतिथी संदीक्षा मेले के समापन समारोह में सम्बोधित करती हुयी।

बलकर्मियों के परिवार की माली हालत मजबूत होगी बल्कि इससे उन्हें स्वावलम्बी बनने में मदद मिलेगी।

मेले के दूसरे दिन एक रैफल ड्रा का भी आयोजन किया गया जिसके विजेताओं को विभिन्न प्रकार के सामान पुरस्कार में दिए गए जिसमें छह हीरो होण्डा मोटर साइकिलें एवं एल. ई. डी. टी. वी. आदि भी शामिल थे। मेले मे लगाए

संदीक्षा मेले के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुती राजस्थानी कलाकारों द्वारा।

मेले में स्टाल का भ्रमण करती हुयी मुख्य अतिथी व संदीक्षा अध्यक्षा

गए विभिन्न बिक्री एवं फूड स्टॉलों को विभिन्न वर्गों में प्रथम व द्वितीय पुरस्कार भी दिया गया। मेले में प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी प्रथम व द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए। संदीक्षा मेले मे लगाए गए स्टॉलों की सर्वश्रेष्ठ सज्जा में पहला स्थान सीमान्त गुवाहाटी एवं द्वितीय स्थान रानीखेत सीमान्त को दिया गया।

संदीक्षा गतिविधियों में 'बेस्ट इन हाउस टैलेंट' मे पहला स्थान सीमान्त रानीखेत एवं द्वितीय स्थान 25वीं वाहिनी, घिटोरनी, नई दिल्ली को प्रदान किया गया। संदीक्षा मेले मे लगाए गए स्टॉलों में 'मैक्सिमम वेरायटी' में पहला स्थान 25वीं एस. एस. बी. वाहिनी, घिटोरनी, नई दिल्ली एवं द्वितीय स्थान सीमान्त गुवाहाटी को प्रदान किया गया। मेले में आयी सांस्कृतिक टीमो में प्रदर्शन का पहला स्थान सीमान्त गुवाहाटी एवं दूसरा स्थान सीमान्त रानीखेत को प्रदान किया गया। मेले में सर्वश्रेष्ठ बिक्री के लिए पहला स्थान संदीक्षा शॉप, बल मुख्यालय को एवं दूसरा स्थान सेक्टर श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ फूड स्टॅाल का पहला स्थान सेक्टर श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर एवं दूसरा स्थान सीमान्त रानीखेत को प्रदान किया गया।

संदीक्षा गतिविधियों में पूरे एक साल के दौरान सर्वश्रेष्ठ कार्य–निष्पादन के लिए 'श्री बी. एन. मल्लिक मेमोरियल ट्राफी' सीमान्त मुख्यालय गुवाहाटी को प्रदान किया गया। मेले में बल के शहीदों की विधवाओं को भी सम्मानित किया गया।

मेले का एक मुख्य आकर्षण युवा कलाकार सुश्री तेजसी मिश्रा, गोल्डस्मिथ कॉलेज, लन्दन की बी. ए. (फाइन आर्ट) की छात्रा, की वाटर कलर पेंटिग्स की एकल प्रदर्शनी रही। जिसका विशय 'मा और बेटी था'। सुश्री तेजसी मिश्रा ने अपने वॉटर कलर पेंटिग्स के द्वारा एक बालिका के एक स्त्री में विकास एवं रूपान्तरण को खूबसूरती के साथ उकेरा है। इसके साथ ही सुश्री मिश्रा ने अपने पेंटिग्स द्वारा एक मां एवं बेटी के प्रगाढ़ रिश्तों को भी एक नई अर्थपूर्ण गरिमा दी है। सुश्री मिश्रा की इस एकल वॉटर कलर पेंटिग्स प्रदर्शनी में कूल 12 पेटिंग्स प्रदर्शिनी की गयी थी। सुश्री मिश्रा एक प्रतिभावान एवं उदीयमान कलाकार हैं। सुश्री मिश्रा की पेटिंग्स को कला मर्मज्ञों एवं कला–समीक्षकों से भरपूर सराहना मिली।

आसाम के कलाकार संदीक्षा मेले में प्रस्तुति देते हुये।

संदीक्षा मेले के समापन समारोह में आगत अतिथियों के प्रति स्वागत भाषण करते हुए श्रीमती किरण शर्मा, अध्यक्षा, संदीक्षा ने कहा कि संदीक्षा बलकर्मियों, सीमा क्षेत्र के निवासियों एवं समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के कल्याण एवं विकास के लिए अनवरत काम कर रही है। हम आग भी बलकर्मियों एवं समाज के कल्याण के लिए कार्य करते रहेगें। मेले में संदीक्षा द्वारा किए गए एवं किए जा रहे कार्यों का समग्र विवरण संदीक्षा केन्द्रीय कार्य समिति की सचिव श्रीमती प्रणीता झा ने दिया।

संदीक्षा मेले के समापन समारोह में सभी अतिथियों, आम जनता एवं मीडिया कर्मियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्रीमती सुनीता तिवारी, सयुक्त सचिव, संदीक्षा केन्द्रीय समिति ने कहा कि संदीक्षा के इस तीन दिवसीय आयोजन को सफल बनाने मे आप सबका बहुमूल्य योगदान है। इसके लिए हम आप सबके कृतज्ञ है। संदीक्षा भविष्य में भी ऐसे आयोजन करती रहेगी। ❑

The Motto of SSB

Founder Director of Special Service Bureau Shri B N Mullik IP, takes us through the birth pangs and consequences of the ground breaking work done in the nascent years of SSB when it was just a 'Scheme'.

B.N. Mullik
Founder Director of SSB

When the Chinese invaded our territory in 1962, it became apparent that a major lacuna in the Indian preparations to meet Chinese threat had been in the direction of training the frontier population to meet such a contingency. Nor had any preparation been made for maintaining civil control in area which passed temporarily under enemy control. Hence, in the face of imminent Chinese threat the entire civil administration was withdrawn and, when our army had to withdraw from these areas, the unprepared civilian population was left entirely at the mercy of the invaders. It must go to the credit of these people that, except in rare cases, by and large they did not show any intension to co-operate with the invaders and worked for them only when forced to do so at the point of the bayonet. No promise of friendship or monetary inducement could buy the active co-operation of the tribal's. It is true that they could not resist actively, but, this was not their fault because we had not trained them to do so. The usual reluctance of the authorities, both civil and military, to train the tribal's into any state of militancy, born out of distrust of their loyalty, was at the root of this incomprehensible decision.

Smt Indira Gandhi interacting with the first batch of Women Volunteers training at WATS Pauri

The resulting mess that occurred in the NEFA caused much distress to our great leader, Pandit Jawaharlal Nehru, and led him to think out a plan of action which could prevent the recurrence of such a collapse in people's faith in the Government. He must have given deep thought to the problem and ultimately come to the conclusion that "the people's morale and the spirit of resistance in the border areas should be built up to the point that they would not succumb to enemy pressures or temptation even though living under enemy occupation. They should completely non-cooperate with the enemy and actively oppose him even to the point of fighting as guerillas so that "they could make it hell for the enemy". Pandit Nehru more than anybody else had fully realized that such a resistance movement was possible only when the bulk of the population either actively participated in the resistance movement or were strongly sympathetic to the cause.

Preparation in Advance

The fact that such a resistance movement could be built up in advance was a novel idea because the normal impression is that a guerilla resistance movement can be formed only under condition of enemy occupation, and not in advance. Apparently, Pandit Nehru did not subscribe to this view. He considered that people's resistance should be built up even before the enemy

invaded the territory, and their enthusiasm and feeling of belonging rose through prolonged work, so that when the actual danger came they would be ready to participate in the struggle against the enemy, even in condition of enemy occupation.

An example of prior preparation would be found in China itself where Mao Tse-tung had prepared the Chinese guerilla in areas where the Japanese had not till then penetrated; and when they did and overcome formal Chinese resistance, the guerillas sprang up from every corner and brought the Japanese to a standstill. Thousand of Japanese soldiers were killed and entire Japanese regiments were immobilized due to the action of the guerillas. Even now the fact that millions of Chinese militia has been raised shows that China is making advance preparations for any contingency and that these militia men will be left behind in territories occupied by the enemy to carry on the fight against the enemy.

The experience of the last war showed that excepting the case of Chinese, all other guerilla movement had sprung up only after the respective territories had been overrun by the enemy. That was so in France as well as in Russia. Wingate's Expedition in Burma was also an example of setting up a guerilla base in enemy-occupied territory. In each of these cases, prior guerilla movement had not been built up because neither the Swift German advance in France and Russia nor the quick Japanese occupation of the whole of South-east Asia and Burma was foreseen.

There are many good reasons why a resistance movement should be prepared ahead of even a remote prospect of invasion by the enemy. As a guerilla movement takes a long time to build up and a modern war may be over in a few weeks' time, the guerillas would not be able to play an effective part against the enemy. Moreover, as all official and non-official organizations would have withdrawn from the territory, it would be difficult to build up an underground movement and to open up lines of communication with it. Rivalries may crop up among self-appointed guerilla leaders and there is always a chance of the enemy infiltrating its own men in the guerilla movement if the organization has not been built up and tested from before. All these reasons are valid and have been accepted by authorities dealing

Shri B N Mullik seen with Smt Indira Gandhi PM, Smt Suchetha Kripalani CM of UP and Shri Dinesh Singh Minister for External Affairs in 1966

with guerilla warfare as the reasons why in all areas likely to be affected by enemy action, it would be most useful to build up a resistance movement from before. Even if the enemy never comes to the position of occupying any large area, even warlike action on the part of the enemy and air raids and bombing, etc., would certainly terrorize the frontier population, causing serious loss in morale unless it has been trained and prepared in advance. And once a population is terror-stricken, it is very difficult to restore its morale and bring it to a state of normalcy, what to say of building up its resistance potential. Large-scale movement to safer areas would start impeding the movement of own army. And nothing is more propitious for the enemy than this disruption in our lines of communication.

Pandit Nehru had apparently thought of all these matters and come to the conclusion that in the areas which were likely to be threatened by enemy action, a resistance movement , both political and physical, should be built up, if for nothing else, at least to sustain the people's morale in peace time and in time of confrontation before hostilities. It was this idea of this great and far-sighted leader which led to the birth of SSB.

Naturally, with absolutely no experience in the field of organizing this type of resistance those who were given charge of this work were finding it extremely difficult in undertaking it. It was not that they were not convinced about the need of such a movement in the frontiers areas but, having no experience and knowledge they were neither sure whether the population in the these areas would be responsive to such an idea, nor

sure whether they themselves were capable of building up and sustaining such movement. However, the State Chief Minister and Governors were enthusiastic and though the services, civil, police and military, were at first cold to this idea, the Chief Ministers who were more in touch with the people's mind realized the need for such a movement and whole-heartedly supported it.

Scheme Takes Shape

The regions were marked out according to their location in the frontier, NEFA being one, North Assam being another, North Bengal being the third, etc. Officers were specially selected from the State after judging their enthusiasm and willingness to undertake this type rough and unconventional work and, by and large, they fitted themselves to their new tasks admirably. They were, however, inexperienced and had to be trained. There was, therefore, the need of setting up a training institution for them. As for the Village Level Training, it had to be taken to the villagers themselves, so as not to draw away people from their normal work. The hours of training were also fixed in consultation with the villagers.

Shri B N Mullik briefing PM, Smt Indira Gandhi about training activities in Gwaldam in 1966

Soon it was apparent that the Village Level Training alone was not enough, though it was absolutely essential in order to build up the morale of the entire frontier population and was to be the foundation on which any scheme of frontier resistance could be built up. It was found necessary to give advance training to people who would join the guerilla fighters' group, and even leaders' training to those amongst them who would be working as Group Leaders. So, other training institutions had also to be set up, followed by the institutions for specialist training in medical care, weapons, intelligence, communications, etc.

Warm Response

A fact that struck the first group of officers, when they approached the villagers, was that, whether it was in Himachal Pradesh or in the U.P. hill areas, in North Bengal or in North Assam, or in NEFA or other frontier areas, they did not have to sell the idea to the people. The ground was already ready and people were avidly waiting for the Government to do something, so that they could play their part in the scheme of national resistance. The humiliation which India had suffered at the hands of Chinese had been felt deeply by these frontier people. And, whether they had been in enemy occupied areas or outside, they realized that in future, even worse situations might develop, and they must be ready to fight the enemy by every means at their disposal. They were even willing to be left behind the enemy lines to carry on the fight.

Small batches of armed police units were inducted into the various areas to give Village Level Training. Though originally it was intended that the training would be confined to men only, it was soon evident that women could not be left behind because they also came forward in large numbers to receive training. Hence, separate arrangements had to be made for them also. Soon the advance training institutions were taking students by hundreds at a time and were finding it difficult to cope with the rush for admission. Women, not to be left behind, also asked for advance training and separate training institutions had to be opened for them.

Trust Begets Trust

There was a stir all-round. The tribal population, which had so far been considered to be sleepy and apathetic, had woken up to their responsibilities and were willing to play their part in defending the country. So far there had been lack of trust in them which they had deeply resented. But now they realized that, for the

first time in their experience, they were being trusted by the Government to take part in this sacred work. So far there had been much resistance from the civil and military authorities to allow the frontier people to handle arms. Now that taboo was gone. He was being given the rifle and the ammunition and was being trained to use the weapons. No political training was necessary. The rifle had done the job. It was the emblem of the Government's faith in the people and of people's resistance against the enemy. The same rifle which the soldier used to defend the country was in the hands of the masses of people, and they looked upon themselves as the soldiers of their motherland ready to fight to uphold her honor.

It was discovered that in a very large training camp in North Assam, a retired Headmaster aged about 70, was also receiving training. When asked, what he thought of it, he replied, "All my life I have seen people distrusted by the Government and its agencies. We never felt that we were a part of the Government or had any responsibilities in the management of its affairs or in the defence of the country. Things did not change even after independence. But now I feel that I really belong to this country, because for the first time I am being relied, that also for the great work of the country's defence. You have given me this rifle which our army uses. Never before had I even touched a gun. We could not get a gun, because we could not get a license and were not trusted with it. Sir, you assure the Prime Minister that now we are all soldiers under him. Whether we die or live, we shall not allow the enemy to take roots in our country."

What greater fulfillment could there be of our great leader's cherished desire than this awakening in the minds of the people of frontier areas, young and old, men and women, all irrespective of caste or creed that they were a part of the entire country and on them rested the responsibilities of defending its territories as much as on the army or the police! There was no question of any party politics here. What no amount of political indoctrination could have achieved, the rifle had done. There was only one aim and was to defend the country and in this noble task men and women now felt that they had a part to play and they were ready to do it.

Eager Women

In women's training camp in North Bengal when asked how they liked the training, one middle-aged Bengali lady came forward and pleaded for advance training for women. When asked what she had learnt so far she said that she could now defend her husband and children against enemy oppression. When it was suggested to her that this much training should be enough for women, she did not agree and wanted to learn first aid, shelter during air-raids and many other things which women could do during enemy occupation. And she was not an exception. There were nearly two hundred women in that training camp and they, in one voice, demanded more training so that they could be better prepared against the enemy. Who could say 'no' to this demand? So facilities for women's advance training were made immediately and this gave a new fillip to the resistance movement in the rural areas.

Women Volunteers showing their firing skill before PM Smt. Indira Gandhi

There was a large women's training camp in Kangra. During an inspection tour when asked if the trainees had any question, they enquired whether it was possible for women to fight against armed enemies. It was suggested to them that, in the Indian Puranic history, time after time when the gods had failed against the Asuras, Durga had come forward to demolish the latter. Would they then considered women not capable of fighting the enemy? It is not that they had any doubt about their ability to fight, but some fifth columnists had tried to cast doubts on them. Thereafter they called their unit the invincible 'Durga Bahini'.

Frontiersmen Swarm

There was a camp in NEFA where whole families had

come from long distances, carrying their little belongings and twenty day's rations on their backs and also their children and had, on their own, built beautifully camouflaged shelter in the jungle adjoining the training ground. When the husband and wife went for training, the children fended for themselves, the elder of them taking care of the infants. Soon they were doing their own rifle-training using little pieces of sticks as their weapon. And not a rupee was spent on the camp!

This was the pattern throughout the whole of the frontier. Men and women came rushing to receive the training. They did not ask for any payment, nor was any payment offered to them. They did not think that they were doing any service to the Government. They considered that it was their moral and religious duty to take this training to be able to defend their village and their country. They did not consider that time spent on training was any loss to them. They rather felt that their gain was immeasurable. In fact the whole population had been roused. When, during a demonstration before the Prime Minister, hundred of trained men and women volunteers appeared from nowhere in the Jungle and again disappeared at a moment's notice, they evoked spontaneous appreciation from the VIP's. The latter were deeply impressed when even women volunteers proved that they were as good with their rifle at the targets as policemen or soldiers. The VIP's were astounded to see that the whole border area had been transformed.

By 1965, a million and a half men and women had been trained throughout the border and the training had been extended to new areas covering the eastern and western fronts also.

SSB on test

The SSB was tested when the war with Pakistan broke out in 1965. In village Satrasal of Goalpara district in Assam, right on the border of East Pak, there was such terrific firing by the enemy that under army's direction, the armed police picket was ordered to be withdrawn to a safer distance. It became apparent in that case that the people of the village would also have to evacuate. There were eight or ten advance trained SSB men in the village. They would not allow their village to fall in the hands of the enemy. They went into the police trenches, told the armed policemen not to evacuate, maintained their supplies, dug communication trenches, took turns at sentry and other duties and maintained the morale of the policemen, who held on to their position. When a dead body had to be recovered from within the enemy territory under heavy enemy firing, the training of the SSB men was put to severe test. Undaunted, two of them crawled to a distance of nearly sixty yards and brought back the dead body. Such was the spirit which they had developed.

In another frontier area, when the Chinese threatened to act in collusion with Pakistan, nearly a thousand SSB men went underground and lived in that state for a month, obtaining their supplies from the villagers. They had to spend their nights under trees at heights of eight to nine thousand feet in the month of October. But, they went through this ordeal willingly proving how well they had been prepared and the villagers co-operated with them fully. Not a rifle was lost and not a round of ammunition was misused.

In a tribal area, the villagers by themselves took up the work of protecting the bridges which were the only means of communication, acted as guides to the army units and the more advance trained men collected in groups and along with their Organizers went underground to fight the enemy, if they appeared in their territory.

When a call went out to fight enemy infiltrators in Jammu, nearly two hundred SSB men from Kangra volunteered to leave their homes and come to the Pakistan frontier for that purpose. They acquitted themselves creditably and foiled many of the commando raids by enemy troops and succeeded in flushing out a number of infiltrators.

The Healing Touch

Apart from the first and the primary work of the SSB to defend the motherland, there is much social service which the SSB men can do in these areas, many of which are inaccessible. While the Government development work is progressing and is bringing about a general uplift in the standard of the people's living, there is yet a large amount of individual suffering in this vast country for which it is not immediately possible to find adequate remedies. A man may be seriously ill and the nearest hospital may be twenty miles away in this difficult territory. It is, impossible for him to go to the doctor, nor can the doctor come to him. In such a case,

SSB Doctor checking patients in a remote border village in UP

the Medic of the SSB can take the healing touch to the villager and administer to his needs. In many cases, with the training which they have received, they would be able to cure the sick. But, when they find that it is it beyond their capacity, they can arrange to transport the sick to the nearest hospital. The fact that the Government of India are now (then) thinking of a scheme of extending this type of medical help throughout the whole country only proves its relevance, particularly when it is applied to the border areas where medical help is much more difficult to get then in the plains.

Someone to look to

While big roads are being built, communication from a village to the main road may yet be difficult, but the SSB can, with the help of villagers, provide the connecting link. While colleges are being built, the village in the remote areas may not have even the accommodation for a small school but, the SSB can build school for them or even provide teachers for it. In sudden cyclones and other elemental disasters help from government agencies take long time to reach, but the SSB is there to do the needful. The sterling service which the SSB in Jalpaiguri and

Rescue & Relief

Darjeeling districts did during the unprecedented floods in 1967 is still vividly in the people's minds. The fact that there is someone all the time going round the villages to look after their needs and help the people is a great morale booster and contributes greatly to the heightening of the people's resistance potential and their integration with the rest of the country.

Death Defying Spirit

The SSB idea, the seeds of which had been sown in the frontier areas by our great leaders, Pandit Jawaharlal Nehru, has now fully blossomed and the frontiers areas are fully seized of their responsibilities and are prepared to do every sacrifice in discharging them. Innumerable verses have been written and even plays have been enacted to rouse this death-defying spirit in these frontier areas.

The frontiers people fully realize that in this great 'Yojna', i.e., fight for the honour and integrity of the motherland, every person has a part to play whether he is old or young, man or women. To them the mother and motherland are superior to heaven. 'Janani Janma bhoomishcha swargadhapi gariyasi'. For ten years the SSB has defended the motherland, and, given the same leadership and the same inspiration, they will continue to defend the country in coming years too.

Defend the Motherland is their motto. This motto was not given to them by any outside agency. It was adopted by the people themselves. And what better motto can there be than 'Defend the Motherland? ❑

(The article was earlier published in the 10th Anniversary Issue of SSB News in May-1973)

Padma Shree Narayan Singh Bhati Zipashni - A Profile

The History Cell at FHQ dug up facts about the 'Legend' and 'Trainer par Excellence' Padma Shree N S Bhati former DIG (Trg)

Way back in 1989, when I joined SSB, Shri N S Bhati was in the last leg of his service and was my first boss for two and half months. He was DIG (Training) and was also supervising the works of the Publicity Cell. Three minutes into my introduction, he divined that I was a wee bit homesick and so he cut short my introduction and advised me to visit the Karnataka Sangha at Moti Bagh to get some good South Indian food and meet a lot of Kannadigas to feel good. He was a simple man, very awake and with an air of commitment. He indeed was right. Before I could express my delight at his concern for me, he was on his feet in anticipation. Simultaneously, the door opened and the Shri H B Johri Director, SSB was in and enquired about some training statistics. Shri N S Bhati's photographic memory was in full flow. He matched the battery of questions and rattled out the actual breakup of the number of Volunteers trained in different SSB Divisions, that year, the number of men and women Volunteers trained, number of persons who completed intensive training and the number of persons due for the Refresher Course, again State wise, still without opening the file which had the details. In all, he mentioned twenty odd figures, I was dazed and askingly looked at him. Clairvoyantly, he answered 'trust your memory not your paper'. This was the first lesson I learnt from him. Twenty seven years later this sagely gem is pertinent to the even this Android generation. That was the stuff Shri N S Bhati was made. As all good things come to an end, on 31st May 1989, Shri Bhati superannuated and was given an enduring send off, by all.

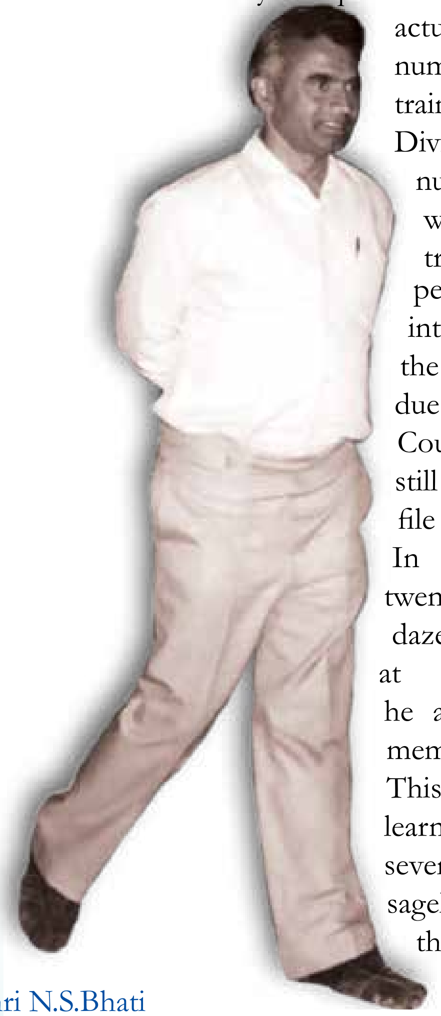

Shri N.S.Bhati

Meanwhile, the Government of Andhra Pradesh was looking for an expert who could help raise a self driven and contained Force to counter the Naxal menace which by then had a stranglehold in many parts of Andhra Pradesh (AP).

Padma Shree N S Bhati felicitated

Sashastra Seema had its proudest moments on 24th December 2015, when the finest Officer of SSB, Shri N S Bhati Zipashni was felicitated during the 52nd Anniversary Day Parade Celebrations by none other than the Union Home Minister, Shri Rajnath Singh in the presence of, Shri B D Sharma IPS Director General, SSB, dignitaries from Ministry of Home Affairs, Senior Officers of all CPMFs, a battery of retired SSB Officers (some of Shri Bhatti's colleagues and scores of his trainees) and families of SSB personnel.

Shri Rajnath Singh stepped out and walked up to the octogenarian and adorned him with a shawl, scroll and memnto It was heartwarming to see our beloved Shri N S Bhati return and take his place again in our hearts, as a 'Legend' and a 'Trainer par Excellence'.

Shri Rajnath Singh Union Home Minister felicitating Shri N.S.Bhati on Anniversary Day function of SSB

Shri Sridhar Upadhyay DD and Shri N S Bhati briefing the Cabinet Secretary about training activities ahead of the 1971 Indo Pak War

The Grey Hounds personnel were unstoppable even in the Naxals own territory or during counter ambush at naxals chosen time and space. They knew the Naxals inside out and so were always a few steps ahead of them. They hunted and gunned down and broke the spine of Naxal Movement in Andhra Pradesh. As a result, the Naxals left all their strong holds including, Warangal, where they were indomitable. As a consequence, there are more Telugu speaking Naxal leaders from Andhra Pradesh leading the movement from neighboring states. The Grey Hounds struck successfully in the neighboring States too. On the request of the GoAP, Grey Hounds also trained the Andhra Pradesh Police and is now extending training to other Naxal affected states. Time has proved that Shri N S Bhati was unquestionably, the finest choice. The Grey Hounds is now not just an elite School, it is the finest Counter Insurgency Institution in Asia and may be in the World too.

The GoAP made no mistake in appointing Shri Narayan Singh Bhati Zipashni, DIG, SSB (Retd.) as a consultant, in 1989. Shri Bhati was made of legendary stuff and proved to be the best amongst the best. Single mindedly, he studied the AP Police for a while, checked records and then handpicked a few personnel and took them for rigorous training at the Grey Hounds, which he painstakingly created. He planned the modus operandi, conceptualized the training, created the environment and also conducted training for the men and Officers of grey Hounds.

His motivation sessions were elaborate yet focused as he always emphasized that anything was possible, if the motivational levels are high. He used all his SSB experience to train the Grey Hounds as a Special Force, which was well trained, effective, highly motivated and did curb the growing menace of Left Wing Extremism like a linchpin.

A veteran in Guerilla Warfare, Counter Insurgency and Counter Subversion the trainees soon found that they were a blessed lot to have Shri N S Bhati to be their 'Mentor par Excellence'. Due to his constant guidance, motivation and insatiable urge to continuously keep the training relevant to the Grey Hound. This endeavor ensured unprecedented success in countering the increasing threat of Naxalism. To this day, in this ripe age I am told he attends the morning PT in Hyderabad, daily.

Shri N S Bhati was born on May 18, 1931. He completed B.Sc. and L.L.B. in 1952 from Rajasthan University. He joined the Intelligence Bureau as ACIO-II, on 1st October 1953. He performed some extraordinary top secret work in SIB in Calcutta and also did some intelligence cover job in Jodhpur Area. Three years later, he was promoted as ACIO-I (re-designated as Field Officer) and was posted in vulnerable areas of Himachal Pradesh. His services were highly appreciated

Padma Shri N S Bhati extreme right

and promoted as DCIO and posted to Ladakh after the Chinese Aggression in 1962. He worked for four years in Ladakh and again later during the Indo Pak war 1965. He proved his mettle in yet another very special assignment involving great risk in Kargil Area for which he was commended by the Director of Intelligence Bureau.

He was then sent to the Special Service Bureau (SSB)'s Frontier Academy Officers Training School (FAOTC) in Mahabaleshwar in Maharastra, that year. Keeping in mind the skills, knowledge and expertise acquired by him about the Indo-Tibetan Border Areas and his unrivaled performance in the course (he scored 100% and topped the course), he was promptly appointed as Instructor at the FAOTC on deputation to the SSB, in 1966 from IB.

Here he conducted various training courses in Counter Subversion, National Integration and Counter Insurgency with a high order of competence and dedication. Later, he was promoted as Senior Instructor at FAOTC. He organized and supervised a number of training programmes during that period not only for SSB but, for other sister organizations and Indian Army too. He worked as Chief Instructor, Assistant Director and then Dy Director as head of the Premier Training Institute of SSB in Gwaldam (Uttarakhand) for about 10 years and trained almost all the Officers of the organization, who joined the Force in that decade.

Shri Rajiv Gandhi, the then P.M browsing exhibition in a SSB camp in Arunachal Pradesh

During the 1971 Bangladesh Operations too, he did commendable work in organizing, planning and directing the training of Bangladeshi guerillas in various tactics of Guerilla Warfare and worked unceasingly from May to December 1971, with full devotion to duty and produced tangible results in his assigned job. Commensurate to his caliber the Government of India assigned a special task of training, which he accomplished in an exemplary manner, that year. He was then decorated with a much deserved Indian Police Medal for Meritorious Service, in 1972.

In 1973, Shri Bhati was given additional responsibility of dealing with construction and establishment matters of SSB. In 1974, Shri N S Bhati went to United Kingdom for a specialized training. After he returned, he focused on improving the qualities and standards of instructors and training in the Academy. Periodically, he also discharged the duty of Deputy Director of Frontier Academy in a very professional manner, in addition to his assigned duties. His matchless service record and performance was unrivaled and so he was promoted as Dy Director, in 1982.

On 1st July 1983, Shri N S Bhati took charge as Divisional Organizer, Uttar Pradesh Division in addition to his duties of Dy Director (Training) at SSB Headquarters. Further, he willingly shouldered the responsibilities of Frontier Academy Gwaldam too, on 31st October 1983. Meanwhile, situation demanded that he be entrusted an important operation of sensitive nature between October 1983 and January 1984, which he accomplished with great élan. He not only proved himself to be an indispensable Officer but, also a great team leader who carried his team all along by being part of it. In 1984, he was awarded the President's Police Medal for Distinguished Services.

Shri N S Bhati retired from SSB in 1989 after putting in 23 years of glorious service in SSB. In recognition of his incredible contribution in quelling Left Wing Extremism and setting up high standards in Training, Shri Bhati has been awarded the Padma Shree in 2011. He will remain amongst the tallest amongst all Officers of SSB.

SSB Samachar wishes him the finest of health and divine blessings for all times to come. ❑

The RCC Experience at SSB Gwaldam

A.K. Singh, IPS
Additional Director General of Police
Gandhinagar, Gujarat

It, perhaps, was not easy for the DG SSB Shri B.D. Sharma to grant this "yes"! Despite my immodest claims of possessing the requisite physical fitness, the reluctance on his part to permit me for the Rock Climbing Course was absolutely justified. At 55 years I far exceeded the prescribed upper age ceiling of 40. As he personally tried to explain to me, any concession there was violative of a very sensible governmental rule; more importantly he didn't want to expose my own safety to serious risk. However, I did not relent my attempts to extract a nomination for the course. It was only a few months back that I along with my wife had successfully done the treacherous high altitude trek to Rupkund, thanks to some very generous support from the Mountaineering Wing of SSB Gwaldam. I think, it was the passionate recommendation from Shri S. Bandhopadhyay, IG SSB Academy Srinagar (which I unashamedly and desperately mobilized) and some exaggerated projection of my mental readiness from some of my senior IPS colleagues in Gujarat which nudged the DG SSB to finally give his nod. The permission was with a condition requiring me to sign a technical waiver that it was entirely at my own risk: and for Shri Badhopadhyay that he like Trishul, would keep a constant watchful eye on me all through the course. Bandhopadhyay saheb happily agreed to that, but with a quid pro quo of assurance of my company on his treacherous mountain biking expeditions!

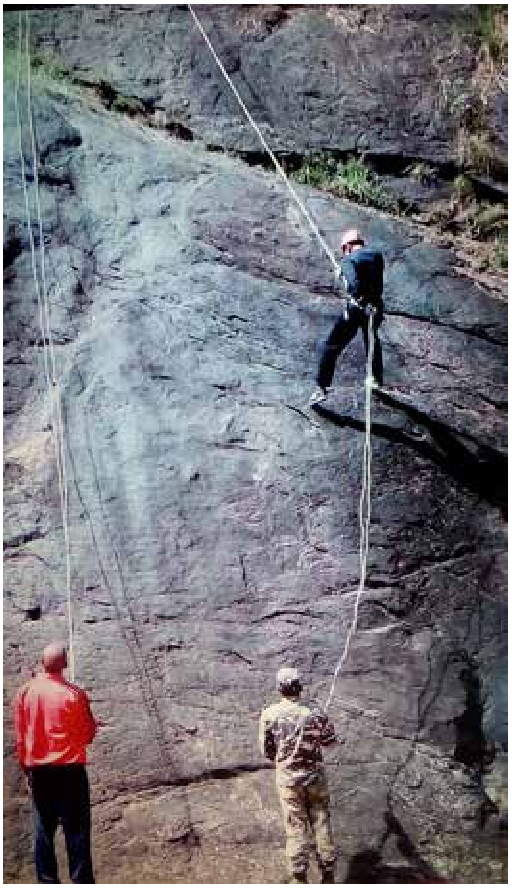

I very vividly remember the atmosphere of bewilderment when on 21st September, 2015 I walked into the very first class of the 141st Rock Climbing Course (RCC) - at SSB CI & JW Trg. Centre, Gwaldam. The course participants consisted of some twenty young constables mostly from CAPFs and I , a grey haired ADG . Nobody, including the veteran instructors of the SSB Mountaineering Wing, was accustomed to this extreme "polarity", and there was a very palpable anxious awkwardness all through those initial hours. Ultimately, I had to plead to both the instructors as well as the fellow participants, that it would do me a lot of good if they treated me only as yet another trainee. It wasn't before long, thereafter, that the ice melted and with generous dose of helpful encouragement from all quarters, I was well on my way to become a certified Rock Climber.

The Senior Mountaineering Instructor Shri Bisht and his team of elite instructors left no stone unturned in converting my raw enthusiasm into a genuine mental and physical preparedness to go through the extremely demanding course. Two trainers were specially attached to me for making me go through a customized fitness training session at the crack of the dawn every day. While these 5 to 10 km road runs interspersed with lot of body weight strengthening exercises started toning my body, listening firsthand to their mountaineering experiences fuelled up my mental resilience tremendously.

After three full days of solid grounding on theoretical principles and craft of rock-climbing, detailed familiarization with technical equipment and a very rigorous briefing on safety and emergency management protocols, it was time to head out to the rocks. Rest of the course was going to be all outdoors from then

onwards. Every day the group would be transported to the Rock feature slated for the day - which would generally be accessible only after a short but strenuous trek. This was a great way to warm up.

The RCC of SSB has a fantastic set of training Rocks as the region around Gwaldam is richly endowed with spectacular Himalyan terrain. The selection of Rocks has been fine tuned through a huge experience bank of conducting 140 previous batches of RCC over more than several decades. One would marvel at the range of complexity, grade and degree of difficulty which these rocks offer in order to ratchet up systematically the learning of techniques. These rocks also gradually build exposure to an ever more challenging psychological dimension of " head for heights". Each one, like "Lama" rock, had a legend behind. Some like "Saikia Rock" had stories of miserable evocation of fear behind their naming, which the instructors would mischievously narrate in lighter moments. Suffice it to say that, after hearing these stories I prayed to God to save me from any dubious episode that associated like this, my name with any rock for eternity!

The enormity of the challenges of the course dawned on me in no time. The gravity defying climbing demonstrations by highly skilled instructors on impossible looking rock faces did not help my confidence. It was a leap of faith for me to even imagine that at the end of the course, I would be able to do it all. Noticing a sense of disbelief on my face Sonam "Sir" discreetly shared with me what I call as the golden tip. He said gently – " It is not so much about strength. It is all about technique, balance and mental robustness which actually has got nothing to do with age! Rocks are climbed with mind!!" There was no looking back for me after that. After the first week my confidence rose high enough- and I kind of even started arrogantly enjoying the taunts which instructors loudly hurled at much younger fellow participants whenever any of them froze out of scare in a climb – " pachpan saal ke BUDHE saheb kar le rahe hain or pachhees saal ki umar me tum … beep…beep….beep…"

was ultimately very happy to complete this extremely challenging course, hopefully meeting, all the performance expectations of the SSB Academy and its elite mountaineering wing. At the same time I felt quite relieved that I did not present any time during the course any contingency of medical nature (not counting the embarrassing allergic reaction episode to Dim Dim attacks) and betray the trust shown in me by the DG SSB when he accepted my nomination. This would not have been possible without the endless encouragement and support showered on me by Shri Jagdish Kapkoti and every single instructor of the mountaineering wing. "Bisht Sir", "Bhatt Sir", "Sonam Sir", "Shukla Sir", "Tamta Sir", Bhati, Lama, Anand, Khan…. their list is long and I can't ever be grateful enough to each of them. I must also say a big thank you to my fellow trainees for accommodating my presence in their midst. In this long service thus far , I have attended several in service training courses with high sounding names in some of the most elite institutions in the world but the unparalleled joy and learning in these three weeks, which I spent with all constables as fellow participants, will remain etched in my consciousness forever!

"What next?" this question started cropping up in my mind as the course came to a successful end. The answer came from Mr. Somit Joshi, Commandant of CI&JW TC and a mountaineer of great repute with Everest already under his belt, when he ordered the mountaineering section to size my feet for snow climbing boots – a clear indication that I would be welcome to attend the prestigious Medium and High Altitude Training Courses with the SSB. Has it not ignited a chain of fresh dreams in my heart…….? Only time will tell! ❑

Impeccable Trust

Shri M L Chaudhuri former Inspector General revisits his tryst with destiny, where intimidation if not threat to life confronted him. As a gesture of deep gratitude he recollects Pastor Chowna's family, his work in SSB and the challenging times he had in MNF ridden Mizoram

M L Chaudhuri
Former Inspector General, SSB

In the early 70's, insurgency in Mizoram was at its peak and the rebel leader Lal Denga of the Mizo National Front (MNF) was in control of the insurrection for a separate state of Mizoram from the Union of India. People belonging to Mizo community were agog with the cry for an independent sovereign Mizoram. Mizos, particularly the boys and girls after taking up arms went into the jungles and were highly charged with their single point agenda, an independent Mizoram. Ambushes, raids, killings, lootings were endemic in Mizoram and along the borders of neighboring state of Tripura which was separated from Mizo hill by a small river known as Longai. A large number of people belonging to Mizo community were living on the picturesque plateau known as Jampui hill in the South-East of Mizoram. There were about twelve sparsely populated villages dispersed on the serene and tranquil hill-top of Jampui. It was heart rendering when English tune in Spanish/ English guitars kept on flowing in the morning and dead night breeze from a distant hamlet tearing the heart of damsels on the other spur of the hill.

Mizo people on the hill-tops of Jampui were generally peace loving, God fearing and nature loving. Most people were indifferent about what was happening on the other side of the hill top in Mizoram. True, the spillover of insurgency and armed struggle affected the people who became victims of occasional denigration by the armed ultras of MNF. Police/CRPF personnel who were deployed in the Jampui hill also became victims of ambushes, raids and arms snatching and so on. Given the above situation in Jampui hill vis-à-vis Mizoram, it had been a constant cause of worries and concern for the central and state Governments as to how to insulate and isolate Jampui hill from the influence of insurgency of Mizoram. MNF cadres were using Mizo inhabited Jampui hill as their Sanctuary and launching pad for offensive in Mizoram. In order to thwart their designs to use the soil of Jampui hill SSB launched a sustained National integration programme dovetailed with the development programmes like construction of water reservoirs, club-house, weaving centers, training-cum-production centers of local handicrafts and promotion of horticulture with the various grants-in-aid schemes of the Government of India with an aim to instill in people of Jampui hill a sense of oneness and belonging with the rest of the country and the mainstream of population. Undoubtedly, it was a daunting and challenging task to persuade people to join such activities.

In order to pursue these activities, we first befriended the local people and gained the confidence and support of the church leaders, village-chiefs and pastors. Our main plank was Pastor Reverend Chowna of Hmompui village. He was in his 70's and a thorough gentleman, popular, caring with full of compassion and sense of humour. With Pastor Chowna's credential, soon I befriended all village-chiefs, young boys and girls and gained the trust and confidence of Jampui hill. I used to frequently visit Pastor Chowna's home and both Pastor Chowna and his wife treated me like their son. Under guidance and advice of Pastor Chowna, I spread my network from village to village and became popular among the Mizo community in Jampui hill.

To be precise, my job was to organize and conduct group meetings, identify development projects, disburse project wise sanction amount, execute agreement between the President of India and grantees and monitor the execution of works and finally obtain completion cum utilization certificates and rendered the accounts to the Government. Eventually, the machang type wooden bungalow of Pastor Chowna became my permanent guest house. I used to stay for days there and became more or less a member of Pastor family. Both, Rev Pastor, Mrs Pastor and their sons, daughters and daughter-in-laws became my kith and kin. Meanwhile, I developed taste for coarse rice and boiled R.B. Paste

with salt and green chilly. Dal, fish, meat were delicious, but very rarely served. Wooden dining table, chairs and crockery and cutleries were all made of porcelain and of course, strict table etiquettes were maintained during meals and all the members had to sit together in every meal which will start with chanting verses from holy Bible. Dinner was generally served immediately after dusk followed by gossip, hilarious jokes, humor and playing of Spanish guitars and lastly a puff of "BAILO" (Local cigar/cigarette). I was then about 26 years of age and was an eligible bachelor and so both Rev Chowna and Mrs Chowna used to often cut jokes and pull my leg. Mizo society is a free society. Boys and girls mix freely and join together for dance and choir. Be it a boy or girl everyone will shake hands to greet each other. Rev Chowna used to caution me saying there was no harm in "CIBAI" (hand shake), but don't get chewed by the beauty of Mizo damsels followed by a hearty laughter. In this context, I remember my mentor Late Sukumar Bhowmik who used to advise me 'Brother, you must maintain a respectful distance from women if you want to survive and be a successful crusader for tribal upliftment. A minor slip in this matter might be disastrous and bring you crest-fallen', which I shelved in my heart during my entire sojourn in the tribal Areas and finally came unscathed.

Every room in Pastor's bungalow had stickers like Dining-hall, Chapel, Kitchen, Wash-room, bedroom and likewise. I had an earmarked bedroom to retire after day work. Other members of the family too had their own bedroom. One evening, I found Rev Chowna little restive and was not in his usual mood. Mrs Chowna asked me and her daughter-in-law in low voice to take food early and need not join dinner with them. Rev Chowna in his normal humorous mood told me to sleep in his son's bed room with his daughter-in-law. His son Vaika was at Aizwal, the capital town of Mizoram. I took it as a joke and laughed at the silly proposition. Then to my utter surprise found that Rev Chowna was serious about the arrangement. He rather forced me to the bedroom of his son and daughter-in-law. I quietly obeyed him and went to bed in the room earmarked for me. After a little while his daughter-in-law also joined me in the same bed. Pastor quietly entered the room and very stoically told me not to venture out from the room unless he himself called. He told me that a group of armed MNF ultras were scheduled to reach his home late evening to take food. He further clarified that he thought of the arrangement for my safety and protection. Some of the young MNF cadres, according to him were arrogant rogues. He did not want that they did any harm to me and hence the arrangement was made fool proof. The MNF cadres generally were respectful to women folk and maintained distance from female. Pastor prepared a cover-story that his son Vaika came this evening all the way from Aizwal and was exhausted due to long and arduous journey and therefore gone to bed early, to diffuse the suspicion and query, if any. Having heard the cover-story, a chill ran through my spine and I started sweating heavily despite cold climate of Jumpui hill. I could not shut my eyes in bed and was breathing heavily.

At dead of night when the hamlet was fast asleep and pin drop silence engulfed the whole village I heard heavy footsteps of a group of men who entered Pastor's home and spoke in hush-hush voice. Rev Pastor and Mrs Pastor welcomed them and served the meals and after an hour or so they left the home quietly for an unknown destination. Every footstep on the wooden floor sounded to me like a hammer hitting the chest. In these 2-3 crucial hours my body became totally frozen. When Rev Chowna called me I was dumbfound, my voice choked, perspiring profusely and even not in a frame of mind to thank him. I was out of my words to acknowledge and thank him for the concern he showed to save me and for his love and care he showered upon me so indulgently and profusely too on that crucial night. Invaluable trust he reposed on me was unthinkable and impeccable. Rev Chowna was a legendary and father-figure in Jampui hill of Tripura and I maintained touch with him till he breathed his last. In his 90's when he was abandoned by all his near and dear ones I did give him solace in every manner possible which were too little for the kindness and care he bestowed upon me abundantly. He occupied a special place in my heart even to this date. He was a true savior for whom I got a new lease of life from a clutch of trigger-happy MNF cadres. ❑

On the occasion of the inauguration of Bomdila SHQ,
DG SSB welcoming Shri Kiren Rijiju MoS(Home)

Smt Archana Ramasundaram IPS, DG SSB alongwith IG(OPS) and IG, Guwahati
Frontier on way to Sector Headquarters, Bomdila

Sashastra Seema Bal

सशस्त्र सीमा बल

The Guardians of Indo-Nepal & Indo-Bhutan Border

www.ssb.nic.in